R.N.I.NO UPHIN/2010/39063

उत्तर प्रदेश के हाथरस में हुए दुखद हादसे को लेकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी से बात की। यूपी सरकार सभी पीड़ितों की हरसंभव सहायता में जुटी हुई है। मेरी संवेदनाएं उन लोगों के साथ हैं, जिन्होंने इसमें अपने प्रियजनों को खोया है।

हिन्दी दैनिक सिन्धु टाइम्स

सिन्ध सदियों से हमारे देश की पहचान है, यह नदी गुज़रे जहां से समझो हिन्दुस्तान है।

वर्ष : 14 अंक : 259 | लखनऊ बुधवार,03 जुलाई 2024 | पृष्ठ : 8 | मूल्य – 2 रुपये

3 जिला चिकित्सलाय की व्यवस्थाओं .... | 6 परिस्थितियों में विवाहिता का .... | एथनिक लुक में गजब की बला.... 8

लोकसभा में पीएम दे रहे थे जवाब

लगने लगे जस्टिस फार मणिपुर के नारे, भड़क उठे स्पीकर

मणिपुर पिछले साल मई से ही उबाल पर है क्योंकि घाटी के प्रभुत्व वाले मैतेई समुदाय की अनुसूचित जनजाति ध्एसटीः दर्जे की मांग के विरोध में पहाड़ी जिलों में कुकी आदिवासियों द्वारा आयोजित एक मार्च के बाद राज्य में जातीय हिंसा भड़क उठी थी।

नई दिल्ली 02 जुलाई (एजेंसी) प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संबोधन के दौरान लोकसभा में विपक्षी नेताओं ने श्मणिपुर के लिए न्यायश के नारे लगाए, जिस पर स्पीकर ओम बिरला ने कड़ी फटकार लगाई। विपक्षी नेता लोकसभा में मणिपुर हिंसा, एनईईटी विवाद और कई अन्य मुद्दों पर बहस की मांग कर रहे हैं। मणिपुर पिछले साल मई से ही उबाल पर है क्योंकि घाटी के प्रभुत्व वाले मैतेई समुदाय की अनुसूचित जनजाति (एसटी) दर्जे की मांग के विरोध में पहाड़ी जिलों में कुकी आदिवासियों द्वारा आयोजित एक मार्च के बाद राज्य में जातीय हिंसा भड़क उठी थी।इंडिया ब्लॉक के सांसदों की लगातार नारेबाजी के बीच विपक्ष और कांग्रेस के राहुल गांधी पर तीखे प्रहारों से भरे भाषण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भाजपा सरकार ने श्तुष्टिकरणश नहीं बल्कि श्संतुष्टिकरणश का पालन किया है। राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर बहस में भाग लेते हुए, पीएम मोदी ने कहा कि देश ने भ्रष्टाचार के प्रति शून्य–सहिष्णुता की नीति के लिए एनडीए को वोट दिया और अपने तीसरे कार्यकाल के एजेंडे – 2047 तक शविक्सित भारतश की रूपरेखा तैयार की, जिसके लिए उन्होंने 24•7 काम करेगा। जैसे ही पीएम मोदी ने बोलना शुरू किया, विपक्षी सदस्यों ने श्मणिपुर के लिए न्यायश के नारे लगाने शुरू कर दिए और विरोध करते हुए सदन के वेल में आ गए। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को सदस्यों को वेल में आने का निर्देश देने के लिए विपक्ष के नेता राहुल गांधी को डांटते देखा गया। नारों से बेपरवाह प्रधानमंत्री ने कांग्रेस पर निशाना साधा और अपने 10 साल के शासन की तुलना यूपीए काल से की। उन्होंने सत्ता पक्ष की मेज थपथपाहट के बीच कहा, श्कांग्रेस के लिए लोगों का जनादेश है कि वह जहां है, वहीं विपक्ष में बैठे।

विधानसभा उप चुनाव जीतने के लिये योगी ने संभाला मोर्चा

मंत्रियों की टीम में भाजपा के अलावा सहयोगी दलों के मंत्रियों को भी शामिल किया गया है। कुछ सीटों पर दो तो कुछ एक मंत्री को जिम्मेदारी दी गई है। इनके साथ संगठन के भी पदाधिकारियों को लगाया जाएगा।

लखनऊ02 जुलाई (एजेंसी) उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लोकसभा चुनाव में मनमाफिक सीटें नहीं मिलने के दाग को धोने के लिये स्वयं मोर्चा संभाल लिया है। प्रदेश की 10 विधानसभा सीटों पर होने वाले उप चुनाव में बड़ी जीत हासिल करके योगी विपक्ष को एक बार फिर से बैकफुट पर ढकेलने की रणनीति बना रहे हैं। खासकर अखिलेश यादव द्वारा जीत के बाद छोड़ी गई करहल और अयोध्या लोकसभा से सांसद चुने गये सपा नेता अवधेश प्रसाद के मिल्कीपुर विधान सभा सीट त्यागपत्र देने के बाद खाली हुई इन दोनों सीटों पर हुए चुनाव को गंभीरता से ले रही हैं। योगी ने इन 10 में से अपने हिस्से की पांच सीटों पर कब्जा बरकरार रखने के साथ ही शेष पांच सीटों को भी जीतने की रणनीति बनाई है। उप चुनाव की कमान खुद मुख्यमंत्री ने अपने हाथों में लिया है। उनके द्वारा सभी 10 सीटों पर 16 मंत्रियों की टीम तैनात कर उन्हें जीत पक्की करने की जिम्मेदारी दी गई है। इन सीटों के नतीजों से ही इन मंत्रियों की हैसियत भी घटे या बढ़ेगी।मंत्रियों की टीम में भाजपा के अलावा सहयोगी दलों के मंत्रियों को भी शामिल किया गया है। कुछ सीटों पर दो तो कुछ एक मंत्री को जिम्मेदारी दी गई है। इनके साथ संगठन के भी पदाधिकारियों को लगाया जाएगा। दरअसल उप चुनाव में सभी 10 सीटों पर जीत दर्ज करके भाजपा लोकसभा चुनाव में मिले हार के घाव को भरना चाहती है। इसलिए मंत्रियों को हर हाल में जीत दर्ज करने के अभी से क्षेत्रों में डटे रहने को कहा गया है। वहीं, उप चुनाव की तारीखों की घोषणा जल्द होने की संभावना को देखते हुए भाजपा में टिकट के लिए भी भागदौड़ शुरू हो गई है। विधायक से सांसद बनने वाले नेता जहां अपने परिवार के किसी सदस्य को टिकट दिलाने में जुटे हैं वहीं कई पूर्व सांसद और विधायक भी टिकट के दौड़ में शामिल हैं।

पंढरपुर वारी को सीएम सावंत ने हरी झंडी दिखाई

गोवा02 जुलाई (एजेंसी) अकाली दल की नेता सुरजीत कौर पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान की मौजूदगी में आम आदमी पार्टी में शामिल हुईं। गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने पंढरपुर वारी को हरी झंडी दिखाई। गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने कहापंढरपुर वारी एक वार्षिक यात्रा है जिसमें सैकड़ों भक्त संत तुकाराम की श्पालकीश लेकर महाराष्ट्र के पंढरपुर तक पैदल जाते हैं। इस यात्रा पर पंढरपुर जाना एक ऐतिहासिक अनुष्ठान है। इस बार, गोवा से लगभग 10–12 अलग–अलग समूह के लोग इस यात्रा पर जा रहे हैं.. मैं इस श्वारीश का हिस्सा बनने का अवसर देने के लिए यहां के समुदाय को धन्यवाद देता हूं। गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने कहा कि ष्ळ्ब्ब्प् के 50 साल पूरे हुए हैं वे इस अवसर पर गोवा में जश्न मना रहे हैं। ये संस्था सतत विकास के लिए लगातार काम कर रही है। आज उन्होंने गोवा चौंबर ऑफ कॉमर्स के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। मैं उन्हें बधाई देता हूं। मैंने उन्हें गोवा सरकार के पर्यावरण विभाग के साथ मिलकर काम करने के लिए आमंत्रित किया।ष

राशिद इंजीनियर को संसद में शपथ लेने के लिए 2 घंटे की पैरोल, आतंकी फंडिंग मामले में हुई थी जेल

राशिद, जिन्हें 2017 के जम्मू-कश्मीर आतंकी फंडिंग मामले में गिरफ्तार किया गया है, ने शपथ लेने और अपने संसदीय कार्य करने के लिए अंतरिम जमानत या हिरासत पैरोल की मांग करते हुए अदालत का रुख किया था।

नई दिल्ली 02 जुलाई (एजेंसी) दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट ने सांसद राशिद इंजीनियर को 5 जुलाई को संसद में शपथ लेने के लिए दो घंटे की कस्टडी पैरोल दे दी है। उन्होंने सांसद के रूप में शपथ लेने के लिए अंतरिम जमानत या हिरासत पैरोल की मांग की थी। जम्मू–कश्मीर के बारामूला निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा चुनाव जीतने वाले राशिद की अंतरिम जमानत याचिका। राशिद, जिन्हें 2017 के जम्मू–कश्मीर आतंकी फंडिंग मामले में गिरफ्तार किया गया है, ने शपथ लेने और अपने संसदीय कार्य करने के लिए अंतरिम जमानत या हिरासत पैरोल की मांग करते हुए अदालत का रुख किया था। यहां एक विशेष अदालत ने 22 जून को मामले को स्थगित कर दिया था और एनआईए को अपना जवाब दाखिल करने को कहा था। एनआईए के वकील ने कहा कि सहमति कुछ शर्तों के अधीन है, जिसमें मीडिया के साथ बातचीत न करना भी शामिल है।राशिद ने नेशनल कॉन्फ्रेंस नेता और जम्मू–कश्मीर के पूर्व सीएम उमर अब्दुल्ला को हराकर बारामूला में एक स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में लोकसभा चुनाव जीता। राशिद को जम्मू–कश्मीर आतंकी फंडिंग मामले में गिरफ्तार किया गया था। उन्हें गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) के तहत गिरफ्तार किया गया था और वर्तमान में वह तिहाड़ जेल में बंद हैं। इस मामले में रशीद की संलिप्तता कश्मीरी व्यवसायी जहूर वताली की जांच के दौरान सामने आई थी, जिसे एनआईए ने आतंकवादी समूहों और कश्मीरी अलगाववादियों को वित्तपोषण करने के आरोप में गिरफ्तार किया था। एनआईए ने अपनी चार्जशीट में जिन नामों को शामिल किया है उनमें यासीन मलिक, लश्कर–ए–तैयबा के संस्थापक हाफिज सईद और हिजबुल मुजाहिदीन प्रमुख सैयद सलाहुद्दीन शामिल हैं।

राशिद के खिलाफ टेरर फंडिंग का मामला

इंजीनियर रशीद के नाम से मशहूर शेख अब्दुल रशीद को 2016 में आतंकी फंडिंग मामले में गिरफ्तार किया गया था। उन्हें यूएपीए कानून के तहत हिरासत में लिया गया था. तब से वह तिहाड़ जेल में बंद हैं। इस मामले में रशीद की संलिप्तता कश्मीरी व्यवसायी जहूर वताली की जांच के दौरान सामने आई थी, जिसे एनआईए ने आतंकवादी समूहों और कश्मीरी अलगाववादियों को वित्तपोषण करने के आरोप में गिरफ्तार किया था।

राहुल गांधी के हिन्दू वाले बयान का बीजेपी उठायेगी फायदा: मायावती

मायावती ने कहा कि बाबा साहेब डा भीमराव अम्बेडकर ने देश में विभिन्न धर्मों के करोड़ों लोगों के हित, कल्याण, भाईचारा आदि के लिए धर्मनिरपेक्षता के आधार पर संविधान बनाकर सभी धर्मों का सम्मान सुनिश्चित किया, जिसके प्रति सत्ता व विपक्ष दोनों को सदन के भीतर व बाहर गंभीर होने की जरूरत है।

लखनऊ02 जुलाई (एजेंसी) लोकसभा में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के हिंदुओं पर दिए एक बयान को लेकर हंगामें के बीच बसपा प्रमुख मायावती भी इस सियासी जंग में कूद पड़ी है। बसपा सुप्रीमों ने कहा राहुल गांधी जो खुद को हिंदू कहते हैं वह हिंसा–हिंसा करते हैं। मायावती ने इस मुद्दे पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए बीजेपी और कांग्रेस दोनों ही दलों पर जुबानी हमला बोला है। मायावती ने कहा कि परमपूज्य बाबा साहेब डा भीमराव अम्बेडकर ने देश में विभिन्न धर्मों के करोड़ों लोगों के हित, कल्याण, भाईचारा आदि के लिए धर्मनिरपेक्षता के आधार पर संविधान बनाकर सभी धर्मों का सम्मान सुनिश्चित किया, जिसके प्रति सत्ता व विपक्ष दोनों को सदन के भीतर व बाहर गंभीर होने की जरूरत है।बीएसपी सुप्रीमों ने आगे कहा कि किन्तु संसद में मा. राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव के दौरान नेता प्रतिपक्ष ने हिन्दू–हिन्दुत्व को लेकर जो कुछ भी कहा उसका भाजपा–एनडीए फिर से राजनीतिक फायदा उठाने में लग गयी लगती है। कांग्रेस द्वारा इनको ऐसा करने का अवसर प्रदान करना कितना उचित? यह सोचने की बात है।

उधर, राहुल गांधी की ओर से हिंदुओं को हिंसक कहने वाले बयान पर पलटवार करते हुए भाजपा विधायक रामेश्वर शर्मा ने कहा कि राहुल गांधी ने बता दिया कि वह फिरोज खान के नाती हैं। राहुल गांधी के खून के अंदर हिंदू का खून होता तो वह कभी हिंदू को हिंसक नहीं कहते। उनके पूर्वजों ने हिन्दुओं को सौ–सौ घाव दिए हैं। देश के विभाजन में लाशों के ढेर लगे, पाकिस्तान में हिंदुओं को काटा गया।

बीजेपी का मतलब हिंदुत्व नहीं, राहुल गांधी के बयान का उद्धव ठाकरे ने किया समर्थन, कहा- हम भी जय श्री राम के नारे देते हैं

नई दिल्ली 02 जुलाई (एजेंसी) कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के भाषण पर शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने कहा कि उन्होंने(राहुल गांधी) क्या गलत कहा? हम भी जय श्री राम के नारे देते हैं तो वो चलता है लेकिन भाजपा के अलावा कोई कहे तो ये अपराध है? मैं नहीं मानता कि राहुल गांधी ने कल हिंदुत्व का अपमान किया। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि भाजपा का मतलब हिंदुत्व नहीं है। हम भी हिंदू हैं और हममें से कोई भी हिंदुत्व का अपमान नहीं करेगा और हिंदुत्व का अपमान बर्दाश्त नहीं करेगा, और राहुल गांधी भी उसमें शामिल हैं। भाजपा का मतलब हिंदुत्व नहीं है, हमारा हिंदुत्व पवित्र है।लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने सोमवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर देश में हिंसा, नफरत तथा डर फैलाने का आरोप लगाया और दावा किया कि ये लोग हिंदू नहीं हैं जिस पर सत्ता पक्ष के सदस्यों ने जोरदार तरीके से विरोध जताया और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि पूरे हिंदू समाज को हिंसक कहना बहुत गंभीर विषय है। राहुल गांधी ने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर लाये गए धन्यवाद प्रस्ताव पर विपक्ष की ओर से चर्चा की शुरुआत करते हुए यह भी कहा कि हिंदू कभी हिंसा नहीं कर सकता, कभी नफरत और डर नहीं फैला सकता ।राहुल गांधी ने कहा कि ये अहिंसा का देश है, ये डर का देश नहीं है। भगवान शिव कहते हैं– डरो मत, डराओ मत। वे अहिंसा की बात करते हैं। जो अपने आप को हिंदू कहते हैं कि वे 24 घंटे हिंसा की बात करते हैं नफरत की बात करते हैं। आप (भाजपा) हिंदू हो नहीं। उनका कहना था, हिंदू धर्म में साफ लिखा है कि सत्य के साथ खड़ा होना चाहिए, सत्य से पीछे नहीं हटना चाहिए, सत्य से नहीं डरना चाहिए।

नीट विवाद को लेकर राहुल गांधी ने पीएम मोदी को लिखा पत्र, संसद में चर्चा की उठाई मांग

गांधी ने कहा कि मैं छम्म्ज पर संसद में बहस का अनुरोध करने के लिए लिख रहा हूं। जैसा कि आप जानते हैं, 28 जून को संसद के दोनों सदनों में इस मुद्दे पर बहस के विपक्ष के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया गया था। कल विपक्ष ने इस मुद्दे पर फिर से चर्चा का अनुरोध किया था।

नई दिल्ली 02 जुलाई (एजेंसी) राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर सरकार से बुधवार को लोकसभा में नीट मुद्दे पर चर्चा कराने का अनुरोध किया है। राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री मोदी से कहा कि मेरा मानना है कि यह उपयुक्त होगा कि आप छात्रों के हित में नीट मुद्दे पर चर्चा की अगुवाई करें। राहुल ने लिखा कि नीट परीक्षा तत्काल ध्यान देने योग्य है क्योंकि इसने हमारी उच्च शिक्षा प्रणाली में गहरी सड़ांध को उजागर कर दिया है। पिछले सात वर्षों में 70 से अधिक पेपर लीक हुए हैं, जिससे 2 करोड़ से अधिक छात्र प्रभावित हुए हैं। अन्य परीक्षाओं को स्थगित करने और राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी के महानिदेशक को बदलने का सरकार का कदम हमारी केंद्रीकृत परीक्षण प्रणाली की प्रणालीगत विफलता को कवर करने का एक कदम है।गांधी ने कहा कि मैं छम्म्ज पर संसद में बहस का अनुरोध करने के लिए लिख रहा हूं। जैसा कि आप जानते हैं, 28 जून को संसद के दोनों सदनों में इस मुद्दे पर बहस के विपक्ष के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया गया था। कल विपक्ष ने इस मुद्दे पर फिर से चर्चा का अनुरोध किया था। माननीय लोकसभा अध्यक्ष ने विपक्ष को आश्वासन दिया था कि वह इस मुद्दे पर सरकार से चर्चा करेंगे। उन्होंने कहा कि हमारे छात्र उत्तर के पात्र हैं। संसदीय बहस उनके पुनर्निर्माण और विश्वास को बहाल करने की दिशा में पहला कदम है। मामले की तात्कालिकता को देखते हुए, मैं सरकार से कल सदन में बहस कराने का अनुरोध करता हूं। मेरा मानना ध्है कि यह उचित होगा यदि आप छात्रों के हित में इस बहस का नेतृत्व करें। राज्यसभा में कई विपक्षी दलों ने देश में विभिन्न परीक्षाओं में प्रश्नपत्र लीक होने के बढ़ते मामलों, राज्यों के साथ भेदभाव किए जाने और केंद्रीय एजेंसियों को औजार बनाकर विपक्षी नेताओं को परेशान करने का आरोप लगाते हुए मंगलवार को दावा किया कि 'अहंकार' से देश को नहीं चलाया जा सकता है। उच्च सदन में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर लाए गए धन्यवाद प्रस्ताव को लेकर हो रही चर्चा में भाग लेते हुए तृणमूल कांग्रेस के मोहम्मद नदीमुल हक ने कहा कि राष्ट्रपति अभिभाषण में एक शब्द गायब है ।

महिला की पिटाई को ठहराया था जायज, टीएमसी ने पार्टी विधायक को जारी किया नोटिस

नइ दिल्ली 02 जुलाई (एजेंसी) तृणमूल कांग्रेस ने चोपड़ा से पार्टी के विधायक हमीदुल रहमान को उस महिला के खिलाफ उनकी श्दुष्ट पिटाईश टिप्पणी के लिए नोटिस जारी किया है, जिसे सार्वजनिक रूप से कोड़े मारे गए थे। चोपड़ा में हुई यह घटना कैमरे में रिकॉर्ड हो गई और इसका वीडियो वायरल हो गया। यरल वीडियो में एक शख्स बांस के डंडे से एक पुरुष और एक महिला को बार–बार

पीटता दिख रहा है। आसपास खड़े लोग सरेआम कोड़े मारे जा रहे जोड़े के चारों ओर घेरा बनाकर खड़े दिख रहे हैं। इस घटना पर भाजपा और सीपीआई (एम) ने तृणमूल कांग्रेस पर हमला करते हुए राजनीतिक विवाद खड़ा कर दिया।जोड़े को बांस की छड़ी से पीटते हुए देखे गए व्यक्ति की पहचान तजमुल उर्फ घ्घ्घ्श्जेसीबीश के रूप में की गई, जो कथित तौर पर चोपड़ा इलाके का तृणमूल कांग्रेस नेता है। घटना पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए चोपड़ा विधायक हमीदुल रहमान ने कहा कि जिस महिला पर हमला किया गया वह अपने पति और परिवार को छोड़कर एक ष्दुष्ट जानवरष बन गई है।ष्महिला ने भी गलत किया। उसने अपने पति, बेटे और बेटी को छोड़ दिया और एक दुष्ट जानवर बन गई। मुस्लिम समाज के अनुसार कुछ कोड और न्याय हैं। हालांकि, हम इस बात से सहमत हैं कि जो कुछ हुआ वह थोड़ा अतिवादी था। अब कानूनी कार्रवाई होगी।ष इस मामले में कार्रवाई की जाएगी। तृणमूल कांग्रेस ने रहमान से उनकी विवादित टिप्पणी पर स्पष्टीकरण मांगा है।

हाथरस में भोले बाबा के सत्संग में भगदड़, 100 से ज्यादा लोगों की मौत

हथरस 02 जुलाई (एजेंसी) उत्तर प्रदेश के हाथरस में मंगलवार को एक धार्मिक सभा में भगदड़ मच गई, जिसमें 100 लोगों की मौत हो गई। मुख्य चिकित्सा अधिकारी राजकुमार अग्रवाल ने मौतों की पुष्टि करते हुए बताया कि अब तक हमें 100 शव मिले हैं। घटना के बारे में बात करते हुए एटा के एसएसपी राजेश कुमार सिंह ने कहा कि हाथरस जिले के एक गांव में एक धार्मिक कार्यक्रम चल रहा था, तभी भगदड़ मची। एटा अस्पताल में अब तक 100 शव आ चुके हैं, घायल अस्पताल नहीं पहुंचे हैं। आगे की जांच की जा रही है। इन 100 शवों की पहचान की जा रही है। हाथरस में हुआ भगवान शिव का धार्मिक आयोजन जैसे ही कार्यक्रम समाप्त हुआ, भगदड़ मच गई, जिससे महिलाओं और बच्चों सहित कई लोग घायल हो गए।

कुल 15 महिलाओं और बच्चों को एटा मेडिकल कॉलेज ले जाया गया, जहां उनका इलाज चल रहा है। ऐसी चिंताएं हैं कि और भी लोगों की मौत हो सकती है। घटना का संज्ञान लेते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदिनाथ ने अधिकारियों को तुरंत घटनास्थल पर पहुंचने और राहत कार्य में तेजी लाने का निर्देश दिया।घटना को लेकर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कार्यालय ने ट्वीट किया कि यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ ने हाथरस जिले में हुई दुर्घटना में मरने वालों के शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। उन्होंने घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी कामना की है। उन्होंने जिला प्रशासन के अधिकारियों को घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाकर उनके समुचित उपचार और घटनास्थल पर राहत कार्य तेज करने के निर्देश दिए हैं।

बीजेपी ने तलाश ली यूपी में किला ढहने की वजह

मनबढ़ प्रशासन से निराश कार्यकर्ताओं में नही था उत्साह

घट गया आठ फीसदी वोट, सेंट्रल लीडरशिप तय करेगी अगली रणनीति

लखनऊसंवाददाता। बीजेपी की पार्लियामेंट इलेक्शन में खराब परफार्मेंस की वजह पार्टी ने पता कर ली है। भर्ती परीक्षाओं का लीक होना, राज्य में अधिकारियों को मिली हुई खुली छूट और विपक्ष द्वारा संविधान और रिजर्वेशन के मुद्दे उठाने से ओबीसी व दलित मतदाताओं का मत विभाजन, ये वो वजहें है, जिन्हें बीजेपी ने यूपी में अपनी खराब प्रदर्शन के रूप में चिन्हित किया है। लोकसभा चुनाव 2024 में यूपी में बीजेपी का वोट शेयर 41.37 फीसदी पर पहुंच गया जबकि पिछले लोकसभा चुनाव में यह 49.98फीसदी था।बीजेपी ने 19 जून से 25 जून के बीच यूपी की 78 लोकसभा सीटों पर अपने प्रदर्शन की समीक्षा की। इन सीटों में पीएम नरेंद्र मोदी की वाराणसी और डिफेंस मिनिस्टर राजनाथ सिंह की लखनऊ लोकसभा सीट शामिल नहीं है। बीजेपी ने हर सीट पर अपने प्रदर्शन की समीक्षा के लिए 24 सवालों का सेट तैयार किया था।इन सवालों के साथ बीजेपी सीनियर लीडरों की टीम लोकल नेताओं पर जन प्रतिनिधियों से मिली और यह जानने की कोशिश की कि क्यों उसे हार का सामना करना पड़ा और ऐसी क्या वजहें रहीं कि जिन सीटों को उसने रिटेन किया, वहां जीत का मार्जिन कम हुआ। सूत्रों के मुताबिक चुनाव परिणाम पर यूपी बीजेपी के पदाधिकारियों और आरएसएस पदाधिकारियों के बीच मीटिंग हुई। बीजेपी की यूपी ईकाई ने अपनी रिपोर्ट तैयार कर ली है और माना जा रहा है कि ये रिपोर्ट इस हफ्ते सेंट्रल लीडरशिप को सौंपी जा सकती है। सूत्रों के मुताबिक विपक्ष द्वारा संविधान और आरक्षण पर चलाया गया कैंपन, पेपर लीक और बेरोजगारी की वजह से निराश और स्थानीय प्रशासन की उपेक्षा और अपमान की वजह से बीजेपी वर्कर्स कार्यकर्ताओं में निराशा ने पार्टी को चुनाव में सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाया। जिम्मेदारी संगठन पर है क्योंकि चुनाव दल लड़ता है सरकार नहीं।लेकिन वोटर सरकार के प्रदर्शन के आधार पर वोट करता है राजनीतिक दल के आधार पर नहीं। कार्यकर्ता हतोत्साहित थे। लंबे समय से लोकल पुलिस स्टेशनों और तहसील कार्यालयों में अधिकारियों द्वारा उनका अपमान किया जा रहा था। इसी वजह से मतदान केंद्रों में बीजेपी की जीत के लिए कार्यकर्ताओं में उत्साह नहीं दिखाया। राज्य सरकार के 'बीआईपी कल्चर' पर नकेल के फैसले ने पुलिस कर्मियों को बीजेपी कार्यकर्ताओं को परेशान करने की अनुमति दे दी। वाहनों से पार्टी के झंडे उतारे गए, उनके वाहनों की जांच की गई और ट्रैफिक रूल्स के कथित उल्लंघन के लिए चालान काटे गए।बीजेपी की रिव्यू मीटिंग्स में यह भी सामने आया है कि भर्ती परीक्षाओं के लीक होने से न सिर्फ युवा नाराज थे बल्कि उनके परिवार वालों के गुस्से का सामना बीजेपी को करना पड़ा। योगी सरकार ने पिछले महीने ही पेपर लीक से संबंधित नया कानून बनाया है। दोषी पाए जाने पर दो साल से आजीवन कारावास की सजा और एक करोड़ रुपये फाइन हो सकता है। अगर ये कदम पहले उठा लिया गया होता तो शायद बीजेपी को युवाओं के वोट का नुकसान न होता।कन्नौज में अखिलेश यादव से हारने वाले सुब्रत पाठक तो खुलकर पेपर लीक को पार्टी के खराब प्रदर्शन की वजह बता चुके हैं। एक्स पर उन्होंने पोस्ट कर कहा कि यूपी में बीजेपी की हार के कई कारण है लेकिन पेपर लीक बड़ी वजह है। भ्रष्टाचार ने शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह से बर्बाद कर दिया। जाति और समुदायों वोटों को लेकर कैलकुलेशन गलत साबित हुई। इसमें खासतौर पर दलित और ओबीसी में तो यही हुआ। विपक्ष के कैंपेन की वजह से आरक्षण और संविधान पर विपक्ष के अभियान के कारण दलितों और ओबीसी के करीब 8 फीसदी वोट कट गए। बीएसपी के वोट बेस में अच्छी संख्या में जाटव मतदाता सपा और कांग्रेस में शिफ्ट हो गए। आरक्षण और संविधान पर कैंपेन की वजह से करीब 6 फीसदी जाटव वोटर सपा और कांग्रेस पर शिफ्ट हो गए क्योंकि उनका मानना था कि बीएसपी भाजपा को हराने के लिए चुनाव नहीं लड़ रही है। बीजेपी को उम्मीद थी कि बीएसपी कुछ मुस्लिम वोट हासिल करने में सफल रहेगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ। करीब 70 प्रतिशत ओबीसी कुर्मी वोट सपा–कांग्रेस की तरफ शिफ्ट हो गए। मतदाता इससे संतुष्ट नहीं थे कि बीजेपी आरक्षण खत्म नहीं करेगी। सेंट्रल और पूर्वी यूपी में कुर्मी वोटर्स को पर्याप्त टिकट न देने का नुकसान पार्टी को उठाना पड़ा। सेंट्रल यूपी और बुंदेलखंड में ओबीसी शाक्य वोटर्स ने पार्टी का समर्थन नहीं किया। मौर्य और सैनी वोटों का भी नुकसान उठाना पड़ा। समीक्षा में निकलकर आया कि पहले फेज में यूपी वेस्ट में राजपूतों की नाराजगी से बीजेपी को नुकसान हुआ। राजपूतों को मनाने के लिए प्रयास हुए लेकिन फेल और इसका नुकसान बीजेपी को चौथे फेज तक उठाना पड़ा। रिव्यू रिपोर्ट में सरधना के विधायक संगीत सोम पर राजपूतों को भड़काने का आरोप है।

मैनपुरी में प्रेक्षागृह, हाल, सांस्कृतिक केन्द्र एवं संग्रहालय निर्माण की धीमी प्रगति पर पर्यटन मंत्री खफा

लखनऊसंवाददाता। उत्तर प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने मैनपुरी में प्रेक्षागृह एवं बहुउद्देशीय हाल तथा सांस्कृतिक केन्द्र एवं संग्रहालय निर्माण की धीमी प्रगति पर अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए सभी निर्माणकार्य मार्च 2025 तक पूरा करने के निर्देश दिये हैं। राज्य संग्रहालय निदेशालय तथा कार्यदायी संस्था को निर्माण कार्य पर पैनी नजर रखने तथा उच्च गुणवत्ता सुनिश्चित कराने के लिए भी निर्देशित किया है। नवनिर्मित प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय भवन में गैस सप्रेशन सिस्टम आदि की स्थापना का कार्य इस महीने की 15 तारीख तक पूर्ण करने के लिए कहा है। पर्यटन मंत्री ने बताया कि संस्कृति निदेशालय के अधीन विभिन्न जनपदों में निर्माण कार्य कराये जा रहे हैं। सभी निर्माणकार्य को पूरा करने की निर्धारित तिथि समीक्षा बैठक करके निर्धारित कर दी गयी है। कार्यदायी संस्थाओं को निर्देशित किया गया है कि तय समय सीमा में सभी कार्य पूरा कर लें, ताकि इसको आम जनता को समर्पित किया जा सके। कार्यदायी संस्थाओं को निर्देश दिये हैं कि निर्माणाधीन योजनाओं को गुणवत्ता के साथ पूरा करके हैंडओवर कर दें, जिससे इसका लाभ आम जनता को समय से मिल सके। राजकीय बौद्ध संग्रहालय गोरखपुर से संबंधित अवस्थापना सुविधाओं के कार्य पूरे हो चुके हैं। साउण्ड व्यवस्था को उच्च गुणवत्ता के साथ पूरा करने तथा 05 वर्ष की गारण्टी के लिए भी निर्देश दिये गये है। बलरामपुर में इमिलिया कोडर में या उसके आसपास थारू जनजाति संस्कृति को संरक्षित रखने हेतु निर्मित संग्रहालय में आंतरिक साज सज्जा का कार्य पूरा करके हैंडओवर की कार्यवाही किये जाने के निर्देश कार्यदायी संस्था को दिया गया है। गोरखपुर में रामगढ़ ताल स्थित खुले मंच की मरम्मत एवं जीर्णोद्धार आदि के कार्य पूरे हो चुके हैं। कार्यदायी संस्था को उपयोगिता प्रमाण पत्र प्रेषित करने के लिए निर्धारित प्रारूप पर क्लोजर रिपोर्ट भेजने के निर्देश दिये गये हैं।

झूठ और निराशा से भरा था राहुल गांधी का भाषण

आप ऐसे हिंदुओ का अपमान नहीं कर सकते : चौधरी

लखनऊसंवाददाता। भारतीय जनता पार्टी के राज्य मुख्यालय पर मीडिया से मुखातिब पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी ने कहा कि लगातार तीसरी बार फेल और बार–बार लॉन्च के बावजूद फेल हो चुके राहुल गाँधी का नेता प्रतिपक्ष के रूप में पहला भाषण झूठ, निराशा और तथ्यहीन बातों से भरा हुआ था। उनका भाषण के दौरान आचरण संसदीय गरिमा के अनुरूप बिलकुल नहीं था। लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा हो रही थी, राहुल गाँधी ने उस बाबत औपचारिकतावश भी एक शब्द नहीं बोला। सदन में राहुल गाँधी ने केवल और केवल झूठ बोला। कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं को राहुल गांधी का ज्ञानवर्धन करना चाहिए और समझाना चाहिए कि भारत की संसदीय गरिमा को कम न करें।श्री चौधरी ने कहा कि राहुल गाँधी ने अपने भाषण में न केवल हिंदुओं का घोर अपमान किया, न केवल हिंदुओं को हिंसक, नफरती और झूठा बताया बल्कि अग्निवीर, किसान, अयोध्या, माइक–सब पर झूठ और केवल झूठ बोला। राहुल गाँधी को हिंदुओं का अपमान करने के लिए और सदन में झूठी बयानबाजी करने के लिए देश की जनता से अविलंब माफी मांगनी चाहिए। 99 सीटें जीतने पर ये हिंदुओं को हिंसक, नफरती और झूठा बता रहे हैं, ये बताता है कि इनकी असल मंशा क्या है? सच्चाई सबको पता है कि 1984 में सिखों का नरसंहार किसने किया था। सच्चाई ये है कि आपातकाल में आम लोगों को प्रताड़ित किसने किया था? सच्चाई ये है कि संतों पर गोलियां किसने चलवाई थी? उन्होंने कहा कि राहुल गाँधी पश्चिम बंगाल में हुई घटनाओं पर कुछ नहीं बोलते, तमिलनाडु में हिज्ब–उत–तहरीर की मंशा पर कुछ नहीं बोलते, केरल में अपने सहयोगी की हिंसा भड़काने की तहरीरों पर कुछ नहीं बोलते लेकिन हिंदुओं को हर बार बदनाम करते हैं। 2010 में तत्कालीन गृहमंत्री पी चिदंबरम ने हिंदुओं को आतंकवादी कहा था। 2013 में पूर्व गृहमंत्री सुशील कुमार शिंदे ने भी हिंदुओं को आतंकवादी बताया था। 2021 में राहुल गांधी ने हिन्दुत्ववादियों को देश से बाहर निकालने को कहा था और आज सम्पूर्ण हिंदुओं को असत्यवादी और हिंसक कहा। 20 जनवरी 2013 को यूपीए सरकार में तत्कालीन गृह मंत्री सुशील कुमार शिंदे ने जयपुर में यह कहा था कि भाजपा और आरएसएस के तरफ से हिंसक गतिविधियां और ट्रेनिंग कैम्प चलाए जा रहे हैं। जब सदन पटल पर उनसे इस विषय पर सवाल पूछा गया, तो 20 फरवरी 2013 को सुशील कुमार शिंदे ने खेद व्यक्त किया था। राहुल गांधी को सुशील कुमार शिंदे से सीख लेते हुए खेद व्यक्त करना चाहिए। अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि जब आप सत्ता में थे, तो आपके पास सभी चीजें थी, तब भी आपने झूठ बोला और सदन के पटल पर गलती मानी। आज भी झूठ बोल रहे हैं।

राहुल गांधी ने लोकसभा में बुलंद की आमजन की आवाज-अंगारा

लखनऊसंवाददाता। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने लोकसभा में आमजन की आवाज बुलंद की है। मैं तो उनका फैन हो गया हूं। यह उदगार हैं राष्ट्रीय जनता दल के वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष रविंद्र कुमार श्रीवास्तव अंगारा के हैं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी बधाई के पात्र हैं, वास्तव में उन्होंने जनता की आवाज से सरकार को रूबरू कराने का काम किया है। यह तो हर जनप्रतिनिधियों को करना चाहिए, जनता अपना प्रतिनिधि बनाकर इसीलिए भेजती है। उन्होंने कहां क्या कमी है,स्पीकर और सदन को बताया है। सरकार द्वारा भय का वातावरण बनाकर देश की जनता का जो शोषण किया जा रहा है, संवैधानिक संस्थाओं को डराकर लोकतंत्र और संविधान का दुरुपयोग किया जा रहा है, उसे बंद कराया जाये।हर नागरिक स्वतंत्र और निर्भीक हो तभी स्वस्थ लोकतंत्र और स्वस्थ राष्ट्र कि निर्माण हो सकता है। संविधान से देश चल सकता है, संविधान को नजरंदाज कर देश को चलाने से देश धीरे धीरे राजशाही और निरंकुशता की ओर बढ़ेगा और देश से लोकतंत्र और संविधान खतरे में पड़ सकता है। मैं तो राहुल गांधी जी के भाषण की तारीफ करता हूं। उन्होंने विधिवत जनता तथा विपक्षी नेताओं की आवाज को उठाया है।यदि कहीं कुछ गलत हो तो सत्ता पक्ष को जांच करानी चाहिए और मूल तथ्यों को सरकार को लोकसभा पटल पर रखना चाहिए था। सरकार ने ऐसा कुछ नहीं किया। डाक्यूमेंट स्पीकर के सामने नहीं रख सके।

00000

दूसरे सूबों की बसों से वसूली करते मिले चार पुलिस कर्मी सस्पेंड

लखनऊसंवाददाता। लखनऊ के विभूतिखंड कोतवाली क्षेत्र में कमता तिराहे पर देर रात दूसरे राज्यों से आने वाली बसों से लखनऊ ट्रैफिक पुलिस के दरोगा–सिपाही वसूली कर रहे थे।ये लोग प्रति चक्कर एक हजार रुपये मांगते थे, न देने पर चालान व बस सीज करने की धमकी देते थे। जेसीपी ने किया सस्पेंड और एफआईआर भी दर्ज करा दी। राजस्थान के बस संचालक ने जेसीपी उपेन्द्र कुमार अग्रवाल से शिकायत की।जेसीपी ने अपनी टीम से जांच करवायी तो आरोप सही मिले।आरोपी ट्रैफिक सब इंस्पेक्टर उमेश सिंह, सिपाही शुभम कुमार, विवेक विशाल दुबे व सचिन कुमार को निलम्बित कर दिया और विभूतिखंड कोतवाली में एफआईआर भी दर्ज करा दी गई।आरोपित पुलिसकर्मियों के खिलाफ वीडियो व ऑडियो भी साक्ष्य के तौर पर कोतवाली में दिए गए। राजस्थान के एक बस संचालक ने जेसीपी से शिकायत की थी कि कमता तिराहे पर ट्रैफिक पुलिस के तीन–चार लोग बस ड्राइवर को रोक लेते हैं और रुपये की मांग करते हैं। जेसीपी ने दो पुलिस कर्मियों को कमता से पहले बस में यात्री के रूप में बैठा दिया।कमता तिराहे पर ट्रैफिक पुलिसकर्मियों ने बस को रोक रुपये मांगे तो सारी बातचीत का ऑडियो–वीडियो बना लिया। जेसीपी ने आरोपित पुलिसकर्मियों से इस बारे में पूछा तो उनके होश उड़ गये, माथे पर पसीना आ गया। जेसीपी ने साक्ष्य के आधार पर डीसीपी ट्रैफिक से आरोपित पुलिसकर्मियों को निलम्बित करने की संस्तुति की।डीसीपी ने इन चारों ट्रैफिक पुलिसकर्मियों को निलम्बित कर दिया। इन पर एफआईआर दर्ज करा दी गई है।

2018 में हाईकोर्ट ने रद्द कर दी थी अंत में आओ,पहले जाओ पालिसी

लखनऊसंवाददाता। शिक्षकों के 2024 में अंतरू जनपदीय स्थानांतरण, समायोजन में कनिष्ठ शिक्षक, शिक्षिकाओं का तबादला करने की नीति जारी की, जिससे कनिष्ठ शिक्षक खफा हो गए हैं। कुछ कोर्ट जाने की तैयारी कर रहे हैं। समायोजन प्रक्रिया 02 जुलाई से प्रारम्भ करने का आदेश जारी है। 2018 में इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने जूनियर एवं सीनियर बेसिक स्कूलों के सहायक अध्यापकों के संबंध में राज्य सरकार द्वारा बनाई गई 'अंत में आओ, पहले जाओ' स्थानांतरण नीति को रद्द कर दिया था।यह आदेश न्यायमूर्ति इरशाद अली की एकल सदस्यीय पीठ ने सैकड़ों शिक्षकों की याचिकाओं पर एक साथ सुनवाई करते हुए पारित किया था। याची 2015, 2016 और 2017 में पोस्टेड हुए थे। याचियों की ओर से कहा गया था कि 20 जुलाई 2018 के शासनादेश द्वारा सहायक अध्यापकों के लिए ट्रांसफर पॉलिसी जारी की गई है।इसकी शर्त संख्या 2(2)(1) व 2(3)(4) में 'लास्ट इन, फर्स्ट आउट' व अध्यापकों और छात्रों का अनुपात निर्धारित किया गया। इस नीति के कानूनी पहलू पर याचियों की ओर से वरिष्ठ वकील एचजीएस परिहार का तर्क था कि इस पॉलिसी के तहत यदि अध्यापकों की संख्या किसी संस्थान में अनुपात से अधिक हो जाती है तो जो अध्यापक संस्थान में लम्बे समय से तैनात हैं, वह वहीं तैनात रहेगा और बाद में प्रमोशन से जाने वाले का दूसरे संस्थान तबादला कर दिया जाएगा। इसका बड़ा नुकसान जूनियर शिक्षकों को होगा। इस पर कोर्ट ने सरकार की 2018 की पूरी पॉलिसी रद्द कर दी व

मौलाना आजाद नैशनल उर्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश की अंतिम तिथि 7 जुलाई

लखनऊ 2 जुलाई 2024 मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय के प्रवेश निदेशालय की घोषणा के अनुसार, स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में प्रवेश की तारीखें बढ़ा दी गई हैं। अब पीजी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए उम्मीदवार 7 जुलाई तक फॉर्म भर सकते हैं। लखनऊ परिसर की प्रभारी डॉ हुमा याकूब ने बताया कि एमए कार्यक्रम (उर्दू, अरबी, अंग्रेजी, फारसी) में अब 7 जुलाई, 2024 तक इच्छुक छात्र प्रवेश ले चाहते हैं। विश्वविद्यालय की वेबसाइट (manuu-edu-in) पर जाकर ऑनलाइन फॉर्म भर सकते हैं। डॉ. हुमा याकूब ने कहा कि डालीगंज स्थित लखनऊ कैंपस में छात्रों के लिए लाइब्रेरी, रीडिंग हॉल और कंप्यूटर लैब की सुविधा मौजूद है। पहली मेरिट सूची 15 जुलाई को जारी की जाएगी। किसी भी जानकारी के लिए 052 4628865/8650245813 पर संपर्क किया जा सकता है।

प्रशिक्षु आईएएस अफसरों से मिले मुख्यमंत्री

अभी से तय कीजिए दृष्टि और दिशा

टालने की आदत छोड़े,पीड़ित की सुनवाई करें : योगी

लखनऊसंवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आज अपने सरकारी आवास 5 –केडी पर भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित 2023 बैच के प्रशिक्षु अफसरों से मुलाकात की। सीएम ने शुभकामनाएं देते हुए अफसरों का मार्गदर्शन किया। सीएम ने कहा कि संवाद, अच्छा व्यवहार और कार्यों में शुचिता बनाए रखें, इससे हर समस्या का समाधान होगा। सीएम ने प्रशिक्षण के दौरान फील्ड में किए गए कार्यों के बारे में भी अफसरों से जानकारी ली। शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बेहतरीन पारी खेलिए और कुछ नयापन दीजिए।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि लोकतंत्र में संवाद सबसे बड़ी ताकत है। फील्ड में जाएं तो आमजन से संवाद स्थापित करें। संवाद शून्य होने से लोगों में असंतोष होता है। उनसे अच्छा व्यवहार करें और कार्यों में शुचिता बरकरार रखें। इससे छवि अलग और अतुलनीय बनेगी। आम आदमी की किसी भी समस्या को छोटी न समझें, क्योंकि पीड़ित के लिए वह समस्या काफी मायने रखती है। समस्या का समाधान हो जाता है तो वह अधिकारी आमजन का विश्वास हासिल कर लेता है। जमीनी धरातल पर जुड़े लोगों से कभी कटें नहीं। समस्या को बड़ी न बनने दें, बल्कि संवाद के जरिए उसका तत्काल रास्ता निकालें। प्रशिक्षु अधिकारी जनप्रतिनिधियों से भी संवाद स्थापित करें। सीएम ने कहा कि संवाद, अच्छा व्यवहार और अपने कार्यों में शुचिता बनाए रखें, इससे हर समस्या का समाधान होगा। सीएम ने प्रशिक्षण के दौरान फील्ड में किए गए कार्यों के बारे में भी अफसरों से जानकारी ली। सीएम ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बेहतरीन पारी खेलिए और कुछ नयापन दीजिए। टालने की आदत छोड़ें। पीड़ित की सुनवाई करें। टालने की आदत से असंतोष पैदा होता है। यह आदत ठीक नहीं। समय पर निर्णय लेने की आदत डालें। आईजीआरएस–सीएम हेल्पलाइन की शिकायत हमारे पास इसलिए आती क्योंकि सुनवाई स्थानीय स्तर पर ठीक से नहीं होती। पीड़ित की सुनवाई करें। मेरिट के आधार पर समयसीमा के भीतर समस्याओं का निस्तारण करें। सीएम ने यह भी कहा कि प्रतिदिन एक घंटा जनता की सुनें। जनप्रतिनिधियों व संगठनों की समस्याएं भी सुनें।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रशिक्षु अफसरों से कहा कि सीखने और पढ़ने की आदत निरंतर रखें। शासन से कोई जीओ गया है तो उसे स्वयं पढ़ें, न कि किसी अन्य पर निर्भर रहें। आपकी दृष्टि औरों से अलग होगी। इसे पढ़कर रिजल्ट में बदलें। प्रशासनिक अधिकारी के रूप में अच्छा मॉडल दें। इससे अधीनस्थ भी कार्यों में रूचि लेंगे। गांवों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य करें। मॉडल विलेज बनाने की तरफ सोचें। ग्रामीणों से संवाद करें, श्रमदान के जरिए भी कई कार्य प्राथमिकता से हो सकते हैं। अफसर के रूप में नगर निकायों, तहसीलों, थाने और ब्लॉक को स्वावलंबी बनाएं। सीएम ने अफसरों को सीख दी कि गलत तत्वों से हर हाल में दूरी बनाएं। घर की बजाय लोगों को ऑफिस में बुलाएं और वहीं संवाद बनाएं। जो प्रशिक्षु अफसर सीएम से मिलने पहुंचे ,उनमें अनुभव सिंह, दीपक सिंहवाल, गुंजिता अग्रवाल, ईशिता किशोर, काव्या सी, महेंद्र सिंह, चलुवा राजू, नारायणी भाटिया, नितिन सिंह, रिंकू सिंह राही, साहिल कुमार, साईं आश्रित शाखामूरी, शिशिर कुमार सिंह, स्मृति मिश्रा, स्वाति शर्मा और वैशाली शामिल रहे।

अनुप्रिया की चिट्ठी के बीच आशीष पटेल को अहम जिम्मेदारी

उपचुनाव में दिखाना है सियासी कौशल

लखनऊसंवाददाता। लोकसभा चुनाव खत्म होने के बाद अब उत्तर प्रदेश में 10 सीटों के उप चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी ने कमर कसी है।भारतीय जनता पार्टी ने 10 सीटों के उपचुनाव के लिए 16 मंत्रियों को जिम्मेदारी दी है इसमें सहयोगी दलों के मंत्री भी शामिल हैं। अनुप्रिया पटेल की चिट्ठी के बीच मंत्री आशीष पटेल को बड़ी जिम्मेदारी मिली है। उन्हें लालजी वर्मा के गढ़ में समीकरण फिटकर उपचुनाव में कटेहरी सीट सपा से छीनकर बीजेपी की झोली में डालने को कहा गया है। उनके साथ ही स्वतंत्र देव सिंह को भी कटेहरी में लगाया गया है। भाजपा अपने खाते की 5 सीटों के साथ ही सपा की सीटों पर भी अपनी बढ़त चाहती है, तैयारी शुरू कर चुकी है। कमान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने संभाल रखी है।उपचुनाव से पहले यूपी की सियासत में केंद्रीय मंत्री और मीरजापुर से सांसद अनुप्रिया पटेल के पति और योगी सरकार कैबिनेट में मंत्री आशीष पटेल को बड़ी जिम्मेदारी दी है। भारतीय जनता पार्टी10 सीटों के लिए जिन 16 मंत्रियों को जिम्मेदारी दी है उसमें करहल सीट की जिम्मेदारी जयवीर सिंह को दी गई है। अयोध्या की मिल्कीपुर सीट की जिम्मेदारी सूर्य प्रताप शाही और मयंकेश्वर शरण सिंह को दी गई है, अंबेडकर नगर के कटेहरी सीट की जिम्मेदारी स्वतंत्र सिंह और आशीष पटेल को दी गई है। सीसामऊ सीट की जिम्मेदारी सुरेश खन्ना और संजय निषाद को दी गई है, फूलपुर सीट की जिम्मेदारी दयाशंकर सिंह और राकेश सचान को दी गई है, मंझवा सीट के जिम्मेदारी अनिल राजभर को दी गई है।गाजियाबाद सदर सीट सुनील शर्मा के जिम्मे है। मीरापुर सीट अनिल राजभर और सोमेंद्र तोमर को दी गई है।खैर सीट लक्ष्मी नारायण चौधरी के हवाले है। कुंदरकी सीट की जिम्मेदारी धर्मपाल सिंह व जेपीएस राठौर पर है। भारतीय जनता पार्टी की कोशिश है कि उपचुनाव में 10 की दसों सीटें जीतकर लोकसभा चुनाव में मिले घाव भर सके इसलिए मंत्रियों को क्षेत्र में डटे रहने के निर्देश दिए हैं। उपचुनाव की तारीखों की घोषणा जल्द हो सकती है इसलिए भाजपा में टिकटार्थियों की भाग दौड़ भी शुरू हो गई है। एक तरफ विधायक से सांसद बने नेता अपने परिवार के सदस्य को टिकट दिलाने के पक्ष में हैं तो वहीं कई क्षेत्र के कद्दावर नेता, पूर्व सांसद, विधायक टिकट की लाइन में हैं।

राष्ट्रीय समाज कार्य कर्ता संगठन द्वारा धरना प्रदर्शन

लखनऊसंवाददाता। राष्ट्रीय सामाजिक कार्यकर्ता संगठन के संयोजक मुहम्मद आफाक के नेतृत्व में बढ़ती महंगाई, भ्रष्टाचार, पेपर लीक के खिलाफ राजनीतिक और सामाजिक संगठनों का धरना अध्यक्ष इकोगार्डन में धरना प्रदर्शन। तमाम उपस्तिथ लोगों ने जिलाधिकारी द्वारा राष्ट्रीय दरोपती मुरमु को ज्ञापन भेजा गया, जिस में सभी लोगों ने मांग की कि देश को संविधान के अनुसार चलाया जाना चाहिए, न कि धार्मिक और व्यक्तिगत मतभेदों वाली सांप्रदायिक शक्तियों द्वारा। उपस्थित सभी साथियों ने मांग की कि पेपर लीक परीक्षा को तुरंत दोबारा कराया जाए और परीक्षा का पूरा खर्चा सरकार खुद उठाए अन्यथा सभी राजनीतिक और सामाजिक संगठनों के नेता दिल्ली कूच करेंगे 12 अगस्त को जंतर–मंतर पर जाकर अपना विरोध दर्ज कराएंगे। इस मौके पर विशेष रूप से गौतम राणे सागर, पीसी क्रिल (राष्ट्रीय भाग्य दारी आंदोलन के संयोजक, मौलाना अली हुसैन कुमी (शिया उलेमा ए हिन्द के सचिव), मुहम्मद सईद (सर्व जन सेवा पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष), रिजवान कुरैशी, मुर्तजा अली (शराबबंदी संघर्ष समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष), मुहम्मद आफाक (सामाजिक कार्यकर्ता), फैज़ुद्दीन सिद्दीकी, आमिर कुरैशी (सर्व जन सेवा पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष), मुहम्मद हुसैन (कब्रिस्तान बचाव समिति के संयोजक), इरशाद अहमद सिद्दीकी (एसडीपीआई के जिला अध्यक्ष), हाजी फहीम सिद्दीकी (इंडियन नेशनल लीग के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष), रफी अहमद (नगर अधिकार परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष), साहिब सिंह धाकड़, डॉ. आफताब अहमद (मजलिस इत्तेहाद उल मुस्लिमीन के जिला अध्यक्ष), मौलाना शहाब हुसैन, मुहम्मद अहमद (एसडीपीआई बोर्ड के अध्यक्ष), वसीम अहमद, मतीन अंसारी, मुहम्मद तालिब, मोहम्मद जीशान, उलमा खातून, बहन अलीमा, मोहम्मद फहद, मोहम्मद शमीम, परवेज आलम, नरेंद्र यादव, कुशवाहा आदि शामिल रहे। अंत में, मोहम्मद आफाक ने कहा कि राजधानी लखनऊ से राजधानी दिल्ली तक सभी लोग बिना टिकट के ट्रेन में यात्रा करेंगे और टिकट की कीमत सरकार को ही चुकानी होगी।

कैबिनेट बैठक में 11 प्रस्ताव पासय सुरक्षा गार्ड और शिक्षकों के मानदेय में होगी बढ़ोतरी, किसानों को भी मिली सौगात

लखनऊसंवाददाता। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई योगी सरकार की कैबिनेट बैठक में 11 प्रस्तावों पर मुहर लग गई है। बैठक में औद्योगिक विकास, नगर विकास, कृषि विभाग समेत करीब एक दर्जन प्रस्ताव पेश किए गए और इन पर चर्चा के बाद 11 प्रस्ताव पास किए गए हैं। जिनमें उत्तर प्रदेश एग्रीटेक नीति 2024, सुरक्षा गार्ड और शिक्षकों के मानदेय बढ़ोतरी और पशुधन कुक्कुट एवं मत्स्य आहार प्रोत्साहन नीति 2024 को मंजूरी दी गई है। कृषि विभाग–उत्तर प्रदेश एग्रीटेक नीति 2024 पर लगी मुहर। किसानों हेतु डिजिटल रजिस्ट्री कार्यक्रम की शुरुआत, कृषि विकास दोगुना करने का लक्ष्य रखा गया। पशुधन कुक्कुट एवं मत्स्य आहार प्रोत्साहन नीति 2024, व उत्तरप्रदेश चारा नीति 2024 को मंजूरी पशुओं हेतु संतुलित आहार को बढ़ावा देना का लक्ष्यभारत सरकार योजना अंतर्गत मवेशियों को कृत्रिम गर्भाधान के लिए पंजीकृत करने वाले कृषकों को प्रोत्साहित करने का लक्ष्य दुग्धापादन के लिए अच्छी नस्ल की गायों के वृद्धि के लिए आहार नीति लाई गई।656 सिक्योरिटी गार्ड्स, 2130 अध्यापकों के मानदेय में वृद्धि।सिक्योरिटी गार्ड के प्रोत्साहन भत्ते में वृद्धि। इससे 656 सुरक्षा गार्ड और 2130 शिक्षकों का मानदेय व भत्ता बढ़ना तय हो गया है। जो सुरक्षा गार्ड मुख्यमंत्री और राज्यपाल के यहां तैनात हैं उन्हें अब 12500 की जगह 22 हजार रुपये प्रोत्साहन मिलेगा।

संक्षिप्त खबरें.......

अदालत में विवेचक की अन्तिम आख्या को लगा झटका

अयोध्या(एजेंसी)। इनायतनगर थाना क्षेत्र में शादी का झांसा देखकर दो लाख रूपये हडपने एवं जान से मारने की धमकी देने के मामले में पुलिस की अन्तिम आख्या को न्यायालय से भारी झटका लगा है। तृतीय अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट नावेद मुजफ्फर ने मामले में सुनवाई के पश्चात विवेचक की ओर से न्यायालय में दायर अन्तिम आख्या को निरस्त करने का आदेश पारित किया है साथ ही मामले में अग्रिम विवेचना का अदेश देते हुए आख्या कोर्ट में प्रस्तुत करने को कहा है। इस आदेश की एक प्रति संबंधित थानाध्यक्ष को प्रेषित किये जाने का भी आदेश दिया है। इसके पहले वादी अरूण कुमार पाण्डेय के पक्ष से वरिष्ठ अधिवक्ता कृष्ण मणि पाण्डेय व दीपक मिश्र ने न्यायालय में विवेचक की ओर से दायर अन्तिम आख्या का घोर विरेध करते हुए प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। न्यायालय में बहस के दौरान तर्क दिया कि विवेचक ने अभियुक्तों को लाभ पहुंचाने की नियत से फाइनल रिर्पोट न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है जबकि वादी की पत्नी शीला को जान्त्री देवी ने हरेन्द्र नामक युवक के साथ भगा दिया जिससे मोटी रकम लिया गया है। इसके पूर्व जान्त्री ने जो शील की बुआ है, शादी की अगुआ है वादी से दो लाभ रूपया ले लिया है कि शादी में खर्चा लगेगा। बाद में वापस कर दूंगी यह कहकर हड़प लिया है।

यह मामला इनायतनगर थाना अन्तर्गत चंदीपुर नगहरा (पड़री) गांव का वर्ष 2023 का है। वादी अरूण कुमार ने यह मुकदमा जान्त्री देवी, सोनू राजेश, हरेन्द्र व सत्यनारायण के विरूद्ध अपराध संख्या 412/23 अन्तर्गत धारा 366, 504, 506 भादवि के तहत 14 सितम्बर 2023 को थाना इनायतनगर में दर्ज कराया था। विवेचना के दौरान विवेचक ने आरोपितों को लाभ पहुंचाने के लिए फाइनल रिर्पोट लगा दिया था और उसे संबंधित कोर्ट में प्रस्तुत किया गया इसके बाद न्यायालय ने वादी को नोटिस जारी किया था।

नए कानून को लेकर हुई जागरूकता गोष्ठी

मिल्कीपुर–अयोध्या(एजेंसी)। देश में अब से सभी नई एफआईआर भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) के तहत दर्ज की जाएंगी। हालांकि जो मामले एक जुलाई से पहले दर्ज किए गए हैं उनके अंतिम निपटारा होने तक उन केसों में पुराने कानूनों के तहत केस चलते रहेंगे। नए कानून में अब हत्या करने पर धारा 302 नहीं, 101 लगेगी। धोखाधड़ी की धारा 420 के स्थान पर अब 318 हो गई है। दुष्कर्म की धारा 376 नहीं, अब धारा 63 में मुकदमा दर्ज होगा। वही शादीशुदा महिला को फुसलाना अब अपराध है, जबकि जबरन अप्राकृतिक यौन संबंध अब अपराध की कैटेगरी में नहीं आएगा। आज एक जुलाई से देशभर में तीन नए क्रिमिनल कानून लागू होने से ये बदलाव हुए हैं। कई प्रोसीजरल बदलाव भी हुए है। जैसे अब घर बैठे ई– एफआईआर दर्ज कराकर तीसरे दिन अपनी इनफॉरमेशन रिपोर्ट की कॉपी प्राप्त कर सकेंगे। इनायत नगर थाना परिसर में सोमवार को इन नए कानूनों की जानकारी के लिए गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में क्षेत्र के सम्भ्रांत लोग के साथ क्षेत्र की महिलाओं को इन नए कानूनों की जानकारी गोष्ठी में दी गई। गोष्ठी में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राज करन नय्यर ने इन बदलावों के बारे में बताया। नए कानून क्या हैं, सजा, जुर्माना को लेकर क्या बदला है यह सब बताया। अभियोजन अधिकारी शरद यादव, अतुल मिश्रा ने बताया कि जो नए कानून आए हैं उनके बारे में लोगों, आम जनता और पुलिस कर्मियों को जानकारी देने के लिए गोष्ठियां की जा रही हैं। आज गोष्ठी का आयोजन इसलिए किया गया। ताकि सभी को उन कानूनों की जानकारी दी जा सके। इसमें महिलाओं बच्चों को लेकर कानूनों में कुछ बदलाव किए हैं, जिनकी जानकारी देते हुए कहा गया कि पहले हर अपराधों के अलग–अलग चौप्टर पर जानकारियां मिलती थी। लेकिन अब बच्चों और महिलाओं से संबंधित जो भी अपराध होंगे एक ही चौप्टर में सारी धाराएं मालूम हो जाएगी।

अब डिजिटल साक्ष्य न्यायालय में बतौर सबूत होंगे स्वीकार : अतुल सोनकर

सोहावल– अयोध्या(एजेंसी)। सोमवार से देश भर में लागू हुए नए कानून को लेकर जानकारी और जागरूकता गोष्ठी रैनाही में संपन्न हुई। दोपहर थाना परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक ग्रामीण अतुल कुमार सोनकर, प्रभारी निरीक्षक पंकज सिंह, सीडीपीओ सहित ग्राम प्रधान, आंगन बाड़ी कार्यकत्री, राजनीतिक दलों के लोग, सामाजिक कार्यकर्ता और मीडिया कर्मी विशेष रूप से बुलाए गए थे। गोष्ठी में भारत सरकार के पुराने कानूनों की जगह स्थापित किए गए नए कानून में भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक संहिता, और भारतीय साक्ष्य अधिनियम जैसे दस्तावेजी कानून पर व्यापक चर्चा की गई। मुख्य अतिथि रहे पुलिस अधीक्षक ग्रामीण ने कहा अब नए कानून में व्यवस्था है कोई भी भारत वर्ष के किसी भी थाने से अपनी रिपोर्ट दर्ज करा सकता है। व्यक्ति का अपने थाना क्षेत्र में होना जरूरी नही है। अब डिजिटल और इलेक्ट्रानिक साक्ष्य न्यायालय में बतौर सबूत स्वीकार किए जायेंगे। मॉब लांचिंग जैसी घटनाओं के लिए अलग से कानून और सख्त सजा का प्राविधान है। 18 वर्ष से कम उम्र को हर मामले में नाबालिग करार दिया जाएगा। महिलाओं और बालक बालिका को लेकर होने वाले अपराधो में सजा कड़ी करते हुये आजीवन कारावास तक की सजा का प्राविधान किया गया है। संबोधन करने वालो में सीडीपीओ सोहावल शामिल रहीं। मौजूद लोगो में प्रधान अनुराग सिंह, अखिलेश सोनी, प्रतिनिधि शत्रोहन वर्मा, अंबरीश पाण्डेय, सत्यनाम सिंह,अशोक सिंह बीर भद्र गुप्ता, बृज कुमार, राम किशुन, ऑंगनबाड़ी कार्यकत्री सहित बड़ी संख्या में गणमान्य शामिल रहे।

जिला चिकित्सालय की व्यवस्थाओं का डीएम ने किया निरीक्षण

-सफाई की व्यवस्था खराब पाये जाने पर प्रबन्धकों को दी चेतावनी

अयोध्या(एजेंसी)। जिलाधिकारी नितीश कुमार ने जिला चिकित्सालय एवं जिला महिला चिकित्सालय के विभिन्न वार्डों परिसर सहित चिकित्सालय की विभिन्न व्यवस्थाओं का आकस्मिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिला चिकित्सालय एवं जिला महिला चिकित्सालय के वार्डों में साफ–सफाई की व्यवस्था बेहतर पायी गयी, जबकि दोनों चिकित्सालयों के परिसरों में सफाई की व्यवस्था खराब पाये जाने पर दोनों प्रबन्धकों को चेतावनी देते हुये यथाशीघ्र सम्पूर्ण परिसर की सफाई व्यवस्था को सुदृढ़ एवं साफदुरुथरा करने के निर्देश दिये। इस दौरान जिलाधिकारी द्वारा कैम्पस में अव्यवस्थित रूप से खड़े किए गए निष्प्रयोज्य वाहनों को तत्काल हटवाने तथा परिसर को ड्रेनेज व्यवस्था को ठीक कराने, कैम्पस में चल रहे विभिन्न निर्माण कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने तथा उसमें उपयोग होने वाले सामाग्रियों को नियमित व्यवस्थित रूप से रखने तथा मलबा आदि को तत्काल हटवाते रहने के निर्देश दिये। इस दौरान जिलाधिकारी ने परिसर में चल रहे फायर फाइटिंग के कार्य को तेजी से कराने तथा सभी कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये। इस अवसर पर जिलाधिकारी द्वारा चिकित्सालय में भर्ती मरीजों के तीमारदारों हेतु बनाये गये निःशुल्क रैन बसेरों का भी निरीक्षण किया तथा उसमें साफ सफाई व्यवस्था को और बेहतर बनाने तथा रैन बसेरे की अधिक से अधिक उपयोगिता सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने दोनों चिकित्सालयों के परिसर में व्यवस्थित रूप से वाहनों को खड़ा कराने हेतु प्रबन्धकों को निर्देशित किया। जिलाधिकारी द्वारा सीटी स्कैन व्यवस्था का अवलोकन किया गया इस अवसर पर अवगत कराया गया कि रोजाना 30 से 35 मरीजों का सीटी स्कैन किया जाता है। निरीक्षण के दौरान तक 22 मरीजों का सीटी स्कैन किया जा चुका था। जिलाधिकारी ने जन सामान्य हेतु उसे 24 गणे 7 घंटे संचालित करने के निर्देश दिये। उन्होंने चिकित्सा अधीक्षकों एवं समस्त चिकित्सकों को विभिन्न वार्डों में नियमित स्वयं भी विजिट करने के निर्देश दिये और शासन के मशानुरूप चिकित्सालय में आने वाले समस्त मरीजों को बेहतर से बेहतर चिकित्सीय सुविधाएं सुगमता से उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्होंने जनरल ओटी वार्ड, एस0एन0सी0 वार्ड, वार्म वार्ड तथा जनरल वार्ड सहित विभिन्न वार्डों का भौतिक निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 संजय जैन, प्रमुख चिकित्सा अधीक्षक जिला चिकित्सालय, मुख्य चिकित्सा अधीक्षिका जिला महिला चिकित्सालय सहित अन्य सम्बंधित चिकित्सक उपस्थित रहे।

प्रमुख सचिव नगर विकास अमृत अभिजात ने जलवानपुरा का किया निरीक्षण

अयोध्या(एजेंसी)। प्रमुख सचिव नगर विकास उ0प्र0 शासन अमृत अभिजात का सोमवार को अयोध्या आगमन हुआ। प्रमुख सचिव का स्वागत मण्डलायुक्त गौरव दयाल, नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने सर्किट हाउस में किया। इस दौरान प्रमुख सचिव ने शहर के अतिवृष्टि प्रभावित विभिन्न स्थलों पर की जा रही कार्यवाहियों के सम्बंध में नगर निगम, पीडब्लूडी, जलनिगम सहित अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारियों से जानकारी प्राप्त की। मण्डलायुक्त ने जलनिकासी हेतु स्थापित कराये गये पम्पसेटों तथा अन्य प्रबन्धों के बारे में अवगत कराया। अगले चरण में प्रमुख सचिव अयोध्या ने जल भराव से प्रभावित जलवानपुरा का निरीक्षण किया तथा जल निकासी हेतु अयोध्या विकास प्राधिकरण द्वारा डाली जा रही पाइप लाइन बिछाने आदि के कार्यो को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये। अन्त में उन्होंने अयोध्या बाईपास पर जलनिकासी के लिए पूर्व से निर्मित नालों को भी देखा। इस दौरान अयोध्या मेयर महंत गिरीश पति त्रिपाठी सहित नगर निगम के अधिकारी, अधिशाषी अभियन्ता एवं अन्य सम्बंधित उपस्थित रहे।प्रमुख सचिव के प्रस्थान के पश्चात मण्डलायुक्त गौरव दयाल ने मेयर महंत गिरीशपति त्रिपाठी एवं नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा के साथ अयोध्या रायबरेली रोड पर नगर विकास विभाग द्वारा बनाये जा रहे कल्यान मण्डप के कार्यो का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने कार्यदायी संस्था सी0एण्डडी0एस0 के अधिशाषी अभियन्ता को समस्त कार्यो को गुणवत्ता के साथ शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये।

स्कूल चलों अभियान के दूसरे चरण की हुई शुरूआत

-प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश उत्सव का हुआ आयोजन

अयोध्या(एजेंसी)। ग्रीष्मावकास के उपरांत सोमवार से परिषदीय विद्यालयों के संचालन प्रारम्भ होने के साथ ही स्कूल चलों अभियान के दूसरे चरण की शुरूआत हुआ। इस अवसर पर जनपद के समस्त प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश उत्सव कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद से लेकर ब्लाक स्तर तक के अधिकारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। समस्त परिषदीय विद्यालयों में आयोजित प्रवेश उत्सव कार्यक्रमों में सभी शिक्षक, शिक्षामित्रों एवं अनुदेशकों द्वारा अपने–अपने विद्यालय को फूलदृपत्तियों, रंगोली, झंडियों आदि से सजाया गया तथा विद्यालय आने वाले बच्चों को रोलीदृटीका लगाकर उनका स्वागत किया गया। मध्यान्ह भोजन में बच्चों के लिए फल–फूल एवं रूचिकर हलवा, खीर आदि पौष्टिक व्यंजन खिलायें गये। इस अवसर पर कक्षा–1 और कक्षा–6 में नवीन प्रवेश लेने वाले छात्र छात्राओं का विशेष रूप से स्वागत करते हुये उन्हें प्रोत्साहित किया गया। इसी क्रम में आज पूर्वान्हन 8 बजे जिलाधिकारी नितीश कुमार ने तहसील सोहावल क्षेत्रान्तर्गत स्थित इंग्लिश मीडियम कम्पोजिट विद्यालय मुमताज नगर में आयोजित प्रवेश उत्सव कार्यक्रम का मां सरस्वती के छाया चित्र पर माल्यार्पण कर एवं दीप प्रज्जवलित कर शुभारम्भ किया और नवीन प्रवेश लेने वाले छात्र छात्राओं का माला पहनाकर एवं रोली टीका लगाकर उनका स्वागत किया गया तथा उन्हें प्रोत्साहित किया गया। इस दौरान जिलाधिकारी द्वारा निपुण असेसमेंट में सफल बच्चों को प्रमाण पत्र व चाकलेट आदि प्रदान कर उन्हें निरन्तर कड़ी मेहनत करने हेतु प्रेरित किया गया। जिलाधिकारी द्वारा बच्चों को पुस्तकें एवं फल आदि भी वितरित किये गये। इस दौरान जिलाधिकारी ने कार्यक्रम में उपस्थित ग्राम प्रधान, अभिभावकों एवं शिक्षकों को सम्बोधित करते हुये कहा कि सभी लोग संयुक्त प्रयास करते हुए यह सुनिश्चित किया जाय कि गांव एवं जनपद में कोई भी बच्चा विद्यालय में प्रवेश से वंचित न रहने पाये, इसी के साथ ही उन्होंने विद्यालय से कक्षा–8 उत्तीर्ण करने वाले बच्चों का रजिस्टर तैयार कर बच्चों द्वारा कक्षा 9 में किस विद्यालय में प्रवेश लिया गया का भी विवरण अंकित किए जाने और यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि कोई भी बच्चा ड्रापआउट न होने पाये। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी एवं समस्त अध्यापकों को अभियान चलाकर अपने–अपने विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा–1 से 8 तक के सभी बच्चों का कक्षा एवं विषयवार असेसमेंट का कार्य आगामी एक सप्ताह में पूर्ण करने तथा उसके उपरांत प्रत्येक बच्चें को उनके शैक्षिक स्तर के अनुरूप विषयवार कलस्टर बनाकर उसी के अनुरूप शिक्षा प्रदान करते हुये उन्हें उनकी कक्षा के शैक्षिक स्तर के अनुरूप लाने के निर्देश दिये। इस दौरान जिलाधिकारी द्वारा विद्यालय में संचालित स्मार्ट कक्षाओं का भी निरीक्षण किया गया तथा जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को समस्त अध्यापकों को स्मार्ट कक्षा के संचालन की ट्रेनिंग देने के निर्देश दिये। इस दौरान उन्होंने बच्चों को भी स्मार्ट कक्षाओं के संचालन को सिखाने के निर्देश दिये तथा समस्त स्मार्ट कक्षाओं को रोस्टर बनाकर सभी बच्चों का प्रतिभाग सुनिश्चित कराते हुये अधिक से अधिक स्मार्ट क्लास का उपयोग सुनिश्चित कराने के निर्देश दिये। कार्यक्रम में बच्चों द्वारा स्वागत एवं मनोहर स्वागत गीत भी प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी सहित सम्बंधित ग्राम प्रधान, बच्चें एवं उनके अभिभावक व शिक्षकगण उपस्थित रहे।

मोहनी दहेज हत्याकाण्ड में पति व ससुर दोषमुक्त

अयोध्या(एजेंसी)। अष्टम अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश हेमंत कुमार ने अयोध्या कोतवाली क्षेत्र के बहुचर्चित विवाहिता मोहनी कश्यप दहेज हत्याकाण्ड में मुख्य आरोपी पति धर्मेन्द्र कश्यप व ससुर रमेश पर अपराध साबित न होने पर संदेह का लाभ देकर बाइज्जत बरी कर दिया। फैसले के पश्चात दोनों आरोपितों को न्यायिक हिरासत से मुक्त कर दिया गया।

यह मामला अयोध्या कोतवाली क्षेत्र का वर्ष 2020 का है। बचाव पक्ष से वरिष्ठ अधिवक्त आनन्द श्रीवास्तव, मनीष मिश्र व विनोद श्रीवास्तव ने जोरदार पैरवी किया। बहस के दौरान तर्क दिया कि वह दोनों निर्दोष हैं जानबूझकर फर्जी फसाया गया है। विवाहिता को सरयू नदी में फेंकते हुए किसी ने नहीं देखा है।

अभियोजन पक्ष के मुताबिक गोण्डा जनपद के बिहिया चेन गांव निवासी स्वामीनाथ की पुत्री मोनी का विवाह घटना के पांच साल पूर्व धर्मेन्द्र कश्यप के साथ हुआ था। शादी के बाद मोटरसाइकिल व सोने की चेन की मांग पूरी न होने पर ससुराल वाले मोहनी कश्यप को प्रताडित करते थे जब विवाहिता 20 दिन बाद अपने मायके आयी तो अपनी मां ज्ञानमती को दहेज की बात बताया कि ससुराल वाले सोने की चेन व मोटरसाइकिल की मांग करते हैं इसी के चलते उसे परेशान भी किया जाता है। 21 अक्टूबर 2020 की रात लगभग 3 बजे उसका पति अपने ससुराल आया और अपनी पत्नी को अयोध्या दर्शन के बहाने ले गया और 22 अक्टूबर की रात उसको सरयू पुल से नदी में गिरा दिया गया जिससे उसकी मौत हो गयी। पुलिस ने मोबाइल से सुबह इसकी सूचना विवाहिता के पिता स्वामीनाथ को दिया। घटना की रिपोर्ट मृतका के पिता स्वामीनाथ ने अयोध्या कोतवाली में अपने दामाद धर्मेन्द्र कश्यप व समधी रमेश के खिलाफ मु.अ.सं. 757/20 अन्तर्गत धारा 498 ए 304बी/302 व 3/4 दहेज प्रतिषेध अधिनियम के तहत दर्ज हुआ। मामले में आधा दर्जन से ज्यादा गवाह अभियोजन पक्ष की ओर से न्यायालय में पेश किये गये वहां सुनवाई के पश्चात न्यायालय ने वादी व गवाहों के बयान के आधार पर दहेज हत्या के दोनो अभियुक्तों धर्मेन्द्र कश्यप व रमेश कश्यप को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया।

विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान का आगाज

-हरी झंडी दिखाकर जागरुकता रैली को किया गया रवाना

अयोध्या(एजेंसी)। जिले में विशेष संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान का शुभारंभ जिला पुरूष चिकित्सालय से किया गया। जिलाधिकारी नितिश कुमार ने जागरुकता रैली को रवाना कर लोगों को व्यक्तिगत साफ–सफाई रखने व वातावारण को स्वच्छ बनाने के लिए अपने पास–पड़ोस के लोगों को प्रेरित करने की शपथ दिलाई। यह अभियान 1 जुलाई से 31 जुलाई तक चलेगा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि सरकार सूबे के हर गांव, ब्लॉक व जनपद के साथ–साथ पूरे प्रदेश को दिमागी बुखार से मुक्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके लिए 13 विभागों के आपसी समन्वय से जनपद में विशेष संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान 31 जुलाई तक चलाया जाएगा। उन्होंने कहा कि संचारी रोग हमारे गांव अथवा क्षेत्र में रहने वाले परिवारों के आर्थिक और पारिवारिक नुकसान का एक बड़ा कारण हो सकते हैं। अतः हम शपथ लेते हैं कि संचारी रोग से लड़ाई में हम हर संभव प्रयास करेंगे कि हमारा परिवार व समुदाय इन रोगों से मुक्त रहें। इस मौके पर लोगों ने शपथ लिया "हम सभी शौचालय का प्रयोग करेंगे और अन्य लोगों को भी शौचालय का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। व्यक्तिगत साफ–सफाई का ध्यान रखेंगे, अपने घर के आस–पास साफ–सफाई रखेंगे। हमारे गांव अथवा हमारे आस–पास के क्षेत्र में यदि कोई व्यक्ति बुखार से पीड़ित होगा, तो परिवार को तुरंत इलाज के लिए सरकारी अस्पताल जाने के लिए प्रेरित करेंगे।" डीएम ने कहा कि बच्चों में दिमागी बुखार जानलेवा हो सकता है। इस रोग के बाद शारीरिक और मानसिक विकलांगता भी आ सकती है। इसलिए बुखार होने पर बच्चे को तत्काल नजदीकी सरकारी अस्पताल में ले जाएं। जनपद के प्रत्येक सीएचसी/पीएचसी पर बुखार के समुचित इलाज की व्यवस्था है। उन्होंने कहा कि इस बीमारी से सबसे ज्यादा प्रभावित होने का खतरा 1 से 15 वर्ष के आयु के बच्चों को होता है, इसलिए इनकी सुरक्षा के लिए विशेष प्रयास करें।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ संजय जैन ने कहा कि विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान एक अप्रैल से 31 जुलाई तक एवं 16 जुलाई से 31जुलाई तक दस्तक अभियान चलाया जाएगा। अभियान के दौरान फ्रंटलाइन वर्कर (आशा, एएनएम, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता) घर–घर जाकर बुखार, इंफ्लुएंजा लाइक इलनेस से ग्रसित लोगों के साथ–साथ संभावित क्षय रोगियों व कुपोषित बच्चों को चिन्हित करेंगी। इसके अलावा वह क्षेत्रवार ऐसे मकानों को सूची बनाएंगी जहां घरों के भीतर मच्छरों का प्रजनन पाया गया हो। इस दौरान स्वास्थ्य कार्यकर्ता फिजिकल डिस्टेंसिंग, हाथों की धुलाई और मास्क की अनिवार्यता पर विशेष ध्यान रखेंगे। संचारी रोग नियंत्रण अभियान शुभारंभ अवसर पर नोडल अधिकारी वीबीडी डा डी के शर्मा,अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ पुष्पेंद्र कुमार, नगर स्वास्थ्य अधिकारी डा राम मणि शुक्ला,अर्बन नोडल डा वेद प्रकाश त्रिपाठी सहित स्वास्थ्य विभाग से डी एच ई आई ओ,फाइलेरिया नियंत्रण अधिकारी, जिला कार्यक्रम प्रबंधक, जिला मलेरिया अधिकारी,डीसीपीएम, डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर यूनिसेफ ,डबल्यू एच ओ, पाथ आदि एवम नगर निगम के अधिकारी कर्मचारी ने प्रतिभाग किया।

जल निगम की लापरवाही को लेकर जिलाधिकारी ने लगाई फटकार,जल्द कार्य को पूरा करने के दिए निर्देश

मीरजापुर (एजेंसी)। नगर पालिका अध्यक्ष श्यामसुंदर केशरी ने जल निगम द्वारा नगर में किए जा रहे कार्यों से नगर में हो रही समस्या को लेकर जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन से वार्ता की थी।जिलाधिकारी ने इसी समस्या को लेकर सोमवार की शाम एडीएम शिवप्रताप शुक्ला, जल निगम एवं अमृत योजना के अधिकारियों के साथ कलेक्ट्रेट में बैठक की। बैठक में नपाध्यक्ष, ईओ जी लाल एवं सभासद भी मौजूद रहे। नपाध्यक्ष ने कहा कि जल निगम के लापरवाही के कारण कई घरों के पानी के पाइप का कनेक्शन कट जा रहे, खुदाई से निकली मिट्टी नालियों में जाने के कारण गन्दा पानी बह रहा है।बरसात के इस मौसम में खुदाई से निकली मिट्टी मलबे और कीचड़ का रूप लेकर मार्गो में बह रही है। अमृत योजना के अंतर्गत डाली जा रही सीवर लाइन के भी कारण नगर की जनता को अधिक परेशानियां को सामना करना पड़ रहा है। जिलाधिकारी ने अमृत योजना के कार्यों में बरती जा रही लापरवाही पर दोनों विभाग के अधिकारियों को कड़ी फटकार लगाई है। उन्होंने कहा है बरसात के मौसम में जनहित को ध्यान में रखते हुए जल्द से जल्द कार्य को कराया जाए। नगर में आ रही समस्याओं को लेकर जिलाधिकारी ने एक सूची जारी की है।जिसमे नगर के विभिन्न वार्डो के पांच पांच सभासद से दोनों विभाग के अधिकारी संपर्क करेंगे और सभासद भी अपने वार्डो की समस्या की सूची बनाकर जल निगम के अधिकारियों को देंगे। जिससे उनकी समस्या का निस्तारण किया जा सके। इस मौके पर अजय मोदनवाल, अलंकार जायसवाल, नीरज गुप्ता, हुकुमचंद मौर्या, रतन बिंद, कमलेश मौर्या सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

सपाईयों ने अनोखे ढंग से मनाया अखिलेश यादव का जन्मदिन

मीरजापुर (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के जन्मदिन को जिले के सपाईयों ने इस बार बदले हुए अंदाज में मनाया है। यूं कहें कि पूरी तरह से पर्यावरण को समर्पित कार्यक्रम रहा है। सपा प्रमुख के जन्मदिन को लेकर जिले के कार्यकर्ताओंऔर समर्थकों में काफी उत्साह रहा। अखिलेश यादव के जन्मदिन पर सपा नेता व कार्यकर्ता 1 जुलाई से 7 जुलाई तक वृक्षारोपण अभियान चलाएंगे। जिसमें पीडीए, पेड़ के रूप में बरगद, पीपल और नीम के पेड़ लगाए जा रहे हैं। सपाइयों का कहना है कि हर तरफ फैले हुए तरह–तरह के प्रदूषण को दूर करने के लिए, आवश्यकता है जमीन से जुड़े पेड़ों की, मानव निर्मित शाखाओं की नहीं। इस मौके पर वृक्षारोपण करते हुए सपा जिला अध्यक्ष देवी प्रसाद चौधरी ने कहा कि पीडीए पेड़ पौधारोपण के इस आंदोलन को हम राष्ट्रव्यापी आंदोलन बनाएंगे। इस मौके पर पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव के दीर्घायु के लिए पीडीए वृक्षारोपण हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया। पार्टी जिलाध्यक्ष ने कहा कि वृक्षारोपण हरियाली देने के साथ, पर्यावरण को शुद्ध भी रखता है। गरीब और किसान इसकी छाया में बैठकर आनंद महसूस करता है। इसीलिये हम लोग अखिलेश यादव के जन्मदिन पर पौधारोपण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश का कोई भी संगठन समाजवादी पार्टी के संगठन का मुकाबला नहीं कर सकता है। समाजवादी पार्टा को नेता जी यानी मुलायम सिंह यादव ने बनाया है। नेता जी ने 2012 में इस पार्टी की कमान अखिलेश यादव को सौंपी। अखिलेश यादव ने सारे कीर्तिमान तोड़कर सबसे ज्यागा सांसदों को लोकसभा में पहुंचाया है। सपा जिलाध्यक्ष देवी प्रसाद चौधरी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने धन, दौलत और सरकारी मशीनरी की पूरी ताकत लगा ली, उसके बाद भी वह सपा को रोक नहीं सके। सपा उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी और देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। आज गरीब, किसान और नौजवान को अखिलेश यादव पर पूरा भरोसा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और अन्य छोटे दलों के साथ हमारा गठबंधन इसी तरह आगे भी जारी रहेगा। हम सबने मिलकर जैसे दिल्ली में बीजेपी को कमजोर किया है। आने वाले समय में उसी तरह उत्तर प्रदेश से भी भारतीय जनता पार्टी को उखाड़ फेकेंगे और अखिलेश यादव के नेतृत्व में 2027 में उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाएंगे। पार्टी कार्यालय लोहिया ट्रस्ट मेंमे अखिलेश यादव का जन्मदिन मनाने वालों में पूर्व सांसद रमेश चंद्र बिंद, पूर्व जिलाध्यक्ष शिव शंकर सिंह यादव, पूर्व विधायक जगदंबा सिंह पटेल, आशीष यादव, रामजी मौर्य, पूर्व राज्य मंत्री गुलाब चंद मुन्नी यादव, झल्लू यादव, राज नारायण, निराला कोल, दामोदर मौर्य, कौशिक कुमार कनौजिया, रामगोपाल, कन्हैया यादव, सौरभ सिंह, ओम प्रकाश सोनकर, श्याम अचल यादव, आदि शामिल थे।

पुलिस अधीक्षक द्वारा 3 नये कानून लागू होने के उपलक्ष्य में जागरुकता कार्यक्रम का किया गया आयोजन

’जिले के विभिन्न थानों पर आयोजित हुआ जागरुकता कार्यक्रम

मीरजापुर (एजेंसी)। भारत सरकार द्वारा प्रख्यापित 3 नये आपराधिक कानूनों भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 के देशभर में लागू होने के उपलक्ष्य में पुलिस अधीक्षक अभिनन्दन द्वारा थाना अदलहाट पर जागरुकता कार्यक्रम के दृष्टिगत क्षेत्रांतर्गत स्थानी गणमान्य, संभ्रांत व्यक्तियों, आम नागरिकों तथा पत्रकार बन्धुओं को 3 कानूनों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। कार्यक्रम के दौरान बताया गया कि देश में 3 नये आपराधिक कानून भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 लागू हो चुके हैं, इसके तहत कई कानून बदल गए हैं, जिससे भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली में व्यापक बदलाव आएंगे, ब्रिटिश काल के कानूनों का अंत हो चुका है। भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) और भारतीय साक्ष्य अधिनियम (बीएसए), इन तीन नये आपराधिक कानूनों के लागू होने से न्याय सुगम होगा तथा नए कानून से मुकदमे जल्दी निपटेंगे। नये कानूनों के अन्तर्गत भारतीय नारी, मासूम बच्चों, बुजुर्गों को विशेष शक्तियां दी गई हैं। कार्यक्रम के दौरान नये आपराधिक कानून के महत्त्वपूर्ण प्रावधानों, अधिकार एवं कर्तव्यों के बारे में आम नागरिकों एवं सम्भ्रांत व्यक्तियों को जानकारी दी गई। इसी क्रम में पुलिस अधीक्षक मीरजापुर के निर्देशन में जनपद के समस्त थानों द्वारा भी 3 नये आपराधिक कानूनों के दृष्टिगत थानों पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन कर स्थानीय गणमान्य, संभ्रांत व्यक्तियों, आम नागरिकों एव पत्रकार बन्धुओं को जागरूक किया गया। लालगंज कोतवाली परिसर में थानाध्यक्ष के नेतृत्व में नए कानून को लेकर बैठक संपन्न हुई। बैठक में बताया गया कि समय परिवर्तनशील है और कानून समय के अनुसार प्रतिनिधित्व करने वाला बनाया गया है। थानाध्यक्ष संजय कुमार सिंह ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि विकसित समाज में विकसित कानून समाज को सफलता की ओर ले जाएगा इससे लोग सुरक्षित और समृद्ध बने रहेंगे। उन्होंने बताया गांव और शहर के लोगों को परेशान नहीं होना पड़ेगा कानून एक क्रिया बन चुका है और कोई भी व्यक्ति उससे अछूता नहीं है। देश में ऐसे कानून की जरूरत थी। उन्होंने कहा अपराध और अपराधियों पर नियंत्रण के लिए बेहतर कानून को लागू कर दिया गया है। जिसकी व्याख्या न्यायालयी प्रक्रिया का स्वरूप बनेगा। विकसित भारत को कानून से सुरक्षित किया जाएगा। ग्रामीणों को संचित न्याय मिलेगा।

तो फिर बढ़ेगी मुश्किले

हार भाजपा में इन दिनों भीतरदृभीतर आग सुलग रही है। कारण कुछ बाह्य हैॅ कुछ आंतरिक। केंद्र में भाजपा की सरकार तो बन गई हैॅ लेकिन इस बार २०१४ और २०१६ जैसी सफलता नहीं मिली है। जब शीर्ष कमजोर होता है तो निचले स्तर पर जनतंत्र की कोपलें स्वतः उभरने लगती हैं। यही कारण है कि नेताओं की दबी हुई भावनाएं भी अभिव्यक्त होने लगी हैं। पिछले दिनों भाजपा नेता अश्विनी चौबे ने पार्टी मामलों पर टिप्पणी करके स्थिर जल में लहरें पैदा कर दी है। नतीजों के कारण यूं भी कुछ बेचौनी है। ध २०२० के विधानसभा चुनाव में अधिक सीटों पर चुनाव लड़ कर भी नीतीश की पार्टी भाजपा के मुकाबले बहुत पीछे रह गई थी। इस बार वह एक सीट कम लड़ कर भी बराबरी पर है। केंद्रीय स्तर पर भी जो लोक सभा के नतीजे आए हैं उसमें नीतीश अधिक प्रासंगिक और शक्तिमान हो गए हैं। अब चूंकि नीतीश की राजनीति बिहार केंद्रित है इसलिए स्वाभाविक है उनका प्रभाव बिहार पर पहले से अधिक होगा। बिहार भाजपा की परेशानी इन सब से ही बढ़ी है। जब नीतीश ने राजद के साथ २०२२ में राजनीतिक समझौत किया था तब भाजपा के राष्ट्रीय नेतृत्व ने बहुत सोच समझ कर सम्राट चौधरी को बिहार भाजपा का अध्यक्ष बनाया था। ऐसा इसलिए किया गया था कि सम्राट एक साथ नीतीश और तेजस्वी को राजनीतिक चुनौती दे सकेंगे। उस समय ऐसा लग रहा था कि जनता दल (यूनाइटेड) और राष्ट्रीय जनता दल की समन्वित राजनीति का नेतृत्व जल्दी ही तेजस्वी करने वाले हैं। नीतीश कुमार इस तरह के संकेत भी दे रहे थे। ध ऐसे में भाजपा को तेजस्वी को जवाब देने लायक एक युवा नेतृत्व विकसित करना था। सम्राट चौधरी को आगे कर पार्टी ने यही किया था। सम्राट इस निकष पर खरे भी उतरे थे। उनकी लोकप्रियता बढ़ रही थी। बिहारदृ जहां राजनीति में जाति एक बड़ा फैक्टर होता हैदृके धरातल पर पिछड़े वर्ग के बड़े हिस्से को आकद्दषत करने और सामान्य वर्गों के लिए अनुकूल बने रहने की छवि उनकी बन रही थी। भाजपा का जो आधार वोट है उस में उनकी स्वीकृति भी पुख्ता हो रही थी। इसी बीच जनवरी २०२४ के आखिर में नीतीश एक बार फिर भाजपा के साथ हो लिये और पुराने सारे गणित गड्डमड्ड हो गए। यह लोक सभा चुनाव के ठीक पहले हुआ था। चुनाव में पिछली बार की तरह सफलता नहीं मिलीॅ जबकि एक छोड़ ३६ सीटों पर एनडीए को कामयाबी मिली थींॅ लेकिन इस चुनाव को २०१६ के निकष पर देखना सही नहीं होगा। इस चुनाव में लालू प्रसाद ने जाति कार्ड खूब खेला। अपनी पार्टी और गठबंधन से सम्राट चौधरी के जनाधार क्षेत्र में सेंध लगाने की हरसंभव कोशिश की। इसके उलट सम्राट अपनी ही बिरादरी के किसी व्यक्ति को अपनी पार्टी का टिकट नहीं दिला सके। ऐसे में हवा यह बनी थी कि सम्राट चौधरी को लालू प्रसाद ने अपनी राजनीतिक चाल से ध्वस्त कर दिया है। उनकी पार्टी में भी इसी तरह की बात जोर बांधने लगी कि सम्राट की कोई राजनीतिक उपयोगिता नहीं सिद्ध हुईॅ लेकिन इन तमाम बातों के बीच सम्राट चुपचाप अपने काम में लगे रहे। उनके साथ दो चुनौती थी। पहली तो तेजस्वी यादव का राजनीतिक मुकाबला करना और दूसरा नीतीश जैसे कद्दावर नेता के साथ एकता बनाए रखना। इन दोनों स्तरों पर वह सफल रहे। ध सम्राट ने अपना संतुलन बनाए रखा। तेजस्वी के बाद सबसे अधिक चुनावी सभाएं उन्होंने की। अपने गृहक्षेत्र में लोजपा के एक ऐसे उम्मीदवार को जिताने में वह सफल हुए जिनका जाति के हिसाब से कोई वोट बैंक नहीं था। पूरे बिहार में अपने प्रभाव के वोट को ट्रांसफर कराने में वह लगभग सफल हुए। हाॅ सोन इलाके के शाहाबाद और मगध के कुछ चुनाव क्षेत्रों में उनकी नहीं चली। यहां महागठबंधन के विजयी नौ में से सात उम्मीदवार जीते हैं। यदि सम्राट ने अपना प्रभाव न दिखलाया होता तो बिहार एनडीए की स्थिति बंगाल और उत्तर प्रदेश जैसी हो जाती। बिहार का सामाजिकदृराजनीतिक मनदृमिजाज उत्तर प्रदेश से मिलतादृजुलता है। यदि बिहार में उत्तर प्रदेश जैसी स्थिति हो जातीॅ तो क्या होताध एनडीए को दसदृबारह सीटें कम आती और इंडिया गठबंधन को उतनी ही अधिक। फिर तो केवल तेदेपा के हाथ में सरकार बनाने की कुंजी होती। सम्राट ने इस स्थिति से भाजपा को बाहर रख कर उसकी साख बचा ली। यह उनकी उल्लेखनीय सफलता हैॅ लेकिन आने वाले समय में बिहार भाजपा के सामने बड़ी चुनौती आगामी विधान सभा चुनाव हैॅ जो अगले वर्ष होने वाला है। इसके समय पूर्व होने की भी चर्चा है। राजदॅ कांग्रेस और वाम का गठबंधन से मुकाबला और एनडीए के भीतर नीतीश से तालदृमेल रखना निश्चित ही राजनीतिक कौशल का काम होगाॅ जिसे भाजपा नेतृत्व को करना होगा। जब नीतीश की जुगलबंदी राजद के साथ थी तब वहां नीतीश अधिक सहज थे। क्योंकि तेजस्वी ने चाचादृभतीजा की स्थिति बनाई हुई थी। ध सम्राट ऐसा नहीं कर सकते। क्योंकि यह उनके स्वभाव में ही नहीं है। ऐसे में नीतीश कुमार से उनकी कितनी और किस स्तर पर पटरी बैठती हैॅ यह समय बताएगा। यह भी है कि नीतीश और सम्राट का सामाजिक आधार एक ही है। दोनों के साथ होने के असर को लालू प्रसाद चाह कर भी बहुत कमजोर नहीं कर सकतेॅ लेकिन सम्राट की मुश्किलें भाजपा के भीतर से उभर सकती हैं। उनकी अयोग्यता यह है कि वह संघ से जुड़े कभी नहीं रहे हैं। उनका राजनीतिक प्रशिक्षण समाजवादी घराने में हुआ है। निश्चित तौर पर वह इस मामले में नीतीश और लालू से जूनियर हैॅ लेकिन जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है उनका सामना तेजस्वी से होना है और इस नजरिये से वह उपयुक्त दिखते हैं। ध इस बीच उन्होंने कुछ अनुभव भी हासिल किया है और स्वीकार्यता भीॅ लेकिन भाजपा के संघी नेता कुपित हैं कि पार्टी में बाहरी लोगों का महाव अधिक होता जा रहा है। वहां हिन्दू होना ही जरूरी नहीं हैॅ संघी होना भी जरूरी है। अब हिन्दू में भी बाहरीदृभीतरी का यह संघर्ष छिड़ा तो सम्राट के लिए मुश्किलें बढ़ेंगी और ये मुश्किलें अंततः भाजपा की होंगी। उत्तर प्रदेश की तरह यदि बिहार में भाजपा की जड़ें कमजोर हुई तो केंद्र में उसका बने रहना मुश्किल होगा। बिहार की राजनीति इसलिए न केवल भाजपा के लिए बल्कि देश के लिए भी आने वाले समय में महावपूर्ण बनी रहेगीध।

सम्पादकीय

सबके लिए त्वरित न्याय की अवधारणा पर आधारित हैं नये आपराधिक कानून

भारत में आपराधिक कानूनों में परिवर्तन और सुधार एक महत्वपूर्ण विषय है, जो समाज की बदलती आवश्यकताओं और न्याय की आवश्यकता को पूरा करने के लिए समय–समय पर किया जाता है। हाल ही में, भारतीय दंड संहिता, आपराधिक प्रक्रिया संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम जैसे आपराधिक कानूनों को संसद में पारित किया गया। अब एक जुलाई 2024 से पूरे देश में यह लागू हो रहा है।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह ने संसद में कानून को पेश करते हुए कहा कि खत्म होने वाले ये तीनों कानून अंग्रेजी शासन को मजबूत करने और उसकी रक्षा करने के लिए बनाए गए थे । इनका उद्देश्य दंड देने का था, न की न्याय देने का। तीन नए कानून की आत्मा भारतीय नागरिकों को संविधान में दिए गए सभी अधिकारों की रक्षा करना, इनका उद्देश्य दंड देना नहीं बल्कि न्याय देना होगा। भारतीय आत्मा के साथ बनाए गए इन तीन कानूनों से हमारे क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम में बहुत बड़ा परिवर्तन आएगा। पुराने कानूनों में गुलामी की बू आती थी। ये तीनों पुराने कानून गुलामी की निशानियों से भरे हुए थे क्योंकि इन्हें ब्रिटेन की संसद ने पारित किया था और हमने सिर्फ इन्हें अपनाया था। इन कानूनों में पार्लियामेंट ऑफ यूनाइटेड किंगडम, प्रोविंशियल एक्ट, नोटिफिकेशन बाई द क्राउन रिप्रिजेन्टेटिव, लंदन गैजेट, ज्यूरी और बैरिस्टर, लाहौर गवर्नमेंट, कॉमनवेल्थ के प्रस्ताव, यूनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड पार्लियामेंट का जिक्र है। इन कानूनों में हर मैजेस्टी और बाइ द प्रिवी काउंसिल के रेफरेंस दिए गए हैं, कॉपीज एंड एक्सट्रैक्ट्स कंटेंट इन द लंदन गैजेट के आधार पर इन कानूनों को बनाया गया, पजेशन ऑफ द ब्रिटिश क्राउन, कोर्ट ऑफ जस्टिस इन इंग्लैंड और हर मैजेस्टी डॉमिनियन्स का भी जिक्र इन कानूनों में कई स्थानों पर है। अच्छी बात यह कि गुलामी की निशानियों को पूरी तरह मिटा दिया गया है। जिसके तहत 475 जगह गुलामी की निशानियों को समाप्त कर दिया गया है। हमारे क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम में बहुत समय लगता है, कई बार न्याय इतनी देर से मिलता है कि न्याय का कोई मतलब ही नहीं रह जाता है, लोगों की श्रद्धा उठ जाती है और अदालत में जाने से डरते हैं। इन कानूनों को बनाने के पीछे बहुत लंबी प्रक्रिया रही है। इन कानूनों को आज के समय के अनुरूप बनाने में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अगस्त, 2019 में सर्वोच्च न्यायालय के सभी न्यायाधीशों, देश के सभी उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों और देश के सभी कानून विश्वविद्यालयों को पत्र लिखे थे। वर्ष 2020 में सभी, महामहिम राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों और सांसदों एवं संघ–शासित प्रदेशों के महामहिम प्रशासकों को पत्र लिखे गए। इसके बाद व्यापक परामर्श के बाद ये प्रक्रिया कानून बनने जा रही है। इसके लिए 18 राज्यों, 6 संघशासित प्रदेशों, सुप्रीम कोर्ट, 16 हाई कोर्ट, 5 न्यायिक अकादमी, 22 विधि विश्वविद्यालय, 142 सांसद, लगभग 270 विधायकों और जनता ने इन नए कानूनों पर अपने सुझाव दिए हैं। यह प्रक्रिया सरल नहीं थी, काफी मेहनत की गई बीते 4 सालों में। खूब विचार विमर्श किया गया है। इस संदर्भ में हुई 158 बैठकों में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह उपस्थित रहे हैं। इन कानूनों में क्या बदलाव हुआ है, इस पर केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने बताया कि आज तक आतंकवाद से परिचित सभी थे लेकिन आतंकवाद की परिभाषा, व्याख्या नहीं थी। अब ऐसा नहीं रहेगा। अब अलगाव, सशस्त्र विद्रोह, विध्वंसक गतिविधियां, अलगाववाद, भारत की एकता, संप्रभुता और अखंडता को चुनौती देने जैसे अपराधों की पहली बार इस कानून में व्याख्या की गई है। इससे जुड़ी संपत्तियों को जब्त करने का अधिकार भी दिया गया है। जांचकर्ता पुलिस अधिकारी के संज्ञान पर कोर्ट इसका आदेश देगा। गौरतलब है कि अनुपस्थिति में ट्रायल के बारे में केंद्र सरकार ने एक ऐतिहासिक फैसला किया है। सेशंस कोर्ट के जज द्वारा प्रक्रिया के बाद भगोड़ा घोषित किए गए व्यक्ति की अनुपस्थिति में ट्रायल होगा और उसे सजा भी सुनाई जाएगी, चाहे वो दुनिया में कहीं भी छिपा हो। उसे सजा के खिलाफ अपील करने के लिए भारतीय कानून और अदालत की शरण में आना होगा। अभी तक देखा गया है कि देश भर के पुलिस स्टेशनों में बड़ी संख्या में केस संपत्तियां पड़ी रहती हैं। अब इस ओर भी तेजी लाई जाएगी। यानी अब इनकी वीडियोग्राफी करके सत्यापित प्रति कोर्ट में जमा करके इनका निपटारा किया जा सकेगा। इन कानूनों में अत्याधुनिकतम तकनीकों को समाहित किया गया है। दस्तावेजों की परिभाषा का विस्तार कर इलेक्ट्रॉनिक या डिजिटल रिकॉर्ड्स, ई–मेल, सर्वर लॉग्स, कम्प्यूटर, स्मार्ट फोन, लैपटॉप्स, एसएमएस, वेबसाइट, लोकेशनल साक्ष्य, डिवाइस पर उपलब्ध मेल और मैसेजेस को कानूनी वैधता दी गई है, जिनसे अदालतों में लगने वाले कागजों के अंबार से मुक्ति मिलेगी। इस कानून को डिजिटलाइज किया गया है, यानी एफआईआर से केस डायरी, केस डायरी से चार्जशीट और चार्जशीट से जजमेंट तक की सारी प्रक्रिया को डिजिटलाइज करने का प्रावधान इस कानून में किया गया है। अभी सिर्फ आरोपी की पेशी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से हो सकती है, लेकिन अब पूरा ट्रायल, क्रॉस क्वेश्चनिंग (ष्ह्मशह्यह्य ह्न्वद्गह्यह्लद्बशठ्ठद्बठ्ठद्द) सहित, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से संभव होगी। शिकायतकर्ता और गवाहों का परीक्षण, जांच–पड़ताल और मुकदमे में साक्ष्यों की रिकॉर्डिंग और उच्च न्यायालय के मुकद्दमे और पूरी अपीलीय कार्यवाही भी अब डिजिटली संभव होगी। सर्च और जब्ती के समय वीडियोग्राफी को अनिवार्य कर दिया है, जो केस का हिस्सा होगी और इससे निर्दोष नागरिकों को फंसाया नहीं जा सकेगा। पुलिस द्वारा ऐसी रिकॉर्डिंग के बिना कोई भी चार्जशीट वैध नहीं होगी।आजादी के 75 सालों के बाद भी दोष सिद्धि का प्रमाण बहुत कम है। यही कारण है कि मोदी सरकार ने फॉरेंसिक साइंस को बढ़ावा देने का काम किया है। तीन साल के बाद हर साल 33 हजार फॉरेंसिक साइंस एक्सपर्ट्स और साइंटिस्ट्स देश को मिलेंगे। साथ ही श्री अमित शाह ने लक्ष्य रखा है कि दोष सिद्धि के प्रमाण को 90 प्रतिशत से ऊपर लेकर जाना है। इसके लिए एक महत्वपूर्ण प्रावधान किया गया है कि 7 वर्ष या इससे अधिक सजा वाले अपराधों के क्राइम सीन पर फॉरेंसिक टीम की विजिट को अनिवार्य किया जा रहा है।

पैकेज देने से पहले कुछ नए य किये जाएं जो सर्वस्वीकार्य हों

कमलेश पांडे ।

पिछड़ेपन, ज्यादा आदिवासी आबादी और कम राजस्व का हवाला देकर उपरोक्त राज्य लंबे समय से अपने लिए विशेष दर्जे की मांग करते आये हैं। हालांकि 14वां वित्त आयोग केंद्र सरकार को काफी पहले ही यह सलाह दे चुका है कि इस कैटिगरी में अब किसी राज्य को नहीं जोड़ा जाए।

अपने देश में कई राज्य ऐसे हैं जो स्पेशल स्टेटस या स्पेशल पैकेज की मांग केंद्र सरकार से करते आये हैं, लेकिन यह दर्जा या सुविधा इन्हें कबतक मिलेगी, निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता है। हां, इतना जरूर है कि बिहार, आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और तेलंगाना जैसे राज्य समय–समय पर अपने लिए विशेष दर्जे या विशेष पैकेज की मांग करते रहे हैं, जो स्वाभाविक भी है।

बताया जाता है कि पिछड़ेपन, ज्यादा आदिवासी आबादी और कम राजस्व का हवाला देकर उपरोक्त राज्य लंबे समय से अपने लिए विशेष दर्जे (स्पेशल स्टेटस) की मांग करते आये हैं। हालांकि 14वां वित्त आयोग केंद्र सरकार को काफी पहले ही यह सलाह दे चुका है कि इस कैटिगरी में अब किसी राज्य को नहीं जोड़ा जाए। यही वजह है कि कुछ राज्यों ने अब अपने सुर बदल लिए हैं और विशेष दर्जे की जगह विशेष पैकेज की मांग करने लगे हैं।समझा जाता है कि भले ही पिछली कार्यकाल तक बीजेपी की नरेंद्र मोदी सरकार 14वें वित्त आयोग का हवाला देकर इस मांग को ठुकरा रही थी, लेकिन अब वह आंध्र प्रदेश में सत्तारूढ़ टीडीपी और बिहार में काबिज जेडीयू के समर्थन पर टिकी हुई है, इसलिए अब मोदी सरकार भी अपने पुराने रूख पर कायम रह पाएगी, ऐसा मुझे नहीं लगता। हां, इस मांग में इतना बदलाव जरूर दृष्टिगोचर हो रहा है कि अब बिहार और आंध्रप्रदेश जैसे राज्य विशेष दर्जे की जगह विशेष पैकेज की मांग करने लगे हैं, जिससे इंकार करने की कोई वजह भी किसी नहीं दिखती।दरअसल, विशेष राज्य का दर्जा देने का किस्सा आजादी के बाद के दूसरे दशक में शुरू हुआ, जब केंद्र सरकार ने महसूस किया कि विकास की दौड़ में पिछड़ रहे कुछ राज्यों को सहारा देना होगा। इसके दृष्टिगत योजना आयोग के उपाध्यक्ष डी आर गाडगिल के फार्मूले पर विशेष राज्य का दर्जा यानी स्पेशल कैटिगरी स्टेटस की व्यवस्था की गई। जिसमें पहाड़ी राज्यों, ज्यादा आदिवासी आबादी वाले राज्यों, सीमावर्ती राज्यों, आर्थिक और बुनियादी ढांचे के लिहाज से पिछड़े राज्यों और ऐसे राज्यों पर विचार किया गया, जो अपने लिए पर्याप्त राजस्व की व्यवस्था न कर पाते हों। इस दृष्टिकोण से प्रारंभ में जम्मू–कश्मीर, असम और नागालैंड को दर्जा मिला। यद्यपि बाद में इसकी सूची बढ़ती गई और अब उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और अरुणाचल प्रदेश सहित 11 राज्य इस सूची में शामिल किए जा चुके हैं। बताया जाता है कि विशेष राज्य का दर्जा प्राप्त करने वाले राज्यों को केंद्र सरकार से ज्यादा वित्तीय मदद मिलती है। ऐसे राज्यों को केंद्रीय योजनाओं के लिए 90 प्रतिशत फंड केंद्र सरकार देती है और 10 प्रतिशत फंड की राज्य सरकार को देनी होती है, यानी 90रू10 का अनुपात। जबकि दूसरे राज्यों में यह अनुपात 60रू40 का होता है। वहीं, विशेष दर्जे वाले राज्यों को कुछ योजनाओं में अलग से भी मदद मिलती है। यही वजह है कि 14वें वित्त आयोग (फाइनैंस कमीशन) ने विशेष राज्य का दर्जा वाली सूची में अब और अधिक राज्यों को न जोड़ने की सलाह दी थी। हालांकि अब एनडीए गठबंधन के दबाव के मद्देनजर मोदी सरकार स्पेशल पैकेज के जरिए बीच का रास्ता निकाल सकती है। इसकी वजह ये है कि अब बिहार की जेडीयू ने अपने प्रस्ताव में स्पेशल स्टेटस या स्पेशल पैकेज की बात कर इसका संकेत दे दिया है। वहीं, आंध्रप्रदेश की टीडीपी भी स्पेशल स्टेटस के बजाय स्पेशल पैकेज पर फोकस कर रही है, क्योंकि चुनावी वायदे को पूरे करने के लिए उसे जल्द ही बड़ी रकम की जरूरत है।इधर, आर्थिक मामले के जानकारों का कहना है कि सामाजिक–आर्थिक विकास के पैमाने पर बिहार, पश्चिम बंगाल और ओडिशा की मांग जायज है। जबकि आंध्र प्रदेश पिछड़ा नहीं है। यह बात दीगर है कि आंध्रप्रदेश को सबसे ज्यादा राजस्व हैदराबाद से मिलता था और वह उसके हाथ से चला गया। इसलिए उसे विशेष राज्य का दर्जा की जरूरत है। उधर, आंध्रप्रदेश के विभाजन से बना तेलंगाना राज्य को मदद की जरूरत ज्यादा है।

वहीं, बिहार के बारे में दलील दी जा रही है कि पिछले 3 दशकों से वहां का गवर्नेंस ठीक नहीं है। इसलिए जब तक गवर्नेंस ठीक नहीं होगा, विशेष राज्य का दर्जा या विशेष पैकेज देने से बात नहीं बनने वाली है। इसलिए केंद्र सरकार भी पशोपेश में है। वह इस बात को समझ रही है कि यदि इन राज्यों को विशेष पैकेज के नाम पर मदद दे दी जाए तो उस पर अधिक वित्तीय बोझ नहीं आएगा, क्योंकि टैक्स रेवेन्यू रिकॉर्ड तेज रफ्तार से बढ़ रहा है। वैसे भी कोई राज्य पिछड़ रहा हो तो उसकी मदद की जिम्मेदारी केंद्र की है, क्योंकि वह सबका अभिभावक है। हां, इतना जरूर है कि 21वीं सदी के अनुरूप इस आशय का वह एक नया मानक बनाये और उसी के तहत जरूरतमंद राज्यों की मदद करे। अन्यथा अन्य राज्यों में भी यह मांग उठेगी, जिससे केंद्र सरकार की परेशानी बढ़ेगी। ऐसा इसलिए कि केंद्र में गठबंधन सरकार का युग वापस लौट चुका है और अब हर राज्य अपने संसदीय संख्याबल के हिसाब से केंद्र की बांहें मरोड़ने की तैयारी करते हुए प्रतीत हो रहे हैं, जिससे सचेत रहने की जरूरत है।

भारत ने किया वृक्षों का नमन

Okतावरण में तनाव है। पृथ्वी का ताप बढ़ रहा है। सभी जीव व्यथित हैं। प्रकृति में अनेक जीव हैं। सब शुद्ध प्राण वायु पर निर्भर हैं। प्राण वायु का मुख्य स्रोत वनस्पतियां हैं। भारतीय राष्ट्रजीवन में वनस्पतियां, औषधियां देवता की श्रेणी में हैं। पीपल, बरगद, नीम, बेल आदि वृक्षों की उपासना होती है। गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बताया कि, ''पीपल का वृक्ष मैं ही हूँ।'' भारत की तरह दुनिया के किसी भी अन्य देश, संस्कृति व सभ्यता में वनस्पतियों और वृक्षों को नमस्कार नहीं किया गया। वनस्पतियों के कारण पर्यावरण शुद्ध रहता है। दुर्भाग्य से सारी दुनिया में वन क्षेत्र घटा है। भूमण्डलीय ताप बढ़ा है। वर्षा चक्र गड़बड़ाया है। यहाँ भारत में वैदिक काल से लेकर पुराण और महाभारत में वनस्पतियों और वृक्षों को विशेष आदर के साथ याद किया गया है। उन्हें देवता जाना गया है। हिन्दू मन वृक्ष वनस्पति की कटान पर आहत होता है। विकास का आधुनिक माडल वनस्पति प्रेमी नहीं है। विश्व को वृक्ष वनस्पति प्रेमी विकास तंत्र की आवश्यकता है।

वृक्ष बोलते हैं संभवतः। सुनते अवश्य हैं। उनसे वार्ता करना आनंद का अनुभव है। एक शोध के अनुसार जिस पौधे से प्रेमपूर्ण वार्ता होती है, वह जल्दी बढ़ता है। पौधों को धयान और प्रेम से देखने वाले प्रसन्न रहते हैं। पेड़ पौधे आपस में भी बातें करते होंगे। वे वृक्ष प्रेमी को देखते ही प्रसन्न हो जाते हैं। वे कुल्हाड़ी लेकर आने वाले 'पेड़ कटवा' को देखकर सहम जाते हैं। गहन उदास होते हैं। वृक्ष वनस्पति हमारे परिजन हैं। इन्हें खिलने का पूरा अवसर मिलना चाहिए। बीज से वृक्ष, वृक्ष से फूल और फूलों से बीज का वर्तुल पूरा होना चाहिए। वनस्पतियां ढेर सारी हैं लेकिन सोम वैदिक पूर्वजों की सर्वाधिक प्रिय वनस्पति है। ऋषियों ने सोम को बहुत बड़ा देवता बताया है। ऋग्वेद के नवें मण्डल में 144 सूक्त हैं। इन सभी सूक्तों के देवता सोम हैं। ऋग्वेद में सोम का अनेक प्रसंगों में उल्लेख है। सोम को सारी वनस्पतियों का राजा भी कहा गया। (9.114.2) सोम वनस्पति से रस निकाला जाता था। वैदिक अभिजन सोम को स्फूर्ति प्रदान करने वाला पेय मानते थे। सोमरस का प्रयोग पीने के लिए तो किया ही जाता था, यज्ञ में इस रस की आहुतियां भी दी जाती थीं। ऋग्वेद के अनुसार सोम देवताओं को प्रिय भी था। पूर्वज मानते थे कि सोमरस पीने से मनुष्यों को अमृत्व की प्राप्ति होती है। आर्यों की ईरानी शाखा में 'होम' वनस्पति की चर्चा है। पारसियों के धर्मग्रन्थ अवेस्ता में सोम को होम लिखा गया है। पूर्वज सैकड़ों वर्ष पहले वनस्पतियों के गुण धर्म से परिचित थे। ऋग्वेद में औषधि विज्ञान सम्बंधी एक सूक्त के देवता औषधि हैं। ऋषि कहते हैं, ''हे औषधियों आपके सहस्त्रों नाम हैं। सहस्त्रों अंकुर हैं। आप हमें आरोग्य दें।'' वे औषधियों की रोग निवारक शक्ति की तुलना घोड़े की शक्ति से करते हैं। स्तुति है, ''आप गतिशील घोड़े की तरह रोगों को तेजी से दूर करती हैं। आप हमें सुख दें।'' खास बात यह है कि वे औषधियों को माता बताते हैं। कहते हैं कि, ''आप माता की तरह पालन गुणों से युक्त हैं। हमारी प्रार्थना सुनें।'' वनस्पतियां औषधियां माता हैं। ऋषि कहते हैं कि, ''कुछ औषधियां निकट हैं। कुछ दूरी पर हैं।'' कवि को विश्वास है कि, ''औषधियां उनकी प्रार्थना सुनती हैं।'' अथर्ववेद में भी औषधियों वनस्पतियों को देवता कहा गया है। अथर्ववेद का एक पूरा सूक्त औषधियों पर ही है। ऋषि कहते हैं कि, ''कुछ औषधियां लाल रंग की हैं। कुछ श्वेत हैं। कुछ भूरी हैं। कुछ काली हैं। कुछ कई रंगों वाली हैं। पृथ्वी माता हैं। आकाश पिता हैं। औषधियां भी इसी परिवार की हैं। ऋषि कहते हैं कि, ''औषधियों के पिता आकाश हैं।'' यहाँ औषधियां वनस्पतियां माता पृथ्वी व पिता आकाश की परिजन हैं।

रोगों के कारण होते हैं। कुछ रोग मनुष्य की अपनी गलती से पैदा होते हैं। कहते हैं कि, ''जल और औषधियां हमारे पाप से उत्पन्न यक्षमा रोग दूर करें।'' कुछ औषधियां सर्वसुलभ हैं। कुछ औषधियां खरीदने से उपलब्ध होती हैं। कहते हैं, ''क्रयरहित औषधियां मनुष्यों, अश्वों को स्वस्थ रखें।'' वनस्पतियां मनुष्य को स्वस्थ रखती हैं। आम महुआ आमला रसपूर्ण है। आमला युवा बने रहने का रसायन है। औषधियां, वनस्पतियां अनेक प्रकार की हैं। कहते हैं, ''गुच्छों वाली, एक कोंपल वाली और अनेक शाखाओं वाली औषधियों का आवाहन करते हैं।'' प्रत्येक जीव में रोगों से लड़ने की क्षमता होती है। इसे रोग निरोधक क्षमता कहते हैं। अथर्ववेद में स्थान के आधार पर भी औषधियों के भेद किए गए हैं। एक मन्त्र (8.7.17) में कहते हैं, ''अंगिरा द्वारा विवेचित औषधियां पर्वतीय क्षेत्रों व समतल मैदानों में उगती हैं। वे हृदय को सुख शान्ति देती हैं। कुछ औषधियों को अमर भी बताया गया है। औषधियां जीव रक्षक हैं। वैदिक काल के समाज को पिछड़ा बताने वाले नोट करें। वैदिक काल के मनीषी ज्वर की आवृत्ति से परिचित थे। ऋषि कहते हैं कि, ''कुछ ज्वर एक दिन छोड़ कर आते हैं, कुछ 2 दिन बाद और कुछ बिना निश्चित समय के ही आते हैं। ऋषि की इच्छा है कि, ''ऐसे ज्वर आलसी लोगों के पास चले जाएं।'' वैदिक समाज में कर्म प्रधानता है। आलसी की भर्त्सना है। ज्वर और भी कई प्रकार के होते हैं। कहते हैं, ''तपाने वाले, हिलाने वाले, भड़काने वाले, ठण्ड के साथ आने वाले और दुर्बल करने वाले ज्वर को हमारा नमस्कार है।'' यहाँ नमस्कार ज्वर को दूर भगाने के लिए किया गया है। ज्वर अकेला नहीं होता। इसका अपना परिवार है। अथर्ववेद में कहते हैं, ''ज्वर अपने भाई कफ के साथ आता है। खांसी उसकी बहन है। वह बहन के साथ आता है। यक्षमा इसका भतीजा है।'' बीमारियों की व्याख्या रिश्तों में करना मजेदार है। एक प्रतिष्ठित वनस्पति है गुग्गल। आधुनिक आयुर्विज्ञान इसे रोग निरोधक क्षमता बढ़ाने वाली औषधि मानते हैं। बताते हैं कि गुग्गल के प्रयोगकर्ताओं के पास कोई रोग नहीं आते। एक मन्त्र में पील व जटामांसी को महत्वपूर्ण औषधि बताया गया है। औषधियां प्राणरक्षक हैं। प्राण से ही औषधियां लहराती हैं। मेघों का वर्षा करना प्राण का चमत्कार है। एक सुन्दर सूक्त में कहते हैं कि प्राण औषधियों के समक्ष गर्जन करते हैं। औषधियां शक्तिशाली होती हैं। प्राण औषधियों पर जल वर्षा करता है। औषधियां प्रसन्न होती हैं। प्राण ही रोग व मृत्यु के कारण हैं। कहते हैं कि, ''तब अथर्वा द्वारा रोपित अंगिरा वंशजों व मनुष्यों द्वारा निर्मित औषधियां प्रकट होती हैं।'' एक वनस्पति पीपली है। अथर्वा के रचे सूक्त में पीपली स्वयं ही बोलती है, ''जिस प्राणी द्वारा हमारा सेवन किया जाएगा वह कभी नष्ट नहीं होगा।''वनस्पतियों के अपने आकर्षक रंग रूप हैं। तमाम वनस्पतियां रोगोपचार के लिए औषधियां भी हैं। वनस्पतियां औषधियां वैदिक काल के पहले से ही प्रणम्य हैं। अथर्ववेद के एक सुन्दर सूक्त (1.34) में ऋषि कवि अथर्वा एक लता देखते हैं। अथर्वा कहते हैं, ''मधुक मधुरता के साथ पैदा हुई है। हम इसे मधुरता के साथ खोदते हैं–मधुजाता मधूनां त्वां खनामसि।'' कहते हैं, ''हे लता आप मधुर हैं। हमें भी मधुर बनाएं।'' आगे कहते हैं, ''हमारी जिव्हा का अग्रभाग मधुर हो। मूल भाग मधुर हो। हमारा घर से बाहर जाना मधुर हो। दूर जाना मधुर हो। वाणी मधुर हो। हम मधुरता से भी ज्यादा मधुर हो जाएं–मधुरस्मि माधुतरो मदुधान्ममधुत्तमत्तरः।'' वैदिक ऋषि कवि अस्तित्व को नमस्कार करते हैं।

संक्षिप्त खबरें

डाक्टर्स डे पर शारदा नारायण हास्पिटल में लगा नि:शुल्क शिविर, 96 की हुई जांच

मऊ (एजेंसी)। चिकित्सा की अत्याधुनिक प्रणालियों के माध्यम से पूर्वांचल के नगरीय से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक आमजन की सेवा करने के ध्येय से कार्य किया जा रहा है। ग्रामीण गरीबों से लेकर समाज के अशक्त लोगों को सर्वोत्तम चिकित्सा सेवाओं का लाभ देना ही जीवन का लक्ष्य है। शारदा नारायण हास्पिटल के माध्यम से जनपद सहित आजमगढ़ मंडल के सभी क्षेत्रों में सेवार्थ भाव से कार्य किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्र में अधिकांश गरीब लोगों में व्यापक रुप से कार्य किए जाने की आवश्यकता है। इस दिशा में वेलफेयर ट्रस्ट द्वारा निरंतर प्रयास किया जाता रहेगा। डॉ संजय सिंह ने यह उदगार सोमवार को डाक्टर्स डे पर शारदा नारायण हास्पिटल में आयोजित नि:शुल्क चिकित्सा शिविर में व्यक्त किया। मेडिकल डायरेक्टर डॉ सुजीत सिंह ने ग्रामीण क्षेत्रों में किए जा रहे कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए आगामी वर्ष के कार्यों की रुपरेखा रखा। इस दौरान शिविर में 96 लोगों के ब्लड प्रेशर, शुगर, लिपिड प्रोफाइल व पल्स की नि:शुल्क जांचकर दवाओं का वितरण किया गया।

घोसी तहसील परिसर की कैंटीन और दुकान की हुई नीलामी

घोसी, मऊ (एजेंसी)। तहसील परिसर में स्थित दो दुकानों एवं कैंटीन की सोमवार को नीलामी हुई। जिसमें दो दुकानों की अधिकतम बोली एक लाख इग्यारह हजार विमलकृष्ण राय की रही और कैंटीन की अधिकतम बोली एक लाख साठ हजार सूरज गोंड की रही। ज्ञात हो इस नीलामी द्वारा आवंटन 31 मार्च 2025 तक किया गया। इस नीलामी प्रक्रिया में कैंटीन आवंटन में कुल चार लोग भाग लिए एवं दुकान की नीलामी में कुल पांच लोग भाग लिए। नीलामी प्रक्रिया तहसीलदार धर्मेन्द्र कुमार पांडेय की देखरेख में संपन्न हुआ।

डाक्टर्स डे पर इनर व्हील क्लब ने चिकित्सकों का किया सम्मान

मऊ (एजेंसी)। हम जिंदगी और मौत की लड़ाई हारने लगते तो हमें जिताने की कोशिश में सिर्फ और सिर्फ डॉक्टर लगे रहते हैं अनवरत 24 घंटे चलते ऐसे में सोमवार को पूरा देश डाक्टर्स डे मना रहा। इस विशेष दिन को और विशेष बनाने के लिए इनर व्हील क्लब के तत्वावधान मे जिला अस्पताल में वरिष्ठ चिकित्साधिकारी एवं अन्य डाक्टर्स को प्रशस्ति पत्र व पौधा आदि दे कर सम्मानित कर उनके सेवा के लिए आभार प्रकट किया साथ में आज चार्टेड डे के उपलक्ष्य मे अकाउंट को लेखा जोखा और कैसे अपने पूरे वर्ष भर के बजट को सुचारू रूप से रखा जा सकता है। इस अवसर पर जिले के प्रसिद्ध चार्टर्ड एकाउंटेंट विजय कुमार अग्रवाल को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में नवनिर्वाचित अध्यक्ष मीना लाल उपाध्याय, विद्या चौहान, सीक्रेटरी ज्योति सिंह, ट्रेज़रार डॉ कंचन लता आजाद वरिष्ठ सदस्य मीना अग्रवाल एवं सुजाता सिंह उपस्थित रहीं।

तीन दिन से जला ट्रांसफार्मर, 110 घरो में बिजली गुल

घोसी, मऊ (एजेंसी)। विकास खंड फतहपुर मंडाव ब्लाक क्षेत्र के विद्युत उपकेंद्र मोलनापुर से बिजली सप्लाई प्रतिदिन होती है लेकिन वही विद्युत उपकेंद्र क्षेत्र के दुबारी डिहवार स्थान पुरवा में 25 केवीए ट्रांसफार्मर 29 जून से जला हुआ है और इस भीषण गर्मी में 110 घर के उपभोक्ताओं बिजली नहीं मिलने से आफत में जिंदगी बिताना पड़ रहा है और डिहवार स्थान के उपभोक्ताओं ने 1912 कस्टमर केयर आईडी पर सूचना भी दिया है। आपको बताएं कि उपभोक्ताओं का आरोप है कि एक माह से यह ट्रांसफार्मर का प्रतिदिन फियुज उड़ जाता है और ट्रांसफार्मर की खूंटी जल जाती है और बार बार लाइन मैन को बुलाना पड़ता है और उसके बाद तीन दिन पूर्व से जल गया है और इस भीषण गर्मी में पूरा डिहवार स्थान अंधेरे में पड़ा है और इस भीषण गर्मी में जीना मुश्किल हो गया है और मोबाइल तक सभी उपभोक्ताओं का डीस चार्ज हो गया है इस संबंध में उपभोक्ताओं में सुनील देवेन्द्र राजकुमार शिवमंगल जयेंद्र विजय मनीष घुरा टार्जन प्रसाद आदि इस संबंध में जेई अजीत श्रीवास्तव उपकेंद्र मोलनापुर का कहना है कि ठीक है इसको हम देख लेंगे।

पहली बरसात में नगर मुख्यमार्ग पर जल जमाव, नालों की सफाई की खुली पोल

चिरैयाकोट, मऊ (एजेंसी)। नगर पंचायत क्षेत्र के खरिहानी त्रिमुहानी से लेकर थाना परिसर के सामने आजमगढ़ गाजीपुर मुख्य मार्ग पर जल जमाव हो जाने से से यातायात बधित रहा जिससे नगर प्रशासन द्वारा नालों की हुई साफ सफाई का पोल खुल गया, चिरैयाकोट नगर पंचायत द्वारा आजमगढ़ मुख्य मार्ग के खरिहानी तिराहा से लेकर चंद्रा कटरा तक घंटों तक जल जाम रहा वही बरसात का पानी थाना परिसर में फैलकर भर गया जिसके कारण थाने परिसर में आने जाने वाले लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। बता दे कि नगर पंचायत क्षेत्र के खरिहानी त्रिमुहानी से लेकर चौक तक आजमगढ़ मुख्य मार्ग लेकर चौक तक जल जमाव हो जाने से यातायात जाम हो गया था तथा थाना परिसर में बरसात का पानी भर जाने के कारण वहां से लोगों का आना जाना में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ऐसी स्थिति में काफी लंबे समय तक मुख्य मार्ग पर जल जमाव बना रहा जिसके कारण नगर प्रशासन द्वारा की गई नालों की साफ सफाई की पोल खुल गयी है। पहली बरसात में मुख्य मार्ग जलमग्न हो जाने से जल भराव हो गया। नगर अधिशासी अधिकारी सीएल तिवारी ने बताया कि नालों की सफाई के लिए ठेकेदार साफ सफाई करने का निर्देश दिया था।

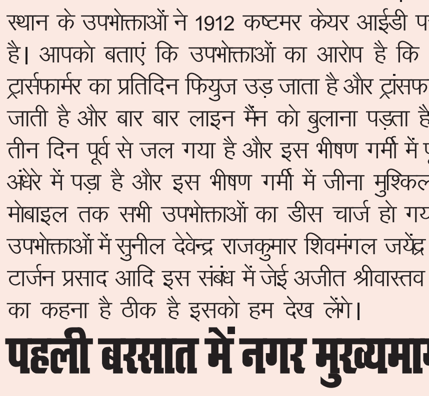

जिलाधिकारी ने अपनी मां के नाम पौधारोपण कर कहा परिवार की तरह पौधों की देखभाल

मऊ (एजेंसी)। कंपोजिट विद्यालय सुल्तानपुरा बनौरा में जिलाधिकारी प्रवीण मिश्रा ने अपनी मां उर्मिला मिश्रा के नाम पौधा लगाकर पौधारोपण अभियान का शुभारंभ किया। नगर क्षेत्र के सुल्तानपुर बनौरा स्थित कंपोजिट विद्यालय पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी संतोष कुमार उपाध्याय साथ पहुंचे जिलाधीकारी प्रवीण मिश्र ने अपनी मां के नाम एक पौधा लगाकर अभियान का शुभारंभ किया। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि हर कोई पर्यावरण संरक्षण के लिए हर कोई अपनी मां, पिता व पुत्र एवं परिवार के नाम से एक–एक पौधा जरूर लगाए। साथ ही परिवार की भावना के साथ उसका संरक्षण करें ताकि आने वाले दिनों में हम पर्यावरण को संतुलित करने में सहभागी बन सकें। कंपोजिट विद्यालय सुल्तानपुर बनौरा पर जिलाधिकारी प्रवीण मिश्र ने कक्षा चार की छात्रा प्रतिज्ञा तिवारी से अंग्रेजी में वर्ष के 12 महीनों के नाम पूछे तो उसने तुरंत बता दिया। कक्षा दो के अंश राजभर व आलोक राजभर ने पूछे गए जोड़ घटानों को श्यामपट पर तुरंत हल कर दिया। इस दौरान उन्होंने अभिभावक अनिता देवी से पूछा आप अपने बच्चे को यहां क्यों पढ़ाती हैं तो अनिता ने जवाब दिया कई प्राइवेट स्कूल घूमने के बाद हमने अपने चार बच्चों का यहां एडमिशन करवाया है, यहां की पढाई से हम संतुष्ट हैं। जिलाधीकरी ने आज पांच नए बच्चों का दाखिला करने के पश्चात उनका माल्यार्पण व तिलक लगा कर स्वागत किया तथा प्रधानाध्यापक अजय राय द्वारा लाए गए किताब व बैग बच्चों को देकर उनका स्वागत किया। इसके पश्चात उन्होंने जनपद में 200 व 400 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली प्रिया पाल को सम्मानित करने के साथ ही उसे हर प्रकार के मदद का भरोसा भी दिया।विद्यालय के रखरखाव व विद्यालय में पढ़ाई के वातावरण को देख जिलाधिकारी प्रवीण मिश्र ने प्रधानाध्यापक अजय राय के नेतृत्व में पठन–पाठन में लगे शिक्षकों की जमकर तारीफ की, कहा पूरे जनपद को ऐसे उत्कृष्ठ शिक्षकों के टीम की आवश्यकता है। इस दौरान प्राथमिक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष कृष्णानंद राय, विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष हरेंद्र प्रजापति, सभासद विनोद चौहान, रामसरीख, कुंवर राम, अनीता देवी, सरिता राय, फरहद जहां, रेहाना नसरीन, साइना खातून, कनकलता पांडेय, फर्जाना खातून, अरविंद कुमार, मंजू देवी, महेंद्र, सरफराज अहमद आदि मौजूद थे।

अनोखे भंडारे में जुटे पशु पक्षी, जमकर उड़ाया भोग, अभिभूत हुए लोग

मऊ (एजेंसी)। जिले के श्री हनुमत कृपा सेवा समिति के तत्वाधान में रविवार को वन देवी धाम में एक अनोखे भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें पशु पक्षियों को उनके रुचि के भोग परोसे गए जिसमें केला चना गुड़, मौसमी फल बिस्किट, ब्रेड शामिल किए गए थे। भंडारे में शामिल बंदर गाय कुत्ते मोर बत्तख और यहां तक की मछलियों ने भी जमकर भोग लगाया। लोग इस तरह के अनोखे भंडारे का जमकर तारीफ कर रहे थे। इंसानों के लिए आयोजित भंडारे तो बहुत देखे और सुने गए हैं लेकिन जिले में पहली बार पशु पक्षियों के लिए एक अनोखे तरीके का भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें पशु पक्षियों के रुचि के सामग्री रखे गए। जिसमें अलग–अलग तरीके के मौसम में फल, चना गुड़ बिस्कुट और ब्रेड केला शामिल थे। जिसको पशु पक्षियों ने जमकर खाया। बताते चलें कि भंडारे का आयोजन करने वाली श्री हनुमत कृपा सेवा समिति पिछले डेढ़ दशकों से हर शनिवार को जिले के अलग–अलग स्थान पर श्री सुंदर कांड पाठ का आयोजन करता है जिसमें सैकड़ो श्रद्धालु और सदस्य शामिल होते हैं। जन मानस में सनातन धर्म का अलख जगाने वाली इस समिति को जम्मू कश्मीर के एलजी मनोज सिन्हा सम्मानित भी कर चुके हैं। समिति के वरिष्ठ सदस्य चंद्रशेखर अग्रवाल ने बताया कि पिछले दिनों हम लोगों ने एक वीडियो देखा जिसे हम लोग प्रेरित हुए। जब हम लोग कोई भी धार्मिक अनुष्ठान करते हैं तो उसमें भंडारा करते हुए अपनी क्षमता के अनुसार 100 से 5000 लोगों को भोजन कराते हैं। हम लोग जिनकी पूजा करते हैं उनके परिवार के लिए आज भंडारा किया गया है जिसमें बहुत आनंद आया। भंडारे में हनुमान जी जामवंत जी अंगद जी समेत गौ माता को भी भंडारा परोसा गया। समिति के सदस्य रवि बरनवाल ने बताया कि जिले में इस तरह का सामूहिक भंडारा पहली बार हुआ है और हम सबको और लोगों को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए और इस तरह का आयोजन होने चाहिए इससे जीव जंतुओं के प्रति और पर्यावरण के प्रति जागरूकता बनेगी। हम लोग हनुमान के भक्त हैं और उनकी प्रेरणा से सब कार्य होते हैं इस तरह का पहला आयोजन था और काफी कुछ सीखने को मिला है। आगे भी इस तरह का आयोजन होते रहेंगे।

राजेश देव अध्यक्ष, फैजान अंसारी बने महामंत्री

सोनभद्र (एजेंसी)। दी सोनभद्र टैक्स बार एसोसिएशन की नई कार्यकारणी सत्र 2024–2026 का चुनाव बभनौली स्थित एक मांगलिक भवन में सोमवार को एल्डर कमेटी की देख रेख में संपन्न हुआ। जिसमे राजेश देव पांडेय को अध्यक्ष एवम फैजान अंसारी को महामंत्री चुना गया।

इसके अलावा उपाध्यक्ष सुरेंद्र केशरी, कोषाध्यक्ष विजय कुमार जायसवाल, सहसचिव प्रदीप धर दिवेदी, संगठन सचिव विमल कुमार तिवारी, लेखा परीक्षक पंकज शेखर एवम प्रवक्ता राकेश पति त्रिपाठी को सर्व सम्मति से चुना गया। कार्यकारणी पद पर जगदीश्वर जायसवाल, अशोक कुमार श्रीवास्तव, राकेश शरण मिश्र, मिथिलेश कुमार सिंह, उमापति पांडेय, पवन कुमार शर्मा, श्री प्रकाश यादव, जनार्दन पांडेय एवम राकेश कुमार श्रीवास्तव का चुनाव किया गया।

चुनाव की समस्त कार्यवाही एल्डर कमेटी चेयरमैन पीएन सोनी एवम एल्डर कमेटी सदस्य अशोक कुमार श्रीवास्तव, राकेश शरण मिश्र एवम कृष्ण कांत तिवारी की निगरानी में कराई गई। एल्डर कमेटी चेयरमैन पीएन सोनी ने सभी पदों पर चुने गए पदाधिकारियों की घोषणा की। जिसका करतल ध्वनि से उपस्थित बार के सदस्य अधिवक्ताओं ने समर्थन किया।

क्षेत्राधिकारी ने नए कानून की दी जानकारी

करमाध्सोनभद्र (एजेंसी)। स्थानीय थाना परिसर मे सोमवार को क्षेत्राधिकारी व थाना प्रभारी राजकुमार सिंह ने थाना क्षेत्र के ग्राम प्रधानों, क्षेत्र पंचायत सदस्यों, संभ्रांत व्यक्तियों की बैठक बुला, केंद्र सरकार द्वारा पारित नए कानून की जानकारी देते हुए कहा कि संसद द्वारा निर्मित नए कानून रविवार की मध्य रात्रि से प्रभावी रहे, 30 जून तक घटित घटनाओं के संबंधित मामले पूर्व कानून, धाराओं के तहत दर्ज हुए जबकि एक जुलाई से नए कानून के तहत दर्ज किए जायेंगे, इस बदलाव से आम आदमी को भ्रम न हो को ध्यान मे रख डी जी पी के निर्देश के अनुपालन में जानकारी दी जा रही है, उन्होंने बताया कि भारतीय साक्ष्य अधिनियम, भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता नामक तीन नए कानून पहली जुलाई से प्रभावी किये जायेंगे।इस बैठक मे प्रधान, क्षेत्र पंचायत, संभ्रान्त व पत्रकारगण मौजूद रहे।

म्योरपुर से बाबाधाम के लिये 28 जुलाई को रवाना होगी कावरियों का जत्था

म्योरपुरध्सोमभद्र (एजेंसी)। म्योरपुर स्थानीय करबा स्थित बिड़ला विद्या मन्दिर इण्टर कालेज परिसर में सोमवार को श्रवण मास में बाबाधाम जाने के लिये ग्रामीणों ने बैठक कर विचार विमर्श किया

उक्त गांव निवासी श्यामू बम, पंकज बम, अमित बम,राकेश सोनी बम, होलीराल पासवान बम, अभिषेक बम ने कहा कि हर साल के भांति इस वर्ष भी सावन माह में कावरियों का जत्था बाबा धाम जाएगा बैठक में बाबाधाम जाने की तिथि 28 जुलाई को रखी गयी जिसे पूरे गांव ने सर्व सम्मति से पास किया कावरिया बन्धुओ ने कहा कि 22 जुलाई से सावन चड़ रहा है 28 जुलाई दिन रविवार को बाबाधाम जाया जाएगा सुल्तानगंज से हम सभी कावरिया बम सोमवारी जल उठा 120 किलोमीटर की यात्रा दिन दिन में तय कर पैदल ही बाबा के नगरी में पहुच बाबा बैधनाथ को अपना अपना जल अर्पण करेंगे।

मरीजो को फल बांटते व चित्र पर रोली चंदन लगा जन्मदिन मनाते सपाई

चित्रकूट(आरएनएस)। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के जन्मदिन के अवसर पर जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव एवं पूर्व विधायक वीर सिंह पटेल की अगुवाई में सपाईयों ने जिला चिकित्सालय पहुंचकर मरीजों के बीच फल, बिस्किट बांटें गए।जिला कार्यालय में उनके चित्र पर हल्दी चन्दन का तिलक लगा दीर्घायु की कामना की गई। इसके उपरांत 51 किग्रा का केक काटकर जन्मोत्सव कार्यक्रम की शुरुवात की गई। सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष जागेश्वर यादव व रामसनेही निषाद ने अपने गीतों के माध्यम से बधाई दी। जिलाध्यक्ष ने कहा की राष्ट्रीय अध्यक्ष का जन्मोत्सव पीडीए पेड़ लगाओ पखवाड़ा के रूप में मनाया जायेगा। प्रत्येक कार्यकर्ता अपने गांव में पौधरोपण कर वृक्ष जरूर तैयार करें। बस स्टैंड में पार्टी नेता सूरज सिंह पटेल ने लोगों को हलवा बांटकर अखिलेश के दीर्घायु होंने की कामना की। इस अवसर पर उपाध्यक्ष नरेंद्र यादव, सचिन रस्तोगी, मो. गुलाब खान, सीताराम कश्यप, सियाराम गुप्ता, उमाकांत यादव, सत्यनारायण पटेल, राजा यादव, शीलू यादव, हरी यादव, रमा यादव, अंजू सोनी, मान सिंह पटेल, राजा साहू, रामनरेश अग्रहरी आदि मौजूद रहे।इसी क्रम में मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड के राष्ट्रीय सचिव लवलेश यादव, लोहिया वाहिनी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ निर्भय पटेल सहित कार्यकर्ताओं ने एक–दूसरे का मुंह मीठा कराकर राष्ट्रीय अध्यक्ष के दीर्घायु की कामना की। इस मौके पर युवजन सभा के जिला सचिव रामबाबू यादव, सूरज सिंह पटेल, अनुरुद्ध यादव, मीडिया प्रभारी प्रिंस यदुवंशी, राजेश यादव, राकेश प्रजापति आदि मौजूद रहे।मऊ नगर पंचायत स्थित एक गेस्ट हाउस में समाजवादी पार्टी के प्रदेश सचिव एवं पूर्व जिलाध्यक्ष भैयालाल यादव ने केक काटकर जन्मदिन की बधाई दी और दीर्घायु होने की कामना किया। इस दौरान उदयभान सिंह पटेल, भोलानाथ खंगार, लालू मोदनवाल, पंकज यादव, पवन कुमार ओझा, सच्चिदानंद मिश्रा, राधेश्याम पांडेय, शुभम निषाद, अखिलेश सिंह पटेल, दिनेश, अखिलेश सिंह पटेल आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पुलिस अधीक्षक ने तीन नये कानूनों के बावत लोगों को किया जागरुक

मऊ (एजेंसी)। 01 जुलाई 2024 से लागू हुये तीनों नवीन कानूनों के दृष्टिगत पुलिस अधीक्षक इलामारन जी द्वारा थाना सरायलखंसी में गणमान्य व्यक्तियों के साथ आयोजित गोष्ठी के दौरान तीनों नये कानूनों (भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 एवं भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023) को लागू होने के संबंध में विभिन्न आवश्यक बिन्दुओं तथा परिवर्तित हुयी धाराओं पर प्रकाश डालते हुये जागरुक किया गया। इस दौरान पूर्व की भारतीय दंड संहित 1860 में कुल 511 धारायें थी जो अब भारतीय न्याय संहिता 2023 में 358 धारायें, भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता में कुल 484 धारायें थी जो भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 में 531 धारायें तथा पुराने भारतीय साक्ष्य अधिनियम में 167 धाराओं थी जो अब नये भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 में 170 धारायें हो गयी हैं। तत्पश्चात मुख्य–मुख्य धाराओं जैसे 379 आईपीसी अब 303 बीएनएस, 302 आईपीसी अब 103 बीएनएस, 419 आईपीसी अब 319 बीएनएस, 363 आईपीसी अब 139 बीएनएस, 376 आईपीसी अब 64 बीएनएस, 354 आईपीसी अब 74 बीएनएस, 304बी आईपीसी अब 80 बीएनएस हो गयी है इत्यादि अन्य महत्वपूर्ण धाराओं पर विस्तृत प्रकाश डालते हुये सभी को जागरुक किया गया तथा ज्यादा से ज्यादा लोगों को जागरुक करने हेतु प्रेरित किया गया। साथ ही साथ जनपद मऊ के समस्त क्षेत्राधिकारीध्थाना प्रभारियों द्वारा थानों पर सम्भ्रांत, गणमान्य व्यक्तियों के साथ गोष्ठी का आयोजन कर, स्कूलध्कॉलेजों तथा अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर जन चौपाल लगाकर लोगों को लागू तीनों नये कानूनों के सम्बन्ध में जागरुकता कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

संचारी रोग नियंत्रण अभियान रैली को जिलाधिकारी ने हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना

सोनभद्र (एजेंसी)। सोमवार को स्कूल चलो अभियान, स्वच्छता अभियान एवं विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान का जनपद स्तरीय शुभारंभ विकास खंड रॉबर्ट्सगंज के उच्च प्राथमिक विद्यालय परिसर से किया गया। कार्यक्रम के बतौर मुख्य अतिथि जिलाधिकारी चन्द्र विजय सिंह ने आयोजित कार्यक्रम में अभियान रैली को हरी दिखाकर रवाना किये। श्री सिंह ने कहा कि शासन के निर्देशों के अनुरूप 1 जुलाई से स्कूल चलो अभियान का शुभारंभ उच्च प्राथमिक विद्यालय रावर्ट्सगंज के नव प्रवेशी छात्र–छात्राओं का तिलक लगाकर व माला पहनाकर स्वागत से किया। विशेष संचारी रोग अभियान एवं स्कूल चलो रैली का शुभारंभ हरी झंडी दिखाकर रवाना किया,

जिलाधिकारी ने स्कूल परिसर का निरीक्षण करते हुए विद्यालय में संचालित स्मार्ट क्लास के माध्यम से बच्चों को शिक्षित किए जाने वाली प्रविधियां की जानकारी ली साथ ही वृक्षारोपण का कार्य भी संपन्न किया। इस आयोजन में सभा को संबोधित करते हुए शत प्रतिशत नामांकन सुनिश्चित करने के साथ–साथ बच्चों के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से बचाव हेतु लोगो को जागरूक किया। आयोजित कार्यक्रम के दौरान जिलाधिकारी ने उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के साथ स्कूल में बनें हलुआ का भी स्वाद को चखा, जिलाधिकारी को अपने बीच देख बच्चे भी काफी प्रसन्न भाव में दिखें। मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा संचारी रोगों से बचाव संबंधित विधियों से लोगो को परिचित करते हुए पूरे जुलाई माह मेंइस अभियान को संचालित करने से संबंधित अपने विचार प्रकट किये। इस मौके पर अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद सोनभद्र द्वारा नगर में नालियों की साफ–सफाई, एन्टीलार्वा का छिड़काव, झाड़ियों की सफाई, फागिंग कराने के साथ ही स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करने का काम किया गया।

जिलाधिकारी ने बताया कि व्यापक जन–जागरूकता के द्वारा संचारी रोगों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। संचारी रोग आर्थिक क्षति का मुख्य कारण है, रोगों के प्रति जागरूकता, साफ–सफाई तथा व्यक्तिगत स्वच्छता अपनाकर इन रोगों से मुक्ति पायी जा सकती है। इस मौके पर जिलाधिकारी ने उपस्थित जन–समुदाय को संचारी रोगों से जागरूकता के लिये शपथ दिलाया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी, सोनभद्र के द्वारा बताया गया कि अर्न्तविभागीय सहयोग के द्वारा इस अभियान को सफल बनाया जायेगा। कुल 11 विभागों के सहयोग से 01 अप्रैल से 30 अप्रैल 2024 तक संचारी अभियान चलाया जायेगा। स्वास्थ्य विभाग की 1500 अधिक आशाओं तथा आंगनबाडियों के द्वारा घर–घर जाकर बुखार, इन्फ्यूऐजा, टी०बी०, फाइलेरिया तथा कुपोषित बच्चों का चिन्हीकरण किया जायेगा। जिसके जाँच एवं उपचार की व्यवस्था निःशुल्क की गयी है।

इस अवसर पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी नवीन पाठक, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका सोनभद्र विजय यादव, स्वास्थ्य विभाग के अपर एवं उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी तथा मलेरिया विभाग के समस्त अधिकारी एवं मलेरिया निरीक्षक, जिला पंचायत राज अधिकारी, सोनभद्र, जिला कार्यकम अधिकारी, सोनभद्र, नगर पालिका के सफाई कर्मचारी एवं आंगनबाडी कार्यकत्री उपस्थित रहें।

सात दिन में 15 गांवों तक पानी पहुंचाने का रखे लक्ष्य: आयुक्त

–जल जीवन मिशन की समीक्षा बैठक कर दिए निर्देश

चित्रकूट। मंडलायुक्त बालकृष्ण त्रिपाठी की अध्यक्षता में जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन व मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर की उपस्थिति में नमामि गंगे योजना अंतर्गत ग्राम लोधौरा बुजुर्ग में एल एंड टी व जीवीपीआर द्वारा कराए जा रहे कार्यों की समीक्षा बैठक निरीक्षण भवन में संपन्न हुई। बैठक में अधिशासी अभियंता जल निगम ने बताया कि सुबह 6 से 8 बजे तक एवं शाम को 4 से 6 बजे तक पानी देने का समय निर्धारित किया गया है। मंडलायुक्त ने कहा कि स्कूलों व ग्रामसभा में पानी समय से पहुंचे। ग्राम प्रधान से भी क्रास चेकिंग कराते रहे। उन्होंने ओवर टैंक के बारे में जानकारी ली। कहा कि जो टैंक अधूरा है उसे जल्द पूर्ण कराकर घर–घर पानी सप्लाई कराएं। किसी प्रकार की शिकायत नहीं आनी चाहिए। कहा कि चांदी बांगर में जो 57 ओएसटी बन गए हैं उससे पानी सप्लाई की जाए। जो अवशेष बचे हैं उसमें मैन पावर बढ़ाकर कार्य करें। तभी कार्य पूर्ण हो पाएगा। यह शासन की प्रमुखता है। इसे जल्द पूर्ण कराएं। उन्होंने कार्यदाई संस्थाओं को निर्देशित किया कि जो पाइप लाइन अधूरी है उसे शीघ्र कराएं। अधिशासी अभियंता जल निगम में बताया कि चांदी बांगर परियोजना से 173 गांव में पानी देना था। जिसमें 60 गांव को पानी सप्लाई किया जा रहा है। जिस पर मंडलायुक्त ने कहा कि यह बहुत कम है। उन्होंने निर्देशित किया कि 15 गांव एक हफ्ते में टारगेट रखें। जिलाधिकारी ने मुख्य विकास अधिकारी को निर्देशित किया कि इसमें खंड विकास अधिकारी को सक्रिय करें। जिससे कार्य में प्रगति हो सके। आयुक्त ने कहा कि ग्राम पंचायत में ग्रामीणों के बीच जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी तथा जनप्रतिनिधियों के साथ जाकर जल जीवन मिशन के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम करें। उन्होंने अधिशासी अभियंता जल निगम को निर्देशित किया कि पानी की भी टेस्टिंग करते रहें। ग्रामीणों को भी बताएं कि पानी को स्वच्छ रखने के लिए क्लोरीन भी मिलाई जा रही है। इसका उपयोग करें। कहा कि शासन की मंशानुरूप कार्य कराए। गुणवत्ता में कोई समझौता नहीं किया जा सकता। इस अवसर पर एडीएम नमामि गंगे वंदिता श्रीवास्तव, अधिशासी अभियंता जल निगम आशीष भारती सहित कार्यदाई संस्था एवं सहायक अभियंता मौजूद रहे।

किसानों को जैविक और तरल खाद के प्रयोग को किया प्रेरित

चित्रकूट। दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्र गनीवा में वैज्ञानिक सलाहकार समिति का आयोजन हुआ। प्रतिवर्ष कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित होने वाली 31वी बैठक है। इस दौरान कृषि विज्ञानं केंद्र के द्वारा किये जाने वाले तकनीकी कार्य के लिए समिति के सदस्यों के साथ साझा कर सुझाओ के साथ जिले की नवीन कार्य योजना तैयार की गई। विभाग प्रमुखों ने महत्वपूर्ण सुझाव दिए।कार्यक्रम में मंडलायुक्त बाँदा बालकृष्ण त्रिपाठी ने कहा कि कृषि विज्ञान केंद्र को जैविक खेती करने और किसानो को तरल खाद के उपयोग के लिए प्रेरित करने को कहा। पशुपालन विभाग से प्राप्त सुझाव को समाधान करते हुये कहा कि गौशालाओं में उपलब्ध गोबर को वर्मी कम्पोस्ट बनाए। डीएम शिवशरणप्पा जीएन ने जिले में गठित कृषक उत्पादन संगठन के विकास एवं क्षमतावर्धन के लिए नाबार्ड के प्रतिनिधि को निर्देशित किया। साथ ही जिले में उपलब्ध वनोपज महुवा को प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन के कार्य किये जाने के सुझाव दिए। सीडीओ अमृतपाल कौर ने कहा कि जिले में धान के बढ़ाते हुए क्षेत्रफल को घटाने की योजना बनाने की आवश्यकता है। साथ ही खेत तलाब योजना से बने तालाबो के हितग्राहीयो को मछली पालन, मोती पालन के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। महत्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. भरत मिश्रा ने कहा कि कृषि विज्ञान केंद्र के सुदूर क्षेत्र में स्थापना के लिए अनुसुया आश्रम के महराज भगवानानंद ने नानाजी को प्रेरित करने एवं किसानो के लिए किये कार्य के लिए दूरदृष्टा की संज्ञा दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ नरेंद्र प्रताप सिंह कुलपति बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने कहा कि अच्छी किस्मो एवं तकनीकी का उपयोग करना चाहिए।

जिलाधिकारी ने आगामी काँवड़ यात्रा व त्योहारों को लेकर की बैठक

हरदोई(एजेंसी)। विवेकानंद सभागार में जिलाधिकारी मंगला की अध्यक्षता में आगामी त्योहारों व काँवड़ यात्रा में व्यवस्थाओं को लेकर बैठक हुई। जिलाधिकारी ने कहा कि त्योहारों व काँवड़ के दौरान किसी नई परंपरा को अनुमति न दी जाये। प्रशासन व पुलिस अधिकारियों के मध्य बैठक कर ली जाये। काँवड़ के दौरान यात्रा मार्ग पर मांसाहार न बिकने दिया जाये। मंदिरों के व्यवस्थापकों के साथ बैठक कर ली जाये। मदिरों पर पब्लिक एड्रेस सिस्टम लगवाया जाये। सोमवार को यात्रा मार्ग पर दुकाने बन्द रखी जाएं। राजघाट व मेंहदीघाट पर व्यवस्थाएं चाक चौबंद कर ली जाएं। घाटों पर साफ सफाई करा ली जाये। जल जमाव वाले स्थान चिन्हित कर ठीक करा लिया जाये। शिविर की व्यवस्था ठीक रखी जाये। भीड़ वाले मंदिरों में ड्रोन से वीडियोग्राफी करायी जाय

परिस्थितियों में विवाहिता का लटका मिला शव, जांच में जुटी पुलिस

सिरौलीगौसपुर बाराबंकी । कोतवाली बदोसराय क्षेत्र के ग्राम सरांय रज्जन में सन्दिग्ध परिस्थितियों में विवाहिता का शव लटका मिला ससुराली जन मौके से फरार मायके वालों ने अपनी लडकी को दहेज के लिए प्रताड़ित कर हत्या करके शव लटकाने का आरोप लगा रहे हैं। मामला कोतवाली बदोसराय क्षेत्र के ग्राम सरांय रज्जन का है। ग्राम रसूलपुर थाना कोतवाली बदोसराय के संग्राम पुत्र रामलखन ने कोतवाली बदोसराय पुलिस को दी गई तहरीर में आरोप लगाया है कि उन्होंने अपनी पुत्री सविता यादव 24 वर्ष की शादी 16 मई 23 को हिन्दु रीति रिवाज के अनुसार कोतवाली बदोसराय क्षेत्र के ही ग्राम सरांय रज्जन के विकास यादव पुत्र सुरेन्द्र कुमार यादव के साथ किया था और अपनी हैसियत के मुताबिक दान दहेज दिया था। परन्तु ससुराली जन बलेनो कार के लिए आये दिन प्रताड़ित कर रहे थे।इस बाबत एक शिकायती प्रार्थना पत्र दिया था जिसमे मुकामी थाने की पुलिस ने दोनो पक्षों को थाने पर बुलाकर सुलह समझौता करवा दिया था। मायके वालों ने अपनी बेटी को ससुराल भेज दिया था। बीती रात करीब 11 बजे सविता ने अपने भाई कृष्ण मगन को फोन पर बताया कि उसका पति सास ससुर जेठ आदि उसे प्रताड़ित कर रहे हैं। उसने अपनी हत्या की आशंका भीजताई थी। भाई ने कहा कमरा बंद कर लो और 112 पुलिस को बुला लो । सविता ने 112 पुलिस को काल कर मौके पर बुलाया । जब पुलिस पंहुच गई तब उसने दरवाजा खोला और आप बीती सुनाई। जिस पर 112 पुलिस कर्मियों ने पति सास ससुर जेठ आदि को कडी फटकार लगाते हुए मामला शांत करा कर पुलिस वापस चली गई। भाई कृष्ण मगन सुबह बहन का हाल चाल लेने को फोन लगाया तो फोन नाट रिचेवल बता रहा था । कई बार फोन लगाने पर नहीं उठा तो भाई ने मंझिया खुर्दमऊ निवासी को फोन किया और 112 पुलिस के साथ सरांय रज्जन गांव पंहुचे तो सभी दंग रह गये ।

घर के कमरा खुले हुए थे कृष्ण मगन की बहन का शव लटका हुआ था। 112 पुलिस ने थानाध्यक्ष बदोसराय सन्तोष कुमार को सूचित किया थानाध्यक्ष एस आई शौम्य जायसवाल आदि के साथ सरांय रज्जन पंहुचे तुरन्त बाद पुलिस उपाधीक्षक रामनगर आलोक पाठक भी मौके पर पहुंचे और कमरे में लटकी हुई लाश की फोरेंसिक टीम से जांच कराकर शव नीचे उतरवा कर पंचायत नामा भरवा कर लाश को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया है।लडकी के पिता की तहरीर पर मुकदमा पंजीकृत कर जांच शुरू कर दी गई है। थाना प्रभारी बदोसराय सन्तोष कुमार ने बताया है कि मुकदमा दर्ज कर लिया गया है पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्यवाही की जायेगी।

जलशक्तिमंत्री ने बाढ़ क्षेत्र के तटबंधों का किया निरीक्षण

रामनगर बाराबंकी। प्रदेश सरकार के जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने बरसात के मौसम को देखते हुए रामनगर तहसील में बाढ़ क्षेत्र के तटबंधों का निरीक्षण किया।निरीक्षण के मौके पर मंत्री के साथ जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार, पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष अरविंद मौर्य ,एमएलसी अंगद सिंह व भाजपा नेता शरद अवस्थी सहित अन्य भाजपा कार्यकर्ता व ग्रामीण मौजूद रहे।जल शक्ति मंत्री ने सूरतगंज विकासखंड के तीन व रामनगर के एक शिमली नदी के तटबंध का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए व जानकारी ली।तटबंधों के निरीक्षण उपरांत मंत्री ने डीएम एसपी व भाजपा के नेताओं के साथ महादेवा पहुंचकर लोधेश्वर महादेव जी का जलाभिषेक कर विधिवत पूजन अर्चन किया।अगले क्रम में उन्होंने अधिकारियों से महादेवा कॉरिडोर के बार में विस्तार से जानकारी ली।इस अवसर अधिकारियों सहित तमाम भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

मोहर्रम को लेकर तहसील साभार में शांति समिति की बैठक संपन्न

फतेहपुर बाराबंकी। मोहर्रम को लेकर मंगलवार को फतेहपुर तहसील साभार में शांति समिति की बैठक का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता उपजिलाधिकारी आर पी जगत साईं ने की। बैठक में एसडीएम ने कहा कि मोहर्रम का जुलूस निर्धारित रास्तों से ही निकाले और नई परंपरा शुरू न करें अगर किसी प्रकार की समस्या हो तो समय रहते प्रशासन को अवगत कराएं ताकि उसका निस्तारण हो सके। उन्हों साफ सफाई,बिजली आदि व्यवस्था को लेकर स्वंधित को निर्देश दिए। क्षेत्राधिकारी डॉ बीनू सिंह ने ताजियादारों से अपील की कि वो अपने अपने ताजियों और अलम की ऊंचाई का खास खयाल रखें जिससे कोई भी अनहोनी न होने पाए।

बैठक का संचालन समाजसेवी डा समर सिंह ने किया। इस मौके पर तहसीलदार प्राची त्रिपाठी,नायब तहसीलदार अभिषेक कुमार, कोतवाल डी के सिंह,एस डी ओ शंभू नाथ,मुफ्ती नजीब कासमी,सुपरवाइजर आफताब आलम,अहमद सईद,नगमी मोहानी आदि लोग मौजूद रहे।

मॉब लिंचिंग के खिलाफ अल्पसंख्यक कांग्रेस का विरोध प्रदर्शन, राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजा

सहारनपुर। मुल्क भर में जहां जहां भाजपा की सरकार हैं, उन राज्यों में लगातार मुस्लिम समुदाय के विरुद्ध हिंसक घटनाओं का दौर जारी है। बार बार शिकायत किए जाने के बाद भी बजरंग दल और हिंदु संगठनो के हत्यारे अपराधी स्वतंत्र घूम रहे हैं। जबकि मुस्लिम समुदाय को गंभीर चुनौतियों से दोचार होना पड़ रहा है। विदित हो कि पिछले सप्ताह अलीगढ़ में उससे पूर्व दि० 7 जून 2024 को छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में शामली और सहारनपुर की विधानसभा गंगोह के लखनौती गांव और शामली के मानत गांव के रहने वाले तीन लड़कों की निर्मम तरीके मोब लिंचिंग कर उन्हें मार दिया गया। अल्पसंख्यक कांग्रेस के पदाधिकारी ने आज जिला सहारनपुर में विरोधा प्रदर्शन कर जिला अधिकारी को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन दिया। इस दौरान अल्पसंख्यक कांग्रेस के प्रदेश महासचिव सोनू पठान जिला अध्यक्ष, गुलशेर अल्वी और महानगर अध्यक्ष। आरीश सिद्दीकी ने भाजपा सरकार पर तीखे शब्दों में हमला बोलते हुए कहा की क्या यही उत्तर प्रदेश सरकार और छत्तीसगढ़ सरकार के साथ साथ मोदी सरकार की जीरो टॉलरेंस वाली नीति है। जहां पर आम आदमी हो या मुस्लिम या फिर महिला हो यह सभी आज खुद को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। विरोध प्रदर्शन के दौरान अल्पसंख्यक कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने मॉब लिंचिंग करने वालों के खिलाफ बड़ा प्रदर्शन करते हुए अपराधियों को फांसी देने की मांग की। मॉब लिंचिंग करने वालों के खिलाफ सख्त कानून बनाने की भी अपनी मांग दोहराई। इस अवसर पर वरिष्ठ नेता गण पूर्व जिला अध्यक्ष चौधरी मुजफ्फर अली, गुर्जर प्रवीण चौधरी, अशोक सैनी, चंद्रजीत सिंह, निक्कू नितिन शर्मा, अक्षय चौधरी, जोशी जी, फरमान खान, जमशेद, मनी, फैजान मंसूरी, शाकिर अली, सुहेल मलिक, यासमीन सिद्दीकी, सीमा सिद्दीकी, असगर आलम, जमशेद नसीब खान, मधु सहगल, मनीष सहगल, सीमा सिद्दीकी, शहनाज नेतानी आदि साथी मौजूद रहे।

इनर व्हील क्लब की स्थापना समारोह का भव्य आयोजन संपन्न

हरदोई(एजेंसी) ।इनर व्हील क्लब की स्थापना समारोह का भव्य आयोजन हुआ ।इनर व्हील क्लब डी ओ डी ने अपनी इंस्टालेशन सेरेमनी का आयोजन किया। इनर व्हील में इस समारोह के माध्यम से अपनी सेवाओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः प्रकट किया। समारोह के दौरान क्लब के संस्थापकों ने उनके योगदान और इंस्टॉलेशन सर्विस के पीछे की प्रेरणा को साझा किया। क्लब की मुख्य अतिथि इनर व्हील क्लब की क्पेजज चेयरमैन नीलू ठाकरे ने अपनी प्रतिक्रिया साझा की और डी ओ डी के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने डी ओ डी द्वारा किए गए विभिन्न क्षेत्रों के कार्यों की प्रशंसा की। इस अवसर पर उन्होंने सुप्रिया सेठ को कॉलर व पिन पहना कर 2024रू25 के अध्यक्ष पद का कार्य भार सौंपा। यह भी बताया गया कि इनर व्हील डी ओ डी ने रेलवे गंज में वाटर कूलर लगवाया, एक लड़की को स्कूल की साल भर की फीस, एक लड़की की शादी का सामान तथा एक महिला के स्वास्थ्य से संबंधित सभी पौष्टिक तत्व देने का कार्य किया। इसके साथ–साथ 1 जुलाई को डॉक्टर्स डे , सी ए डे तथा अन्नपूर्णा दिवस मनाते हुए डॉ ए के सिंह ,डॉ वेद प्रकाश सिंह, नामित जैन तथा डॉ प्रियंका तिवारी को सम्मानित किया। इस समारोह की अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष प्रेमावती भी इस अवसर पर उपस्थित रहीं, उन्होंने इनर व्हील के उज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी तथा जिला पंचायत अध्यक्ष प्रेमावती को इनर व्हील डी ओ डी का सम्मानित सदस्य भी घोषित किया गया। इस अवसर पर उपाध्यक्ष के पद पर राखी द्विवेदी, सचिव के पद पर पारुल तिवारी ,कोषाध्यक्ष के पद पर सोनिया मिश्रा, आइ एस ओ के पद पर पूजा जैन तथा क्लब एडिटर का पद नेहा नारायण को सौंपा गया। आज के इस समारोह में चार्टर प्रेसिडेंट चित्रा बाजपेई, सीजीआर अनुराधा मिश्रा, सोहनी द्विवेदी,चेतना शुक्ला,रेनू शुक्ला, नीलम सिंह,निरमा देवी,डॉ चित्रा मिश्रा,संगीता श्रीवास्तव तथा शक्ति वाहिनी के सभी सदस्य उपस्थित रहे।

सड़क निर्माण कार्य में हो रही देरी से लोगों में आक्रोश

कछौना, हरदोई(एजेंसी) ।प्रधानमंत्री सड़क ग्राम योजना के तहत लखनऊ पलिया मार्ग हाईवे से ज्ञानपुर चौराहा से गौहानी संपर्क मार्ग का निर्माण कार्य अधूरा पड़ा है। जिसकी शिकायत सामाजिक कार्यकर्ता हेमंत कुमार सिंह निवासी कामीपुर ने उच्च अधिकारियों से की है। इस मार्ग से दर्जनों गांवों के राहगीरों का प्रतिदिन आवागमन रहता है।बताते चले विकासखंड कछौना की लखनऊ पलिया मार्ग के ज्ञानपुर चौराहा से गौहानी संपर्क मार्ग आवागमन हेतु मुख्य मार्ग है। इस मार्ग से ग्राम सभा कामीपुर, ज्ञानपुर, धंधार, मंडिलहिया, आरखतलिया, जब्बर खेड़ा, अवसेरी खेड़ा, गौहानी, नौवाखेड़ा, बरुआहार, संपहैया, मुसलमानाबाद व संडीला से मल्लावा मार्ग को जोड़ती है। इस मार्ग से सैकड़े लोगों नौनिहालों का प्रतिदिन आवागमन रहता है। इस मार्ग की जर्जर हालात के विषय में सामाजिक कार्यकर्ता हेमंत कुमार सिंह, दुर्गेश सिंह, ग्राम प्रधान मदन सिंह, ग्राम प्रधान कप्तान, अधिवक्ता संत कुमार यादव आदि जागरूक लोगों ने शासन प्रशासन से गुहार लगाई। जनप्रतिनिधि क्षेत्रीय विधायक रामपाल वर्मा व सांसद अशोक रावत के प्रयास से यह मार्ग प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत चयनित कर लिया गया।

पाली क्षेत्र में चोरी की बड़ी वारदात

पालीध्हरदोई(एजेंसी) ।बीती रात अज्ञात चोरों ने नकब लगाकर लाखों के जेवर समेत दस हजार की नगदी पर हाथ साफ कर दिया ।सोमवार की रात पाली थाना क्षेत्र के बसालिया गांव निवासी देवेंद्र सिंह रोज की बात खाना खाकर परिवार समेत नींद के आगोश में चले गए,इसी दौरान मकान के पीछे नकाब लगाकर अज्ञात चोर कमरे में दाखिल हुए और वहां रखे सोने चांदी के आभूषण समेत दस की नगदी लेकर चंपत हो गए। सुबह जागने पर परिजनों को चोरी की जानकारी हुई तो उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। पाली पुलिस ने बताया कि मामले की छानबीन की जा रही है।

हरदोई के चिकित्सक अभूतपूर्व सेवा कार्य और मानवीय सेवा के लिए हुए सम्मानित

हरदोई(एजेंसी) ।चिकित्सक दिवस के अवसर पर होटल के प्रबन्ध निदेशक और पूर्व सरकारी वकील अविनाश चंद्र गुप्ता ने हरदोई के चिकित्सको को उनके अभूतपूर्व सेवा कार्य और मानवीय सेवा के लिए सम्मानित किया ।इस अवसर पर जनपद के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर रोहताश कुमार को उनके हरदोई में कार्यकाल के एक वर्ष पूर्ण होने पर विशेष रुप से सम्मानित किया गया। साथ ही एम ओ आई पिहानी डॉक्टर जीतेंद्र श्रीवास्तव एम ओ आई अहिरोरी, डॉक्टर मनोज कुमार सिंह, डॉक्टर अमरजीत अजमानी, डॉक्टर आर पी गुप्ता, डॉक्टर सी के गुप्ता, डॉक्टर नवीन सक्सेना, डॉक्टर तिरुपति आनन्द, डॉक्टर संदीप कटियार और डॉक्टर सौरभ दयाल को सम्मानित किया गया व उनके दीर्घायु होने की कामना करते हुए सभी को चिकित्सक दिवस की बधाई दी गई।

बीजेपी के पदाधिकारियों ने माधौगंज में आपात काल पर की चर्चा बैठक

माधौगंजध्हरदोई(एजेंसी) ।बीजेपी के पदाधिकारी ने ब्लॉक सभागार में कांग्रेस पार्टी की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपातकाल पर बैठक की। वक्ताओं ने आपातकाल को भारत का काला अध्याय बताया ।बैठक की मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष प्रेमावती ने कहा कि 25 जून 1975 की रात में कांग्रेस ने संविधान की हत्या कर आपातकाल लागू किया ।उन्होंने कहा कि तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीनअली अहमद से जबरदस्ती आपातकाल लागू करने का दबाव बनाया क्योंकि इंदिरा गांधी को इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा 6 वर्षों तक चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित कर दिया गया था तथा उनका चुनाव शून्य कर दिया गया था जिसके लिए उन्होंने राजनीतिक विरोधियों को कैद कर लिया प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया ।वहीं उनके पुत्र संजय गांधी के नेतृत्व में बड़े पैमाने पर पुरुष नसबंदी अभियान चलाया गया। बैठक में पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष विद्याराम वर्मा ने आपातकाल के समय उन पर हुए कांग्रेस के अत्याचार की आपबीती बताई। उन्होंने कहा कि उस समय के युवाओं के भविष्य को बर्बाद कर दिया था। विद्यार्थियों के आंदोलन को कुचलने के प्रयास हुए। जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में सभी विपक्षी दलों ने विरोध जताया था। लेकिन विडम्बना है कि आज इंडी गठबंधन में शामिल दलों के मुखिया कांग्रेस से हाथ मिलाए है। जबकि उनके नेताओं ने यातनाए सही। मुख्य अतिथि ने जय गुरुदेव के अनुयायियों को माला पहनाकर स्वागत किया। जिला उपाध्यक्ष भाजपा संजय सिंह गुड्डू जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष अशोक कुमार सिंह ने भी संबोधित किया। इस दौरान भाजपा के सहसंयोजक व आयोजक नीरज विद्यार्थी ने मंच का संचालन किया। ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि रमेश वर्मा सहित रत्नेश सिंह विजय शंकर, नीरज गुप्ता ,धर्मेंद्र सिंह, रघुवीर आदि लोग मौजूद रहे।

अंतर्ध्वनि आनलाइन विभिन्न प्रतियोगिताओं के सातवें सीजन के परिणाम घोषित

हरदोई(एजेंसी) ।अंतर्ध्वनि जन कल्याण समिति के तत्वावधान में 1 जून से आयोजित की जा रहीं ऑनलाइन प्रतियोगिताओं के सातवें सीजन में आयोजित लेट्स अप्लाई मेहंदी (मेहंदी) व लेट्स एक्ट (अभिनय) प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषित कर दिए गए। इन ऑनलाइन प्रतियोगिताओं का मुख्य उद्देश्य प्रतियोगिताओं के साथ साथ प्रतिभागियों को कार्यशाला सा अनुभव देना है। लेट्स अप्लाई मेहंदी (मेहंदी) प्रतियोगिता के परिणामों के विषय में जानकारी देते हुए आयोजक कुलदीप द्विवेदी ने बताया कि फाइनल में ब्राइडल मेहंदी की गुणवत्ता के आधार पर हरदोई की शुभी गुप्ता प्रथम, खुशी जायसवाल द्वितीय व दिल्ली की आस्था गुप्ता तृतीय स्थान पर रहीं। रूबी गौर को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। निर्णय दूरदर्शन मेकअप आर्टिस्ट दानिश मसूद व इनरव्हील क्लब वृंदावन की सीनियर मेम्बर मंजू पारिक ने तथा संयोजन पारुल तिवारी, इला द्विवेदी का रहा। लेट्स एक्ट प्रतियोगिता के फाइनल में प्रतिभागियों ने निर्णायकों द्वारा दी हुई स्क्रिप्ट पर अभिनय करके खुद को साबित किया। दिल्ली की कृशा सहगल प्रथम, हरदोई की सान्वी वर्मा द्वितीय व इशानी बाजपेई तृतीय रहीं। सीतापुर की हर्षिता वर्मा को सांत्वना पुरस्कार से संतोष करना पड़ा। निर्णय मुम्बई की स्क्रिप्ट राइटर अवंतिका सक्सेना व आवेग त्यागी ने तथा संयोजन नीलम राज, अभिषेक द्विवेदी व सौम्या गुप्ता ने किया।

संक्षिप्त खबरे......

लकड़ी के कारखाने में चोरी, दी गई तहरीर

लालगंज, प्रतापगढ़। लकड़ी के कारखाने से आरोपियो द्वारा वेशकीमती खिड़की दरवाजा तथा चीरी हुई लकड़ी के चोरी किये जाने को लेकर पीडित ने लीलापुर पुलिस को तहरीर दी है। थाना क्षेत्र के सिंधौर निवासी मुकुन्द वर्मा पुत्र रामखेलावन ने मंगलवार को पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि बीती पहली जुलाई को वह रात करीब साढ़े आठ बजे घर जा रहा था तो देखा कि उसके कारखाने पर कुछ संदिग्ध लोग लाठी लेकर बैठे थे। पीड़ित का कहना है कि उसके गांव से लकड़ी का कारखाना तीन किलोमीटर दूर है। अगली सुबह जब वह कारखाने पर पहुंचा तो वहां से तीन दरवाजा, दस खिड़की, पांच गेट व चीरी हुई लकड़ी गायब मिली। पीड़ित ने आरोपियों के खिलाफ कारखाने से हजारों की कीमती लकड़ी के चोरी किये जाने को लेकर तहरीर दी है। प्रभारी निरीक्षक नरेन्द्र सिंह का कहना है कि घटना की जांच कराकर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

कपड़े की दुकान में चोरी, जांच में जुटी पुलिस

लालगंज, प्रतापगढ़। लालगंज कोतवाली के रामपुर बावली चौराहे पर स्थित कपड़े की दुकान में सोमवार की रात अज्ञात चोरों ने कीमती सामानों पर हाथ साफ कर दिया। पूरे भासो गांव के शम्भू यादव ने रामपुर चौराहे पर कपड़े की दुकान खोल रखी है। सोमवार की शाम वह दुकान बंद कर घर चला गया। मंगलवार की सुबह दुकान पर पहुंचा तो चोरी देख आवाक रह गया। पीड़ित ने घटना को लेकर पुलिस को तहरीर दी है। प्रभारी निरीक्षक नीरज यादव का कहना है कि घटना की जांच करायी जा रही है। शीघ्र खुलासा किया जाएगा।

पांच आरोपियों के खिलाफ घर में घुसकर मारपीट का केस

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने जमीनी विवाद को लेकर महिलाओं के साथ गालीगलौज व घर में घुसकर मारपीट को लेकर पांच आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया है। बलीपुर कटरा निवासी रामलाल वर्मा के पुत्र रामनरेश ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि उसके खेत में चारों तरफ पिलर लगाया गया था। बीती एक जुलाई को शाम करीब पांच बजे विपक्षी गांव के कामता प्रसाद यादव, नन्हें वर्मा, महेश व राजू तथा लल्ला ने खेत पहुंचकर उसका पिलर उखाड़ने लगे। पीड़ित की मां ने आरोपियों को पिलर उखाड़ते देखा तो पुलिस को सूचना दी। इस पर आरोपियों द्वारा उसकी मां को गाली दी जाने लगी। डर कर पीडित की मां घर में घुस गयी तो आरोपियों ने घर में घुसकर लाठी डण्डा व कुल्हाडी आदि से हमला कर दिया। शोरशराबा होने पर पत्नी लीलावती तथा पुत्री सोनी व प्रिया एवं बहन किरन बचाव को दौड़ी तो आरोपियों ने इन्हें मारपीट कर लहूलुहान कर दिया। शोर मचाने पर आरोपी जानलेवा धमकी देते चले गये। तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपी कामता प्रसाद समेत पांच के खिलाफ घर में घुसकर मारपीट समेत गंभीर धाराओं में सोमवार की रात केस दर्ज किया है।

ट्राली की चपेट में आने से युवती घायल, रेफर

लालगंज, प्रतापगढ़। ट्रैक्टर ट्राली से दबकर युवती गंभीर रूप से घायल हो गयी। प्रारम्भिक उपचार के बाद गंभीर दशा में उसे जिला अस्पताल रेफर किया गया है। सांगीपुर थाना क्षेत्र के सिताली का पुरवा गांव निवासी अजय कुमार विश्वकर्मा की पुत्री शीलू विश्वकर्मा 18 मंगलवार को गांव में सड़क के किनारे बच्चों के साथ खेल रही थी। इस बीच रोड से ट्रैक्टर ट्राली गुजरी कि किसी बच्चे के द्वारा धक्का लग जाने से शीलू ट्रैक्टर ट्राली के नीचे चली गयी। ट्राली का पहिया युवती के कमर को रौंदता निकल गया। गंभीर रूप से घायल युवती को परिजन इलाज के लिए सांगीपुर सीएचसी ले गये। यहां प्रारंभिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

पर्यटन स्थलियों के सौन्दर्यीकरण के लिए ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि ने मंत्री को भेजवाया प्रस्ताव

लालगंज, प्रतापगढ़। लक्ष्मणपुर विकासखण्ड के धार्मिक पर्यटन स्थलियों के सौन्दर्यीकरण को लेकर भाजपा नेता एवं ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि ने पर्यटन मंत्री को लिखित प्रस्ताव भेजवाया है। लक्ष्मणपुर की ब्लाक प्रमुख प्रेमलता सिंह के प्रतिनिधि व भाजपा नेता डॉ. राकेश सिंह से मंगलवार को प्रधान देवी प्रसाद मिश्र की अगुवाई में प्रधानो के प्रतिनिधिमण्डल ने मुलाकात की। प्रतिनिधिमण्डल ने पूरनपुर खजूर स्थित बाबा दूधनाथ मंदिर के सौन्दर्यीकरण का भाजपा नेता को मांग पत्र सौंपा। इस पर भाजपा नेता डॉ. राकेश सिंह ने बाबा दूधनाथ मंदिर के सौन्दर्यीकरण व परिसर स्थित तालाब के सुदृढ़ीकरण एवं देवली ग्राम स्थित देवरा देवी धाम गांव के सई नदी घाट के निर्माण एवं सगरा सुंदरपुर बाजार स्थित बाबा नर्वदेश्वर धाम में चहरदीवारी के निर्माण हेतु प्रदेश के पर्यटन मंत्री डॉ. जयवीर सिंह को प्रस्ताव भेजवाया है। प्रतिनिधिमण्डल में सुशील तिवारी, गुडडू तिवारी, वंशराज सिंह, प्रशांत सिंह, मीडिया प्रभारी अनूप त्रिपाठी मौजूद रहे।

नेत्रदान जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन चार को

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में आगामी चार जुलाई को निशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन किया गया है। युवा सामाजिक सेवा संस्थान द्वारा नेत्रदान जागरूकता अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः दस बजे होगा। यह जानकारी संस्थान के सचिव व प्रबंधक आलोक शुक्ल ने दी है।

सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार आज

लालगंज, प्रतापगढ़। पौराणिक स्थली बाबा घुइसरनाथ धाम में आज बुधवार को सोलहवें सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार का आयोजन प्रातः दस बजे से किया गया है। शिवम साहित्यिक मंच के तत्वाधान में वटुकों को आचार्य समूह द्वारा यज्ञोपवीत धारण कराया जाएगा। उक्त जानकारी कार्यक्रम के संयोजक अखिलेश मिश्र ने दी है।

जिम्बाब्वे बनाम भारत: टी-20 अंतरराष्ट्रीय सीरीज से जुड़ी सभी जानकारी और आंकड़े

नईदिल्ली, 02 जुलाई। टी–20 विश्व कप 2024 का खिताब जीतने के बाद अब भारतीय क्रिकेट टीम जिम्बाब्वे का दौरा करने के लिए तैयार है।दोनों देशों के बीच 6 जुलाई से 5 टी–20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की सीरीज खेली जाएगी।इसमें भारतीय टीम की कमान शुभमन गिल के हाथों में होगी और जिम्बाब्वे क्रिकेट टीम का नेतृत्व सिकंदर रजा करेंगे। सीरीज से भारतीय टीम से प्रमुख खिलाड़ियों को आराम दिया गया है।आइए सीरीज से जुड़ी सभी जानकारी और आंकड़ों पर नजर डालते हैं।भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की एक विज्ञप्ति में कहा गया है, भारतीय टीम जिम्बाब्वे के खिलाफ 5 मैचों की टी–20 सीरीज में भाग लेने के लिए जुलाई के पहले सप्ताह में हरारे का दौरा करेगी।सीरीज के 5 मैच क्रमशरू 6, 7, 10, 13 और 14 जुलाई को खेले जाएंगे। ये सभी मैच हरारे स्पोर्ट्स क्लब मैदान पर ही खेले जाएंगे।विशेष रूप से इन सभी टी–20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की शुरुआत भारतीय समयानुसार शाम 4रू30 बजे से होगी।जिम्बाब्वे के दौरे के लिए अभिषेक शर्मा, रियान पराग, तुषार देशपांडे और ध्रुव जुरेल को पहली बार भारतीय टीम में शामिल किया गया है। इन सभी ने इंडियन प्रीमियर लीग में शानदार प्रदर्शन किया था।भारतीय टीमरू शुभमन गिल (कप्तान), यशस्वी जायसवाल, रुतुराज गायकवाड़, अभिषेक शर्मा, रिंकू सिंह, संजू सैमसन, ध्रुव जुरेल, शिवम दुबे, रियान पराग, वाशिंगटन सुंदर, रवि बिश्नोई, अवेश खान, खलील अहमद, मुकेश कुमार और तुषार देशपांडे।जिम्बाब्वे के चयनकर्ताओं ने कुछ कड़े फैसले लिए हैं और क्रेग एर्विन और सीन विलियम्स जैसे खिलाड़ियों को बाहर कर दिया है। अंतुम नकवी को पहली बार टीम में शामिल किया गया है।जिम्बाब्वे टीमरू सिकंदर रजा (कप्तान), फराज अकरम, ब्रायन बेनेट, जॉनाथन कैंपबेल, तेंडाई चतारा, ल्यूक जोंगवे, इनोसेंट कैया, क्लाइव मदांडे, वेसली मधेवेरे, तदिवानाशे मारुमनी, वेलिंगटन मसाकाद्जा, ब्रैंडन मावुता, ब्लेसिंग मुजरबानी, डायोन मायर्स, अंतुम नकवी, रिचर्ड नगारवा और मिल्टन शुम्बा।भारत ने टी–20 अंतरराष्ट्रीय में जिम्बाब्वे के खिलाफ कुल 8 मैच खेले हैं जिसमें से उसे 6 मे जीत और 2 में हार मिली है।इनमें से 7 मैच हरारे में खेले गए हैं, वहां भारत ने 5 मैच में जीत और 2 में हार झेली है।दोनों टीमें आखिरी बार टी–20 अंतरराष्ट्रीय में साल 2022 में खेले गए टी–20 विश्व कप में आमने–सामने हुई थीं। उस मुकाबले में भारतीय टीम ने 71 रनों से जीत हासिल की थी।अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में गिल पहली बार भारतीय टीम की कप्तानी करेंगे। फिलहाल उनके नाम 25.76 की औसत से 335 रन दर्ज हैं।उनके अलावा, जायसवाल और गायकवाड़ टीम में अन्य टी–20 अंतरराष्ट्रीय शतकधारी हैं।टी–20 में रिंकू की औसत 89 की है। तेज गेंदबाज अवेश, खलील और देशपांडे ने आईपीएल 2024 में 16 से अधिक विकेट चटकाए हैं।सैमसन और पराग ने सीजन में 500 से अधिक रन बनाए हैं।लिस्ट–ए क्रिकेट में नकवी की औसत 73.42 है और उनसे काफी उम्मीदें हैं। कप्तान रजा के नाम टी–20 अंतरराष्ट्रीय में 1,947 रन दर्ज होने के साथ 60 विकेट भी हैं।चतारा, मुजाराबानी और जोंगवे ने जिम्बाब्वे के लिए इस प्रारूप में 60 या उससे अधिक विकेट लिए हैं।मधेवेरे के नाम 1,000 से अधिक टी–20 अंतरराष्ट्रीय रन हैं और उन्होंने 7 अर्द्धशतक भी अपने नाम किए हैं। ऐसे में टीम संतुलित नजर आ रही है।इस सीरीज में रजा (1,947) 2,000 टी–20 अंतरराष्ट्रीय रन पूरे करने वाले जिम्बाब्वे के पहले बल्लेबाज बन सकते हैं।वह (4,967) 5,000 टी–20 रन भी पूरे कर सकते हैं। बिश्नोई इस प्रारूप में 150 विकेट पूरे करने से केवल 6 विकेट दूर हैं।खलील को समान उपलब्धि हासिल करने के लिए 9 विकेट की जरूरत है। जायसवाल टी–20 क्रिकेट में 100 मैच पूरे करने से केवल 2 मैच ही दूर हैं।

शेयर बाजार सपाट खुले, सेंसेक्स 79,000 के ऊपर

मुंबई ,02 जुलाई । भारतीय शेयर बाजारों की शुरुआत सपाट हुई। बाजार के सभी सूचकांकों में मिलाजुला कारोबार हो रहा है। सुबह 9.20 बजे सेंसेक्स 16 अंक की मामूली बढ़त के साथ 79,051 अंक और निफ्टी पांच अंक की बढ़त के साथ 24,015 अंक पर था।

बाजार का रुझान सकारात्मक बना हुआ है। खबर लिखे जाने तक एनएसई पर 1,519 शेयर तेजी के साथ और 571 शेयर लाल निशान में कारोबार कर रहे थे।

छोटी और मझौली कंपनियों के शेयरों में भी सीमित दायरे में कारोबार हो रहा है। निफ्टी मिडकैप 100 सूचकांक 94 अंक या 0.17 प्रतिशत की बढ़त के साथ 55,831 अंक पर और निफ्टी स्मॉलकैप 100 सूचकांक 112 अंक या 0.61 प्रतिशत की बढ़त के साथ 18,430 अंक पर था।ऑटो, आईटी, फार्मा और धातु सेक्टरों के सूचकांक मजबूत बने हुए हैं। वहीं, पीएसयू बैंक, रियल्टी और वित्तीय सेवाओं पर दबाव है।चॉइस ब्रोकिंग में रिसर्च एनालिस्ट देवेन मेहता का कहना है कि बाजार सोमवार को सपाट खुला है। निफ्टी के लिए 24,100 अंक एक रुकावट का स्तर है। वहीं, 23,900 अंक, 23,850 अंक और 23,800 अंक एक सपोर्ट है। अगर यह 24,100 अंक से ऊपर जाता है तो 24,250 अंक पर भी पहुंच सकता है।ज्यादातर एशियाई बाजारों में तेजी है। टोक्यो, शंघाई, हांगकांग, जकार्ता और सोल के बाजार हरे निशान में हैं। अमेरिकी बाजार शुक्रवार को लाल निशान में बंद हुए थे। कच्चे तेल का बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड 85 डॉलर प्रति बैरल और अमेरिकी डब्ल्यूटीआई क्रूड 82 डॉलर प्रति बैरल पर बना हुआ है।

पुर्तगाल ने पेनल्टी शूटआउट में स्लोवेनिया को हराकर यूरो कप के क्वार्टर फाइनल में मारी एंट्री

फ्रैंकफर्ट,02 जुलाई। क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने यूरो 2024 के राउंड ऑफ 16 में पेनल्टी शूटआउट में स्लोवेनिया को हराकर पुर्तगाल को यूरो 2024 के क्वार्टर फाइनल में पहुंचा दिया।

पुर्तगाल ने सोमवार को यूरो 2024 में पेनल्टी शूटआउट से स्लोवेनिया को 3–0 से हराया। यह एक रोमांचक मुकाबला रहा।इस मुकाबले में निर्धारित समय में दोनों टीम गोल नहीं कर पाई, इसके बाद एक्स्ट्रा टाइम में भी स्कोर 0–0 रहा। हालांकि, रोनाल्डो के पास एक बड़ा मौका था लेकिन वो पेनल्टी चूक गए। इसके बाद यह स्टार खिलाड़ी काफी निराश नजर आया। लेकिन शूटआउट में उन्होंने पहला पेनल्टी स्कोर कर टीम को मजबूत शुरुआत दी।वहीं, पुर्तगाल के गोलकीपर डिएगो कोस्टा ने लगातार तीन गोल बचाए, जिससे पुर्तगाल ने स्लोवेनिया पर 3–0 से जीत हासिल की और क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया।पुर्तगाल का सामना अगले दौर में टूर्नामेंट की पसंदीदा टीम फ्रांस से होगा, जिसने सोमवार को बेल्जियम को 1–0 से हराया था।

कोस्टा, इस रोमांचक मुकाबले में पुर्तगाल के लिए हीरो रहे। उन्होंने जोसिप इलिसिक, जुरे बाल्कोवेक और बेंजामिन वर्बिक की लगातार तीन पेनल्टी शॉट बचाई।

इस बीच, उनके साथी रोनाल्डो, ब्रूनो फर्नांडीस और बर्नार्डो सिल्वा ने पेनल्टी को गोल में बदला, जिससे पुर्तगाल की 3–0 से जीत सुनिश्चित हुई और क्वार्टर फाइनल में जगह बनी।

24 वर्षीय कोस्टा ने मैच के बाद कहा, यह मेरे करियर का अब तक का सबसे अच्छा मैच हो सकता है। मैंने मैदान पर अपना बेस्ट दिया है। मैंने पेनल्टी शूटआउट के दौरान खुद पर भरोसा रखा।रिपोर्ट के अनुसार, पेनल्टी शूटआउट में अपने शानदार प्रदर्शन के अलावा, कोस्टा ने एक्स्ट्रा टाइम के अंतिम चरण में एक महत्वपूर्ण बचाव किया था।

पुर्तगाल के कोच रॉबर्टो मार्टिनेज ने कोस्टा की प्रशंसा करते हुए कहा, कोस्टा हमारा सीक्रेट हथियार है। उसने इस रोमांचक मुकाबले में अपनी ताकत दिखाई।कोस्टा के शानदार प्रदर्शन से पहले, कप्तान रोनाल्डो के पास विजयी गोल करने का मौका था, लेकिन स्लोवेनियाई गोलकीपर ने उनके पेनल्टी को बचा लिया।पेनल्टी चूकने के बाद, भावुक रोनाल्डो को टीम के साथियों और कोचिंग स्टाफ ने सांत्वना दी। जबकि पुर्तगाली प्रशंसकों ने 39 वर्षीय अनुभवी खिलाड़ी का समर्थन करने के लिए विवा रोनाल्डो का नारा लगाया।रोनाल्डो ने मैच के बाद के कहा, इस मैच ने मुझे दुखी होने के साथ खुश होने का मौका भी दिया। यह फुटबॉल है। आप इसे समझ नहीं सकते, मेरे पास मैच को तय करने का मौका था, लेकिन मैं चूक गया इसलिए मैं काफी भावुक हो गया था।हालांकि, अपने आंसू पोंछते हुए रोनाल्डो ने खेलना जारी रखा और पेनल्टी शूटआउट में पहले स्थान पर आकर भरपूर आत्मविश्वास के साथ पेनल्टी को गोल में तब्दील किया।मार्टिनेज ने रोनाल्डो के बारे में कहा, रोनाल्डो एक्स्ट्रा टाइम में पेनल्टी चूक गए, लेकिन शूटआउट में वे सबसे पहले आए और हमें जीत की ओर ले गए। यह ड्रेसिंग रूम से लेकर मैदान तक पूरी टीम की जीत थी। रोनाल्डो हमारे लीडर हैं, और वे हमें मैदान के अंदर और बाहर दोनों जगह दिखाते हैं कि सबसे कठिन समय में भी हमें कभी हार नहीं माननी चाहिए।

पूर्व मध्य रेलवे ने रिकार्ड 51.61 मिलियन टन का किया लदान, पहले स्थान पर धनबाद मंडल

हाजीपुर ,02 जुलाई । पूर्व मध्य रेलवे ने वित्तीय वर्ष 2024–25 की प्रथम तिमाही (अप्रैल से जून तक) में रिकॉर्ड 51.61 मिलियन टन का माल लदान किया है, जो पिछले वित्तीय वर्ष की इसी अवधि में किए गए माल लदान 48.18 मिलियन टन की तुलना में 7.12 प्रतिशत अधिक है।

पूर्व मध्य रेलवे 51.61 मिलियन टन माल लदान (लोडिंग) के साथ भारतीय रेल के सभी क्षेत्रीय रेलों में प्रथम तिमाही में किए गए माल लदान के मामले में चौथे स्थान पर रहा।

पूर्व मध्य रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी सरस्वती चंद्र ने बताया कि प्रथम तिमाही में गेहूं एवं मक्के की लोडिंग के मामले में रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की गई है। अप्रैल से जून तक गेहूं की 37 रेक लोड की गई जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में लोड किए गए 15 रेक की तुलना में 146.67 प्रतिशत अधिक है। इसी तरह अप्रैल से जून 2024 तक मक्के की 317 रेक लोड की गई जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में लोड किए गए 152 रेक की तुलना में 109 प्रतिशत अधिक है।उन्होंने बताया कि पूर्व मध्य रेलवे को चालू वित्त वर्ष 2024–25 की प्रथम तिमाही में किए गए माल ढुलाई से कुल 6,789.98 करोड़ रुपये की प्रारंभिक आय प्राप्त हुई है। यह आय पिछले वित्तीय वर्ष 2023–24 की प्रथम तिमाही में माल ढुलाई से प्राप्त प्रारंभिक आय 6,353.05 करोड़ रुपये की तुलना में 6.88 प्रतिशत अधिक है। इस दौरान धनबाद मंडल का लदान क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा।धनबाद मंडल द्वारा वित्तीय वर्ष 2024–25 की प्रथम तिमाही में रिकॉर्ड 48.71 मिलियन टन का लदान किया गया, जो पिछले वित्तीय वर्ष 2023–24 की प्रथम तिमाही में किए गए लदान 46.03 मिलियन टन की तुलना में 5.82 प्रतिशत अधिक है।धनबाद मंडल को प्रथम तिमाही में किए गए माल ढुलाई से कुल 6,777.31 करोड़ रुपये की प्रारंभिक आय प्राप्त हुई है। यह आय पिछले वित्तीय वर्ष 2023–24 की प्रथम तिमाही में माल ढुलाई से प्राप्त प्रारंभिक आय 6,463.30 करोड़ रुपये की तुलना में 4.86 प्रतिशत अधिक है। माल लदान के साथ धनबाद मंडल भारतीय रेल के सभी मंडलों में प्रथम तिमाही में किए गए माल लदान के मामले में प्रथम स्थान पर रहा।

संन्यास के बाद जेम्स एंडरसन बनेंगे इंग्लिश टीम के गेंदबाजी मेंटर

नईदिल्ली, 02 जुलाई। इंग्लैंड क्रिकेट टीम के दिग्गज गेंदबाज जेम्स एंडरसन वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम के खिलाफ 10 जुलाई से शुरू होने वाले लॉर्ड्स टेस्ट के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह देंगे। वह पहले ही ये ऐलान कर चुके हैं।इस बीच खबर ये है कि एंडरसन संन्यास के बाद इंग्लिश टीम के साथ मेंटर के रूप में जुड़ेंगे। वह इंग्लैंड के तेज गेंदबाजों को गेंदबाजी के गुर सिखाएंगे।

इंग्लैंड के प्रबंध निदेशक रॉब की ने कहा, लॉर्ड्स टेस्ट के बाद जिमी हमारे साथ बने रहेंगे और एक मेंटर के रूप में हमारी मदद करेंगे। उनके पास इंग्लिश क्रिकेट को देने के लिए बहुत कुछ है। हम नहीं चाहते कि यह खत्म हो जाए। उनके पास बहुत सारे विकल्प होंगे। अगर वे खेल में बने रहना चुनते हैं तो इंग्लिश क्रिकेट बहुत भाग्यशाली होगा।एंडरसन इस समय काउंटी चैंपियनशिप में नॉटिंघमशायर के खिलाफ लंकाशायर के लिए खेल रहे हैं, लेकिन उनका प्रथम श्रेणी का भविष्य अनिश्चित है।रॉब की ने कहा, लंकाशायर के साथ उनका क्या भविष्य रहेगा, यह शायद लॉर्ड्स टेस्ट के बाद पता चलेगा।बता दें कि वह अपने प्रथम श्रेणी करियर में अब तक 1,100 से अधिक विकेट अपने नाम कर चुके हैं। इस दिग्गज गेंदबाज ने साल 2002 में अपने प्रथम श्रेणी क्रिकेट की शुरुआत की थी।

एंडरसन ने 2003 में जिम्बाब्वे क्रिकेट टीम के खिलाफ अपने टेस्ट करियर का आगाज किया था।वह अब तक 187 टेस्ट की 348 पारियों में 26.52 की औसत से 700 विकेट चटका चुके हैं। उन्होंने 32 बार 5 विकेट हॉल और 3 बार मैच में 10 विकेट हॉल लिए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 7/42 विकेट का रहा है।इसी तरह वह 263 पारियों में 112 बार नाबाद रहते हुए 1,353 रन भी बना चुके हैं। इसमें एकमात्र अर्धशतक शामिल है।

एंडरसन ने भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाफ अपने 700 टेस्ट विकेट पूरे किए थे।उनसे पहले मुथैया मुरलीधरन और शेन वॉर्न ने ही टेस्ट प्रारूप में 700 विकेट का आंकड़ा पार किया था। ये दोनों पूर्व खिलाड़ी स्पिनर रहे हैं, एंडरसन इस उपलब्धि को हासिल करने वाले विश्व के पहले तेज गेंदबाज बने थे।मुरलीधरन ने 22.72 की औसत से 800 विकेट चटकाए थे, जबकि वॉर्न ने 25.41 की औसत से 708 विकेट अपने नाम किए थे।

इस हफ्ते खुलेंगे 2,700 करोड़ रुपये के आईपीओ, दो कंपनियों की लिस्टिंग

मुंबई ,02 जुलाई । आईपीओ बाजार में तेजी बनी हुई है। एक के बाद एक कंपनियां अपना आईपीओ लेकर आ रही हैं। इस हफ्ते मेनबोर्ड कैटेगरी में एमक्योर फार्मास्युटिकल्स और बंसल वायर इंडस्ट्रीज का इनिशियल पब्लिक ऑफर (आईपीओ) आ रहा है।

एमक्योर फार्मास्युटिकल्स का आईपीओ 3 जुलाई को आम जनता के लिए खुलेगा। इस आईपीओ के जरिए कंपनी करीब 1,952 करोड़ रुपये जुटाएगी। यह आईपीओ फ्रेश इश्यू और ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) का मिश्रण होगा। इस आईपीओ में 800 करोड़ रुपये का फ्रेश इश्यू और 1,152 करोड़ रुपये ओएफएस होगा।

एमक्योर फार्मास्युटिकल्स का आईपीओ 3 से लेकर 5 जुलाई तक नाम निवेशकों के लिए खुलेगा। इसका प्राइस बैंड 960 रुपये से लेकर 1,008 रुपये प्रति शेयर रखा गया है। इसका लॉट साइज 14 शेयरों का तय किया गया है। शेयर की लिस्टिंग 10 जुलाई को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) पर हो सकती है।

एमक्योर फार्मास्युटिकल्स, शार्क टैंक में जज रह चुकीं नमिता थापर से जुड़ी कंपनी है। कंपनी को 1981 में स्थापित किया गया था। कंपनी फार्मा सेक्टर में कार्य करती है।

बंसल वायर इंडस्ट्रीज का भी आईपीओ 3 से लेकर 5 जुलाई के बीच खुलेगा। इस आईपीओ का इश्यू साइज 745 करोड़ रुपये का होगा। यह पूरा आईपीओ फ्रेश इश्यू होने वाला है। इसमें 2.91 करोड़ शेयरों की बिक्री की जाएगी। इसका लॉट साइज 58 शेयरों का रखा गया है। शेयर की लिस्टिंग 10 जुलाई को स्टॉक एक्सचेंज पर हो सकती है।

बंसल वायर इंडस्ट्रीज एक स्टेनलेस स्टील कंपनी है। इसकी स्थापना 1985 में हुई थी। कंपनी हाई कार्बन स्टील वायर, लो कार्बन स्टील वायर और स्टेनलेस स्टील वायर सेगमेंट में कार्य करती है। कंपनी करीब 3,000 अलग–अलग तरह के स्टील वायर बनाती है।

वित्त वर्ष 2023–24 में कंपनी की आय 2,470 करोड़ रुपये रही थी। इस दौरान कंपनी को 78.80 करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ था। मेनबोर्ड कैटेगरी में एलाइड ब्लेंडर्स एंड डिस्टिलर्स लिमिटेड और व्रज आयरन एंड स्टील लिमिटेड के आईपीओ की लिस्टिंग इस हफ्ते बीएसई और एनएसई पर होगी।

हिंडनबर्ग रिसर्च के खिलाफ सेबी का एक्शन, कारण बताओ नोटिस किया जारी

नई दिल्ली ,02 जुलाई । अमेरिकी फर्म हिंडनबर्ग रिसर्च ने वर्ष 2023 में एक रिपोर्ट जारी की थी। इस रिपोर्ट में उसने अदाणी ग्रुप पर स्टॉक मैनिपुलेशन से लेकर मनी लॉन्ड्रिंग जैसे कई आरोप लगाए थे। हालांकि, 2023 के अंत में अदाणी ग्रुप को इन आरोपों से छुटकारा मिल गया था। अब भारत के मार्केट रेगुलेटर सेबी ने अमेरिकी फर्म हिंडनबर्ग रिसर्च के खिलाफ एक्शन लिया है। सेबी ने अमेरिकी फर्म हिंडनबर्ग रिसर्च को कारण बताओ नोटिस भेजा है।सेबी द्वारा मिले नोटिस पर फर्म ने रिएक्ट किया और 1 जुलाई को पब्लिश अपने ब्लॉग पोस्ट में कहा कि सेबी ने नोटिस में कहा गया है कि हमने नियमों का उल्लंघन किया है। दरअसल, सेबी ने आरोप लगाया है कि हिंडनबर्ग की रिपोर्ट में कुछ गलत बयान शामिल थे जिससे पाठक गुमराह हुए। हिंडनबर्ग ने कारण बताओ नोटिस को बकवास और पूर्व निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति के लिए मनगढ़ंत करार दिया।हिंडनबर्ग ने अपने ब्लॉग पोस्ट में कहा कि हमारे विचार से सेबी की जिम्मेदारी निवेशकों की रक्षा करना है, जबकि सेबी धोखाधड़ी करने वालों की रक्षा कर रहा है।

भारतीय शेयर बाजार आल टाइम हाई पर खुला, आईटी शेयरों में खरीदारी

मुंबई ,02 जुलाई । भारतीय शेयर बाजार मंगलवार के कारोबारी सत्र में तेजी के साथ खुला है। शुरुआती कारोबार में ही सेंसेक्स और निफ्टी दोनों ने क्रमशरू 79,855 और 24,236 का नया ऑल टाइम हाई बनाया।

आईटी शेयरों में खरीदारी देखने को मिल रही है। सेंसेक्स पैक में विप्रो, एचसीएल टेक, टीसीएस, भारती एयरटेल और टेक महिंद्रा टॉप गेनर्स हैं।सुबह 9रू25 तक, सेंसेक्स 175 अंक या 0.22 प्रतिशत बढ़कर 79,651 और निफ्टी 45 अंक या 0.19 प्रतिशत बढ़कर 24,187 पर है।छोटे और मझोले स्टॉक्स में लार्जकैप की अपेक्षा सुस्ती नजर आ रही है। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 36 अंक या 0.06 प्रतिशत बढ़कर 56,329 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 60 अंक या 0.32 प्रतिशत बढ़कर 18,653 पर है। आईटी के अलावा रियल्टी और एनर्जी इंडेक्स में भी तेजी है। इसके अलावा ऑटो और हेल्थकेयर इंडेक्स पर दबाव बना हुआ है। एशियाई बाजारों में मिलाजुला कारोबार हो रहा है। टोक्यो, शंघाई, हांगकांग और जकार्ता के बाजारों में तेजी है। बैंकॉक और सोल के बाजार लाल निशान में हैं। कच्चे तेल का बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड 86.81 डॉलर प्रति बैरल और डब्ल्यूटीआई क्रूड 83.52 डॉलर प्रति बैरल पर खुला। चॉइस ब्रोकिंग में रिसर्च एनालिस्ट देवेन मेहता का कहना है कि निफ्टी में 24,100 एक सपोर्ट लेवल के रूप में काम करेगा। वहीं, 24,200 एक रुकावट का स्तर होगा। अगर निफ्टी 24,100 को तोड़ता है तो यह 24,000 और 23,950 को छू सकता है। वहीं, निफ्टी अगर 24,200 को तोड़ता है ।

आज शाम तक टीम इंडिया बारबाडोस से भारत के लिए हो सकती है रवाना

नई दिल्ली,02 जुलाई। टी20 विश्व कप जीतने वाली भारतीय क्रिकेट टीम मंगलवार शाम (स्थानीय समय) को बारबाडोस से भारत के लिए उड़ान भरेगी और बुधवार शाम आईएसटी) को दिल्ली पहुंचेगी।विश्व कप जीतने वाली टीम को पहले सोमवार को स्थानीय समयानुसार सुबह 11 बजे (आईएसटी के अनुसार रात 8रू30 बजे) बारबाडोस से रवाना होना था। लेकिन वहां पिछले दो दिनों से बेरिल तूफान के कारण टीम इंडिया बारबाडोस में फंसी हुई है।पिछले कुछ घंटों में बेहद खतरनाक श्रेणी 4 में तब्दील हो चुके इस तूफान के कारण वहां तेज हवा और भारी बारिश के साथ तूफान की चेतावनी दी गई है।अमेरिका के राष्ट्रीय मौसम केंद्र की नई रिपोर्ट के अनुसार, बेरिल तूफान, जिसे सोमवार को श्रेणी चार में अपग्रेड किया गया था,

एथनिक लुक में गजब की बला लगीं साक्षी मलिक, कातिलाना अदाएं देख फैंस हुए मंत्रमुग्ध

बॉलीवुड की बोल्ड और खूबसूरत एक्ट्रेस साक्षी मलिक हमेशा अपनी हॉटनेस के कारण इंटरनेट पर छाई हुई रहती हैं। उनका स्टाइलिश अंदाज इंस्टाग्राम पर पोस्ट होते ही फैंस के बीच तेजी से वायरल होने लगता है। अब हाल ही में एक्ट्रेस साक्षी मलिक ने अपने लेटेस्ट ट्रेडिशनल लुक में फोटोज शेयर की हैं। उनके इस लुक ने एक बार फिर से इटरनेट पर तहलका मचा दिया है।

एक्ट्रेस साक्षी मलिक हमेशा अपने बोल्ड और स्टनिंग अंदाज से फैंस का सारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं। उनका हर लुक इंटरनेट पर आते ही वायरल होने लगता है।

हाल ही में एक्ट्रेस ने अपने लेटेस्ट एथनिक लुक से एक बार फिर से फैंस के बीच कहर बरपा दिया है।

उनका ये हॉट अंदाज देखकर फैंस एक बार फिर से उनके हुस्न के कायल हो गए हैं। साथ ही उनका कातिलाना अंदाज लोगों के बीच थमने का नाम नहीं ले रहा है।

इन तस्वीरों में आप देख सकते हैं अभिनेत्री साक्षी मलिक ने फोटोशूट के दौरान व्हाइट कलर की फ्लोरल लुक में साड़ी पहनी हुई थी, जिसमें वो काफी गॉर्जियस लग रही हैं।खुले बाल,कानों में इयररिंग्स और साथ ही लाइट मेकअप कर के एक्ट्रेस साक्षी मलिक ने अपने आउटलुक को कंप्लीट किया है।एक्ट्रेस साक्षी मलिक अपनी फिटनेस के लिए फैंस के बीच सुर्खियां बटौरती रहती हैं। उनकी फिटनेस बेहद कमाल की है। ये ही नहीं एक्ट्रेस का हर एक स्टाइल फैंस के बीच ट्रेंड भी करता है।साक्षी मलिक सोशल मीडिया लवर हैं और इंस्टाग्राम पर काफी एक्टिव भी रहती हैं। साथ ही इंस्टा पर उनकी फैन फॉलोइंग लिस्ट भी काफी जबरदस्त है।

बालीवुड में कदम रखने को तैयार श्रीलीला

पिछले दिनों अभिनेता वरुण धवन पिता बने हैं। उनकी पत्नी नताशा दलाल ने 3 जून को हिंदुजा अस्पताल में एक प्यारी बेटी को जन्म दिया था।निजी जिंदगी के अलावा वरुण अपनी फिल्मों को लेकर भी चर्चा में हैं।फिलहाल वरुण के हाथ में कई फिल्में हैं, जिनमें एक नाम उनके पिता डेविड धवन के निर्देशन में बन रही फिल्म भी शामिल है।खबर है कि वरुण की इस फिल्म के जरिए श्रीलीला बॉलीवुड में कदम रखने जा रही हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, डेविड की अगली निर्देशित फिल्म से वरुण के साथ साउथ की अभिनेत्री श्रीलीला बॉलीवुड में कदम रखने के लिए तैयार हैं।बताया जा रहा है कि श्रीलीला फिल्म में वरुण की गर्लफ्रेंड की भूमिका निभाएंगी।इस फिल्म में मृणाल ठाकुर भी अहम भूमिका में नजर आएंगी। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि वरुण, मृणाल और श्रीलीला की यह फिल्म लव ट्रायंगल पर आधारित होगी।यह फिल्म 2 अक्टूबर, 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

वरुण ने एक बार फिर अपने पिता डेविड के साथ हाथ मिला लिया है और अब दोनों मिलकर फिर अपनी फिल्म से दर्शकों को लोट–पोट करने की पूरी तैयारी में हैं।डेविड और वरुण ने टिप्स फिल्मस से हाथ मिलाया है। रमेश तौरानी फिल्म के निर्माता हैं।डेविड–वरुण पहली बार फिल्म मैं तेरा हीरो के लिए साथ आए थे। इसके बाद दोनों ने जुड़वा 2 में साथ काम किया और फिर वे फिल्म कुली नंबर 1 के लिए साथ आए।

ऋचा चड्ढा की फिल्म को ग्रैंडजूरी पुरस्कार

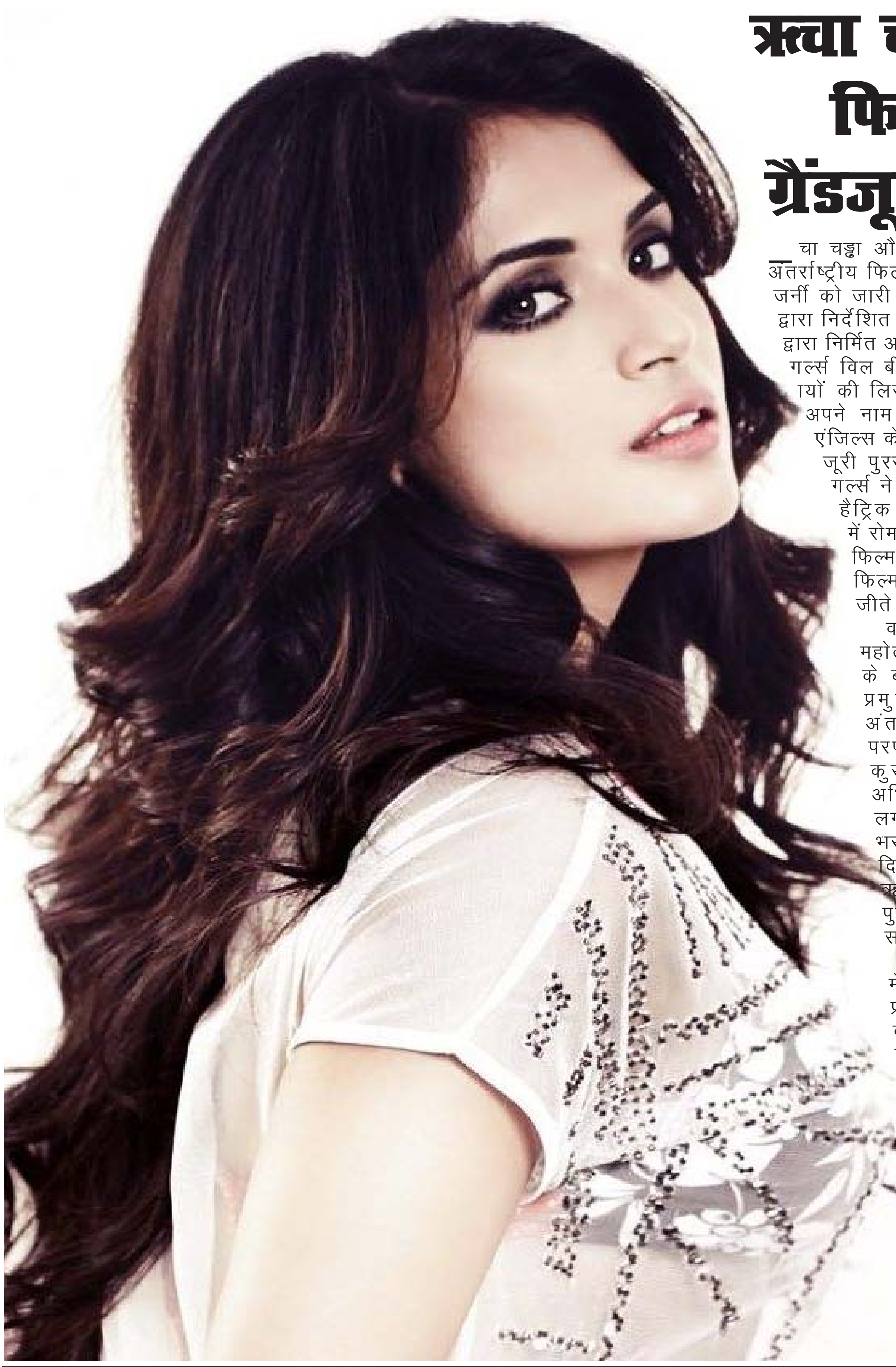

ऋचा चड्ढा और अली फजल के प्रोडक्शन ने अंतर्राष्ट्रीय फिल्म सर्किट में अपनी अनस्टॉपेबल जर्नी को जारी रखा है। दरअसल, शुचि तलाटी द्वारा निर्देशित और ऋचा चड्ढा और अली फजल द्वारा निर्मित और समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्म गर्ल्स विल बी गर्ल्स ने अपनी बढ़ती उपलब्धियों की लिस्ट में एक और प्रतिष्ठित अवॉर्ड अपने नाम कर लिया है। दरअसल, लॉस एंजिल्स के भारतीय फिल्म महोत्सव में ग्रैंड जूरी पुरस्कार का खिताब गर्ल्स विल बी गर्ल्स ने को मिला है। यह फिल्म के लिए हैट्रिक से कम नहीं है क्योंकि हाल ही में रोमानिया में ट्रांसिल्वेनिया अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव और फ्रांस में बियारिट्ज फिल्म महोत्सव में ग्रैंड जूरी पुरस्कार जीते थे।

वर्ष की शुरुआत में सनडांस फिल्म महोत्सव में अपनी जबरदस्त सफलता के बाद गर्ल्स विल बी गर्ल्स ने दो प्रमुख पुरस्कार जीते, तब से अंतर्राष्ट्रीय लेवल पर शानदार परफॉमेंस जारी रखा है। कनी कुसरुति और प्रीति पाणिग्रही अभिनीत, गर्ल्स विल बी गर्ल्स लगातार आगे बढ़ रही है दुनिया भर के दर्शकों और आलोचकों के दिलों और दिमाग पर छाई हुई है। ऋचा चड्ढा ने कहा, ग्रैंड जूरी पुरस्कार जीतना एक अविश्वसनीय सम्मान है।

हमारी पूरी टीम की कड़ी मेहनत और समर्पण को ऐसे प्रतिष्ठित मंच पर पहचाने जाते देखना संतुष्टिदायक है। गर्ल्स विल बी गर्ल्स हमारे दिल के करीब की कहानी है और हम रोमांचित हैं कि यह ग्लोबल लेवल पर दर्शकों के साथ गूंजती दिख रही है। इस महीने फिल्म की यह तीसरी जीत है जो बहुत बड़ी बात है। रिएक्शन जबरदस्त रहा और फिल्म को जो प्यार मिल रहा है वह वाकई असाधारण है। हम निर्माता के रूप में इससे बेहतर शुरुआत पाकर बहुत खुश हैं। इसे लेकर अली फजल ने कहा, ष्यह यात्रा किसी जादुई अनुभव से कम नहीं रही। ¼fgQ½

करीना व एकता कपूर ने फिर मिलाया हाथ

Oारे दी वेडिंग और क्रू जैसी सफल फिल्मों के बाद करीना कपूर खान और एकता कपूर फिर साथ काम कर रहे हैं। फिल्म मेकर हंसल मेहता की अगली फिल्म द बकिंघम मर्डर्स के लिए इस जोड़ी ने हाथ मिलाया है। जोड़ी जो पहले कॉमेडी ड्रामा के जरिए दिल जीत चुकी है, वह अब एक मर्डर मिस्ट्री के साथ आ रही है और यह सच में दिलचस्प लग रहा है। इस फिल्म के जरिए करीना कपूर खान को बतौर को–प्रोड्यूसर भी इंट्रोड्यूस किया जाएगा। बता दें कि यह फिल्म सिनेमाघरों में 13 सितंबर 2024 को रिलीज की जाने वाली है। फिल्म ने अपने दिलचस्प पोस्टर के साथ एक्साइटमेंट का माहौल बना दिया है, जो इसकी गहरी और थ्रिल से भरी दुनिया की झलक देता है। ऐसे में दर्शक इस मर्डर मिस्ट्री से पर्दा उठाने के लिए बेसब्री से फिल्म की रिलीज का इंतजार कर रहे हैं। फिल्म ने लंदन फिल्म फेस्टिवल 2023 में अपनी स्क्रीनिंग और जियो फिल्म फेस्टिवल 2023 में प्रदर्शित होने वाली पहली फिल्म बनकर अपनी रिलीज से पहले ही सभी का ध्यान अपनी तरफ खींचा है। यह फिल्म एक जबरदस्त थ्रिलर होगी, जिसमें छुपे हुए राज और रिश्तों पर रोशनी डाली जाएगी, साथ ही कहानी में एक छुपी हुई हत्या की मिस्ट्री के रहस्य को सुलझाते हुए देखा जाएगा। शोभा कपूर, एकता आर कपूर और करीना कपूर खान संग इस फिल्म को बालाजी टेलीफिल्म्स और टीबीएम फिल्म्स द्वारा प्रोड्यूस किया गया है। द बकिंघम मर्डर्स 13 सितंबर 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। ¼fgQ½

कल्कि के आगे चंदू चौंपियन की कमाई में तीसरे सडे फिर आई तेजी, करोड़ों में किया कलेक्शन

कार्तिक आर्यन स्टारर श्चंदू चौंपियनन्य ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा परफॉर्म किया है. इस फिल्म को दर्शकों ने भरपूर प्यार दिया है और इसी के साथ इस फिल्म ने अच्छा कलेक्शन किया है. हालांकि प्रभास स्टारर फिल्म श्कल्कि 2898 एडीय की रिलीज के बाद से श्चंदू चौंपियनन्य की कमाई की रफ्तार में काफी गिरावट आई है. हालांकि वीकेंड पर कार्तिक आर्यन की फिल्म ने एक बार फिर रफ्तार पकड़ी है. चलिए यहां जानते हैं श्चंदू चौंपियनन्य ने रिलीज के 17वें दिन कितना कलेक्शन किया है श्चंदू चौंपियनन्य मेंकार्तिक आर्यन नेअपनी दमदार परफॉर्मेंस से दर्शकों के दिल जीत लिए हैं भारत के पहले पैरालंपिक स्वर्ण पदक विजेता मुरलीकांत पेटकर की लाइफ पर बेस्ड इस फिल्म के लिए कार्तिक ने खूब मेहनत की थी और अपने ट्रांसफॉर्मेशन से हर किसी को हैरान कर दिया था. इसी के साथ फिल्म को दर्शकों ने जमकर प्यार दिया है।ऐसे मेंश्चंदू चौंपियनन्य नेअच्छी–खासी कमाई कर ली है. फिल्म के कलेक्शन कि बात करें तो श्चंदू चौंपियनन्य ने 4.75 करोड़ से खाता खोला था. वहीं फिल्म ने पहले हफ्ते में 35.25 करोड़ की कमाई की थी. दूसरे हफ्ते में श्चंदू चौंपियनन्य ने 20.25 करोड़ का कलेक्शन किया है. वहीं अब ये फिल्म रिलीज के तीसरे हफ्ते में है. जहां श्चंदू चौंपियनन्य ने 15वें दिन यानी तीसरे शुक्रवार 75 लाख का कलेक्शन किया है. जबकि 16वें दिन फिल्म ने 26.67 फीसदी की तेजी के साथ 95 लाख की कमाई की है. वहीं अब इस फिल्म की रिलीज के 17वें दिन यानी तीसरे संडे की कमाई के शुरुआती आंकड़े आ गए हैं. सैकनिल्क की अर्ली ट्रेंड रिपोर्ट के मुताबिक श्चंदू चौंपियनन्य ने रिलीज के 17वें दिन यानी तीसरे संडे 1.65 करोड़ का कलेक्शन किया है. इसी के साथ श्चंदू चौंपियनन्य ने 17 दिनों में 58.85 करोड़ की कमाई कर ली है.100 से 120 करोड़ के बजट में बनी श्चंदू चौंपियनन्य ने बॉक्स ऑफिस पर उतार–चढ़ाव के साथ अपनी आधी लागत से ज्यादा कमाई कर ली है

रिया चक्रवर्ती का नया पॉडकास्ट

, क्ट्रेस रिया चक्रवर्ती ने अपने नए पॉडकास्ट, जिसका नाम चैप्टर 2 है, उसका अनाउंसमेंट कर दिया है, जिसमें बतौर पहली गेस्ट एक्ट्रेस सुष्मिता सेन हैं। शो में दोनों अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ के बारे में बाते करती हुई नजर आ रही हैं। इसका एक प्रोमो भी सामने आया है, जो काफी वायरल हो रहा है क्योंकि वह इसमें दिवंगत एक्टर और उनके एक्स बॉयफ्रेंड सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद उनके द्वारा कहे जा रहे नामों का जिक्र करती हुई नजर आ रही हैं। इतना ही नहीं वह खुद को गोल्ड डिगर भी कहते हुए दिख रही हैं। जो लोग नहीं जानते उन्हें बता दें कि गोल्ड डिगर का मतलब होता है जब कोई पैसे के लिए किसी रिश्ते में होता है या फायदा उठाता है। प्रोमो की शुरूआत रिया चक्रवती के सुष्मिता सेन के सामने अनाउंस करने से होती है कि इस कमरे में आपसे भी बड़ा गोल्ड डिगर है। इस पर आर्या एक्ट्रेस पूछती हैं, सच में तो रिया कहती हैं, हां जी मैं। आगे प्रोमो में उन्हें यह भी कहते हुए सुना जा सकता है कि नफरत चिल्लाकर कही जाती है, लेकिन प्यार महसूस किया जाता है। इसके अलावा रिया ने सुष्मिता सेन की बेटियों अलीसा और रेनी की अच्छी परवरिश के लिए भी उनकी तारीफ की और कहा, आपको परवरिश के लिए पाठ्यक्रम बनाना चाहिए। जिस पर सुष्मिता कहती हैं मैंने एक इंटरव्यू दिया और जानबूझकर सेक्स शब्द का इस्तेमाल किया। आपकी जिंदगी में एक ऐसा समय आता है जब आप बैकग्राउंड में पेड़ बनकर रह जाते हैं। इस प्रोमो को इंस्टाग्राम पर शेयर करते हुए रिया चक्रवर्ती ने कैप्शन में लिखा, मैं कल ही 32 साल की हुई हूँ, और यह कितना शानदार सफर रहा है! ये पिछले 4 साल बदलाव, विकास और खुद का एक ऐसा वर्जन बनने के बारे में रहे हैं जिसके बारे में मैं आखिरकार अच्छा महसूस कर रही हूं। सुष्मिता सेन से बेहतर कौन हो सकता है!

सिन्धु टाइम्स (हिन्दी दैनिक), स्वामी,प्रकाशक / मुद्रक–इमरान हसन सिद्दीकी द्वारा सीता ऑफसेट, 75 पुराना किला, कैण्ट रोड, लखनऊ। से मुद्रित कराकर 126 / 21 / 1, बी0एन0रोड, निकट इस्लामिया कालेज, लालबाग लखनऊ (उ0प्र0)–226021 से प्रकाशित। सम्पादक इमरान हसन सिद्दीकी R.N.I.NO.UPHIN/2010/39063,MOB.-9935403111, E-Mail:sindhutimes99@gmail.com फोन– 0522–4029211 (नोट–किसी भी वाद के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।)